અનુક્રમ

1.	पंचामृत	प्रिय स्वजन	.....	०२
2.	अवसर आंगणिये	महावीर की अंतिम वाणी Non-Stop 48 hours देशना (राता महावीर – राजस्थान)	.....	०३–०९
		जिनमार्ग Trekking	.....	०९–११
3.	अहेवाल	(1) गुरुपूर्णिमा	.....	१२
		(2) प्रजापिता ईश्वरीय विश्व विद्यालय ब्रह्माकुमारी'स Mount Abu द्वारा आयोजित Conference में पूज्य गुरुदेव को संत स्वरुप सादर आमंत्रण	.....	१३–१७
		(3) SPARC Wing Conference – पूज्य गुरुदेव पंकजभाई को ब्रह्माकुमारी'स से Conference मे as a Spiritual Scientist निमंत्रण	.....	१७–१९
		(4) 'परम सुख जीवन विकास केन्द्र'की एक नयी सिध्धी – नया अभियान स्कूल/कॉलेज के विद्यार्थीओंकी Special शिबीर, रानी गाँव – वरकाणा (राजस्थान)	.....	२०–२३
		(5) श्री चैत्री नवरात्रि आराधना श्री नवपद साधना with श्री सिध्धचक्र महायंत्र पूजन	.....	२४–२७
		(6) नमस्कार महामंत्र योग The Science of Divine Living (मीरा रोड, मलाड, डोंबिवली)	.....	२८
4.	अनुभव का अत्तर	(1) महावीर की अंतिम वाणी Non-Stop 48 hours देशना (राता महावीर – राजस्थान)	.....	२९
		(2) जिनमार्ग Trekking	.....	२९–३०
		(3) श्री चैत्री नवरात्रि आराधना श्री नवपद साधना with श्री सिध्धचक्र महायंत्र पूजन	.....	३०–३१
		(4) 'परम सुख जीवन विकास केन्द्र'की एक नयी सिध्धी – नया अभियान स्कूल/कॉलेज के विद्यार्थीओंकी Special शिबीर, रानी गाँव – वरकाणा (राजस्थान)	.....	३१
10.	आगामी कार्यक्रमो की रुपरेखा		.....	३२–३३
11.	प्रभुवाणी (English)	Scientific Practical Divine Lifestyle Educational Training	.....	३४
11.	प्रभुवाणी (हिन्दी)	Scientific Practical Divine Lifestyle Educational Training	.....	३५
12.	जिज्ञासा आपकी – जवाब प्रभुके	सत्संगीओ के प्रश्नो के जवाब	.....	३६
	જિજ્ઞાસા તમારી – જવાબ પ્રભુના	**સત્સંગીઓના પ્રશ્નોના જવાબ**	.....	૩૭
13.	सत्तसंग - परम आनंद परिवार	भगवद् गीता और मेरा जीवन	.....	३८
	સત્સંગ – પરમ આનંદ પરિવાર	**ભગવદ્ ગીતા અને મારું જીવન**	.....	૩૯
14.	ANNUAL ACTIVITIES		.....	४०–४३
15.	VISION 2025		.....	४३–४४

આગામી કાર્યક્રમની રૂપરેખા

આગામી કાર્યક્રમની વિસ્તૃત રૂપરેખા માટે જુઓ Page No. 32 to 33

શુભેચ્છક : जिंदगी उन लोगो के लिए आसान नही पर दिलचस्प है, जो परिवर्तन का सपना देखता है ।

प्रिय स्वजन,

''मधुबन खुशबु देता है, सागर सावन देता है,
जीना उसका जीना है, जो औरो को जीवन देता है.....।''
''प्यार बाँटते चलो.... हाँ प्यार बाँटत चलो,
हर वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिती, जीव, परमाणु को
प्यार बाँटते चलो....।''

भगवान महावीरने भी यही किया । जीव मात्र को प्यार (प्रेम) बाँटते गए और मुक्त होते गए । हमे भी यही काम करना है । जीव मात्र के साथ प्रेम संबंध बाँधना है । हर क्षण Smile में रहना है । Smile में रहने के लिए भगवान के साथ Connect होना है । इसलिए हमें हररोज सुबह उठकर प्रभुकृपा करनी है और फिर तीन निर्णय लेने है ।

(1) It is a wonderful Day... आज का दिन अद्भूत है ।

(2) Come what may I will Enjoy... कुछ भी हो जाए मैं आनंद में रहुँगा ।

(3) Come what may I will Smile... कुछ भी हो जाए मैं हंमेशा हसता रहुँगा ।

Thank you, God Bless You – तीन महान हस्ति परम गुरु, माता–पिता और सद्गुरु को कहेना है । सारे जगत को महावीरने बिना कारण का प्रेम करना बताया है । और हमें भी बिना कारण प्रेम करना है । दिल का उपयोग करके जीवन को आनंदमय बनाना है ।

आनंदमय जीवन बनाने के लिए प.पू. गुरुदेवने नया अभियान छेडा है... **''जीवे जीवे अरिहंत नाद..... हर जीव के साथ मैत्री''** इसलिए **'परम सुख जीवन विकास केन्द्र'** द्वारा **प.पू. पंकजभाई** के सानिध्य में अलग अलग शहर और नगर में आनंदमय जीवन के विकास की अद्भूत शिबीर और घर–घर में Celebration सत्संग का आयोजन किया जाता है । आप सभी अपने शहर और घर पर ऐसा आयोजन करवाके जीवन में हंमेशा आनंद मे रह सकते है और प्रभु की असीम असीम कृपा पाकर प्रभु के साथ जुड़ सकते है । आनंद में रहने का नया अवसर.... **महाशिवरात्री – ''जीव से शीव (सिद्ध पद) की यात्रा''** का अवसर आ रहा है... । अवश्य जुड़ना ।

Date : 13, 14, 15 February, 2018

आपका प्रिय मित्र
नमो जिणाणं ।

નમ્ર નિવેદન

'નમો જિણાણં' મેગેઝીનના આ અંકથી લવાજમ લેવામાં આવશે. જે શિબિરાર્થી / સત્સંગી ભાઈ–બહેનોને આ મેગેઝીન રેગ્યુલર મળે એવી ઇચ્છા હોય તો **આજીવન સદસ્યના રૂ. ૧૫૦૦/–** સાથે આપના સેન્ટર સંચાલકને તમારું નામ, સરનામું તથા ફોન નંબર લખી આપવા વિનંતી. (Subscription Form to be filled & send with Amount).

98698 62373, 98690 52507, 98331 33266, 98202 12816

परम सुख HELPLINE 24 x 7

MISSED CALL NO. → **09920202756** **9920203965** ← WHATS APP NO.

जीवन की किसी भी समस्या के उपाय और AUDIO CD/VIDEO CD या MAGAZINE, POSTER के लिए उपर बताए हुए नंबर पर संपर्क करें । यह सेवा २४ घंटे और सातो दिन उपलब्ध है ।

નમો જિણાણં
The Science of Divine Living
(ત્રિમાસિક પત્રિકા)
અંક : ૩૮, વર્ષ : ૨૦૧૮
તા. : ૧૦, જાન્યુઆરી – ૨૦૧૮
મુલ્ય: ૩૦.૦૦ રૂપિયા

મુદ્રક :
ગોગરી ઓફસેટ પ્રિંટર્સ

માલિક અને પ્રકાશક :
પરમ સુખ જીવન વિકાસ કેન્દ્ર (મુંબઈ)

E-mail : enquiry.namojinanam@gmail.com
Website : www.namojinanam.org

શુભેચ્છક :

Life मे जो तुम दूसरों को देते हो वही तुम्हे लौटकर मिलता है ।

महावीर की अंतिम वाणी Non-Stop 48 hours देशना (राता महावीर – राजस्थान)

आज से 2600 वर्ष पूर्व, **प्रभु महावीर** ने अपने निर्वाण का समय नजदिक आ गया है यह जानकर सहज करुणा और सर्व जीव के साथ मैत्री के भाव तरंग की बर्षा कर 16 प्रहर (48 घंटे) सतत् देशना दी..... महावीर की अंतिम वाणी – जैन साहित्य में उत्तराध्ययन सूत्र में गठीत की गई है । प्रभु का यह कैसा मैत्री भाव सभी जीवो के लिए..... ? कि मैं तो मुक्त हो रहा हूँ.... किन्तु दुसरे सर्व जीवों को मुक्ति के राह पर छोड़ता जाऊँ.... कितनी उत्कृष्ट भावना, हित कल्याण की भावना....!

''सवीजीव नी हित भावना तुज हृदयमां जे पांगरी,
तेना प्रभावे समवसरणमां चमत्कृति जे पांखरी....''

'सवी जीव करुं प्रेमरसी' मात्र यह एक भावना का रटन और दोहन एक साधारण जीव को तीर्थंकर पद तक ले जाता है....।

हर जीव के लिए प्रभु ने करुणा की है । साक्षात् महावीर की अंतिम वाणी को सुनकर, उन्होंने जो मार्ग – रास्ता बतलाया है... उस पर यथार्थ रुप से चलेंगे तो ही हम महावीर के संतान कहलायेंगे....।

यही लक्ष्य को ध्यान में रखकर, **'परम सुख जीवन विकास केन्द्र'**ने आज से पाँच वर्ष पूर्व एक ऐतिहासिक अदभूत् परम्परा का अविष्कार किया । वर्ष 2012 में **प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई** के प्रत्यक्ष सानिध्य मे, पावापुरी तीर्थ निर्वाण भूमि – जहाँ भगवान महावीरने अंतिम देशना दी थी.... उस पावन भूमि पर 16 प्रहर देशना, प.पू. गुरुदेवने अपने श्री मुख से प्रकाशी थी । यह यात्रा प्रवास न होकर बल्कि अद्भूत आत्मविकास की यात्रा बन गई । पाँच वर्ष से इस तरह दिवाली पर्व दरम्यान अलग अलग तीर्थ भूमि पर Non-Stop 48 घंटे की देशना – महावीर की अंतिम वाणी का आयोजन प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई के सानिध्य में सफलतापूर्वक हो रहा है। इस वर्ष यह आयोजन **राजस्थान, हथूंडी – राता महावीर तीर्थ** में किया गया था । ता. 16-10-2017 से ता. 26-10-2017 – 10 दिवस के इस यात्रा प्रवास में जुड़ने के लिए सभी को प्रेरणा की गई थी ।

ता. 16-10-2017 को दोपहर एक बजे मुलुण्ड से और सायन से स्लीपर बस द्वारा 65 लोगो ने इस यात्रा प्रवास के लिए राजस्थान की ओर प्रयाण किया । बस में गीत–संगीत–स्तवन गाते हुए रास्ता काट रहे थे । दुसरे दिन दोपहर को 3.00 बजे राता महावीर तीर्थ पहुँचे । प्रवास की थकान थी, किन्तु मंजिल पर पहुँचने का आनंद भी था । Fresh हो कर, भोजन आदि कर के सभी 'हॉल' की ओर पहुँच रहे थे । इस तीर्थ का प्रांगण बहोत ही सुंदर था । नयनरम्य सुंदर देहरासर, समवसरण मंदिर, विशाल प्रांगण, शांति और दिव्य वातावरण का अनुभव करते हुए उत्साहपूर्वक 'हॉल' को सजाने के लिए देव–देवियाँ (सेवक) पहुँच चुके थे । भावविभोर हो कर प्रभु की स्थापना कर, सभी 'हॉल' को सजाने में मशगुल हो गए थे । कोई प.पू. गुरुदेवजी के बैठने की पाट को सजाने में, कोई दरवाजे पर तोरण बांधने में, कोई रंगोली बनाने में, कोई पताका लगाने में, तो कोई दिपक प्रकटाने में मशगुल थे । लगभग 3 से 3.30 घंटे के पश्चात् हॉल, हॉल न रहकर समोवसरण बन चुका था और गुरुदेव ने भक्ति रस से उस में जान ड़ाल दी थी। एक जीवंत तीर्थ बन गया था... सुबह ब्रम्ह मुहूर्त में प्रभु वाणी सुनने की उत्कंठा के साथ सभी अपने अपने आवास में निंद्राधीन हुए ।

1st Session – सुबह 4.00 बजे (ता. 18-10-2017 आसो वद 14)

ब्रम्ह मुहूर्त – सुबह 4.00 बजे.... कुदरत की अद्भूतता का आनंद लेते हुए सभी श्वेत वस्त्र धारण कर, भगवान की वाणी को सुनने के लिए राता महावीर के समवसरण में पधार रहे थे । प्रभु के दर्शन करके, प.पू. गुरुदेव के चरण स्पर्श करके सभी आसनस्थ हुए । प.पू. गुरुदेवने वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी की कृपा लेकर, वीर प्रभु के अंतिम समवसरण के वातावरण का वर्णन करते हुए कहा कि पावापुरी नगरी में, प्रभु की वाणी सुनने के लिए सभी नर और नारियाँ आ रही थी । हजारो की संख्या में मनुष्य, तिर्यंच, देव–देवियाँ सभी प्रभु की परावाणी को प्राप्त करने के लिए आ रहे थे । 2600 वर्ष पूर्व के उस दिव्य समय मे सभी की भावधारा पहुँच रही थी । प्रभु को संबोधित करते हुए प.पू. गुरुदेव ने गीत छेडा.....

''हे वीर मारा नयनमा, प्रभु जोगी थईने आवजो
हे वीर मारा जीवनमा, प्रभु रसधार थईने आवजो
हे वीर मारा, करुणानीर, अनराधार थईने वरसावजो ।''

संगीत का सत्र, पू. गुरुदेव का कण्ठ, सीमंधर स्वामी का आश्रय का सभी भावविभोर हो कर आनंद उठा रहे थे, डोल रहे थे । इस स्तवन के साथ मे, पू. गुरुदेवने महावीर के जीवनकाल की जन्म से लेकर निर्वाण तक की अवस्थाओं का परिचय देते गए । प्रभु ने माता के गर्भ में रहकर तय किया था कि माता के जीवनकाल दरम्यान प्रवज्या नहीं लेंगे.... जगत को संदेश दिया कि माता का प्रेम कितना ऊँचा और निःस्वार्थ होता है । जन्म के पश्चात, इन्द्र महाराज बाल महावीर को स्नान महोत्सव के लिए मेरु पर्वत पर ले जाते है, तब बाल महावीर की क्षमता पर शंका की.... भगवान महावीर ने पैर के अंगुठे के स्पर्श मात्र से मेरु पर्वत कंपित किया और जगत को संदेश दिया समर्थता में नम्रता होनी चाहिए । यहाँ पू. गुरुदेवने टकोर की कि हमे थोड़ा

कुछ आ जाता है तो पुरे जगत में अपनी बढ़ाई का डंका बजाते है । प.पू. गुरुदेव बहुत ही सरलता से गीत गाते गाते जीवन जीने का ज्ञान दे रहे थे । भगवानने संसार जीवन मे जो करना होता है वह सब कुछ किया था । अपनी गृहस्थीभी बसाई । व्यवहार धारा के साथ साथ आत्मधारा सतत् चालु थी । यहाँ प.पू. गुरुदेवने प्रभुसे प्रार्थना करते हुए कहा कि ''हे प्रभु हृदय मे वीर वीर की ध्वनी रहे ताकि हमारे अंदर वीरत्व प्रकटे, ऐसा पुरुषार्थबल प्राप्त हो, आज हमे ऐसा कुछ प्राप्त हो जिससे हमारा बाह्य एवं आंतरिक जीवन शुद्ध बने !'' इसके पश्चात् पू. गुरुदेवने पाँच धुन करवाई और व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिति को भाव SMS (I Love You) भेजा । पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और आकाश के सभी जीवों के साथ प्रेम भाव प्रसारित किया । तत्पश्चात गुरुदेवने स्वर और व्यंजन का विज्ञान समझाया । एक स्वर में दुसरे स्वर को मिलाना है । इस तरह संगीत के माध्यम से जीवन जीने का विज्ञान समझा दिया । वहाँ उपस्थित सभी की अद्भूत धारा बह रही थी । सभी को अपने अपने जीवन के तानेबाने समझ में आ रहे थे । प्रभु की वाणी को कान के माध्यमसे सुनकर हृदय मे उतारना है, उपर के दिमाग मे नही ले जाना है.... यदि हमारा स्वर, सूर, ताल, लय, सृष्टी के स्वर और ताल के साथ मिलेंगे तो ही परिणाम प्रकट होगा । पूज्य गुरुदेवने यहाँ ज्ञानात्मक समझ देते हुए कहा कि पहले स्वयं के साथ जुड़ो, बाद में दुसरे जीव परमाणु के साथ जुड़ो... हृदय से जुड़ो ।

दुसरा Session - 9.00 a.m.

''हे वीर.... करुणानीर अनराधार थई वरसावजो.....''

भाववाही स्तवन से शुरुवात करते हुए प्रभु से विनंती करते हुए कहा कि.... हम अबुध, अज्ञानी है.... हम सब पर ज्ञान प्रकाश की कृपा करो।

राता महावीर तीर्थ के संचालक श्री बाबुलालभाई के शुभ करकमल द्वारा दिप प्रज्वलन किया गया । प.पू. गुरुदेवने उत्तराध्ययन सूत्र का प्रथम अध्ययन शुरु करते हुए कहा कि जीवन में Success होने के लिए विनय का जीवन में स्थान होना बहुत ही जरुरी है । भगवानने प्रथम अध्ययन 'विनय श्रुत' में यह बात Clearcut कह दी है कि धर्म मार्ग की शुरुवात विनय से होती है । नमस्कार महामंत्र में पहला शब्द 'नमो' है । विनय से ही मुक्ति का मार्ग शुरु होता है । भगवानने श्रमण और गृहस्थ के लिए बहुत ही सुक्ष्मता से विनय की परिभाषा दी है । गुरु आज्ञा और विनय आधारित जीवन जीता है । अणगार – यांने जिन्होंने घरबार छोड़ दिया है, जो ज्ञान उपार्जन किया है उसकी वास्तव में Test करने के लिए बहार निकलते है । विनय का पाठ पढ़ लिया, समझ लिया किन्तु जब भिक्षु बनकर भिक्षा मांगने का अवसर आता है तब विनय की कसोटी होती है । राजा महाराजा दिक्षा लेकर भिक्षा के लिए निकलते है तब 'विनय' गुण प्रदिप्त होता है ।

यहाँ, पू. गुरुदेवने **''जोगी थई ने जाय महावीर, जोगी थईने जाय..... जगनी माया छोड़ी... वैभवने तरछोड़ी..... जोगी थईने जाय महावीर, जोगी थईने जाय.....''** यह स्तवन ललकारा । सभी यह भाव और संगीत में एकलीन हो गए । पू. गुरुदेवने इस स्तवन को नया सर्जनात्मक स्वरुप देकर गीत गुँजाया....

''तनड़ा ना सगपण छोड़ी, सौथी मैत्री जोड़ी...
तनड़ा ना सगपण छोड़ी, प्राणथी मैत्री जोड़ी.....''

यहाँ गुरुदेवने बहुत ही सुंदर बात कही कि महावीरने किसी को छोड़ा नही था, सर्व जीव और परमाणु के साथ मैत्री जोड़कर मुक्त हुए है । उनके अंग अंग में इस दुनिया के मंगल की भावना उछल रही थी । महावीरने अपने हृदय को इतना विशाल बनाया कि पुरी सृष्टि को अपने में समा लिया । 'आप कैसे भी हो, I Love You' की निरंतर धून उनके हृदय में बह रही थी । ऐसा 'जोगी' जो दुनिया को मात्र ज्ञान और प्रेम से देखता है ।

''वनवगड़ा ना घोर भयंकर ऐणे मार्ग विंध्या,
हसते मुखड़े कष्ट सही ने ऐणे विषड़ा पिधा ।''

यहाँ पू. गुरुदेवने हमारे जीवन को Connect करते हुए कहा कि घर में बैठकर हमने अज्ञान में जंगली प्राणी जैसे वनवगड़े खड़े कर दिए है । इस घर में जंगल खड़ा किया है । इसमे माया को Replace करके मैत्री की स्थापना करेंगे तो घर में जोगी बन सकते है । बहुत ही गंभीर और बड़ी बात यहाँ गुरुदेव ने कही ।

''माया से मैत्री
वैभव से विनय''

स्व की इमानदारी से यह Replacement करते आ गया तो तु घर मे ही रहकर जोगी बन सकता है.... मैत्री का विकास और विनय का विकास.... पू. गुरुदेव की स्व की स्फुरणा.....

धून लगावी.... प्रभु धून लगावी...
मैत्रीना मार्गनी, विनयतणा मार्गनी...
धून लगावी, प्रभु अमे धून लगावी...
भेदभाव मिटाव्या, स्त्रीने स्थान आप्यु...
वर्णवाद मिटाव्यो, मैत्रीने आधार आप्यो...
सत् नुं संगीत गायु, प्रेम नुं अमृत पायु...
धून लगावी.... प्रभु धून लगावी....।

बहुत ही चिंतनात्मक और Day-to-day जीवन से Connected बात पू. गुरुदेवने सरलता से गीत गाकर समझा दी । अहो ! अहो ! आगे बढ़ते हुए पू. गुरुदेवने विनय का स्वरुप क्या है उसकी खूब ही सुंदर समझ दी । विनय का प्रथम सोपान है – अहोभाव – नमन.... हर व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिति को 'नमो' भाव से स्वीकार करो । घाती कर्म को दुर करने का

पहला क्रम है विनय का विकास । यहाँ गुरुदेवने विनीत शिष्य और अविनीत शिष्य के लक्षण समझाए । विनीत शिष्य गुरु की आज्ञा अनुसार जीवन बिताते है । विनय और नमो भाव का विकास होता है । सभी का प्रिय बनता है ।

अविनीत शिष्य – गुरु की आज्ञा अनुसार जीवन नही जीता है । नमो भाव नहीं है । दुनिया से तिरस्कृत होता है । उसकी हालत सड़े हुए कान वाली कुत्ती के जैसा तिरस्कृत जीवन जीता है ।

विनीत शिष्य को चेतावनी देते हुए प्रभु कहते है कि गुरु के सामने हंमेशा प्रशांत भाव में रहे । आज्ञा लेकर विनयपूर्वक बात करे, वाणी नम्र हो । निरर्थक बाते न करे । गुरु की Value कभी भी Down न करे । भगवान कहते है कि सद्गुरु का तिरस्कार, अवर्णवाद कभी नही करना चाहिए नही तो अनंतकाल तक सद्गुरु का मिलाप नही होगा । विनीत शिष्य जोर से या ऊँचे आवाज में नही बोले, असत्य ना बोले, लक्ष्यपूर्वक का व्यवहार करे । यहाँ पू. गुरुदेवने प्रभु की वाणी प्रकाशते हुए कहा कि भगवानने कितनी सुक्ष्मता से गुरु–शिष्य की बात कही है । यह वाणी सुनते सुनते हमें अपने आपको Check करना है ।

3 रा Session - 2.00 p.m.

''संसारनी निःसारता, जिन मार्ग की रंगीनता....
सम्यक्त्वनी ज्योती हृदयमां झळहळे....''

विनीत शिष्य के अध्याय को आगे बढ़ात हुए पू. गुरुदेवश्रीने कहा कि प्रभुने जो वचनों का गुलदस्ता दिया है, उसे अपनी जीवन की अवस्था में गुंथकर जड़ मान्यताओं की पकड़ से मुक्त होना है ।

व्यक्ति–व्यक्ति के बीच, व्यक्ति–वस्तु, व्यक्ति–परिस्थिति, व्यक्ति–जीव के बीच में विनय को स्थापित करना है । जिस तरह विनीत शिष्य के लक्षण कहे है उसी तरह गुरु के कर्तव्य का भी सुक्ष्मता से प्रभुने वर्णन किया है । पू. गुरुदेवने कहा कि गुरु एक तत्व है व्यक्ति नहीं । शिष्य का व्यक्तिगत निर्णय होता है गुरु की स्थापना का । गुरु का कर्तव्य है – शिष्य के प्रति सद्भाव हो, प्रेमपूर्वक शिष्य की बात सुने, मैत्रीपूर्वक वात्सल्यता से व्यवहार करे । प्रभुने सुक्ष्मता से गुरु के व्यवहार के विषय पर प्रकाश ड़ालते हुए कहा कि भाषा का दोष नहीं होना चाहिए, निश्चयात्मक भाषा, असत्य भाषा का उपयोग नही करे, एक दुसरे की गहन गंभीर बातें, मर्म बातें खुली न करे ।

गुरु के कठोर वचन हितकारी समझ कर स्वीकार करता है, 'विनयश्रुत' को समझकर श्रेष्ठ शिष्य आचरण करता है उसे श्रेष्ठ ज्ञान मिलता है, लौकिक और अलौकिक लाभ मिलता है और निश्चीत मोक्ष का अधिकारी बनता है । इस प्रकार भगवान महावीरने इस दुनिया को छोड़ने से पहेले, लोगो के हित के लिए देशना प्रकाशी उसमें 'विनय' को प्रथम स्थान दिया ।

।। प्रथम अध्याय समाप्त ।।

4th Session - 7.00 p.m.

भाववाही स्तवन के साथ इस सत्र की शुरुवात हुई ।

2 रा अध्ययन 'परिषह विजय'

प.पू. गुरुदेवने दुसरे अध्ययन की पूर्वभूमिका समझाते हुए कहा कि साधना मार्ग मे चलते चलते भिन्न भिन्न प्रकार की तकलीफें आने की संभावना है । इसके लिए be prepared भगवानने चेतावनी दी है । नजर के समक्ष '**मुझे नहीं होना परेशान**' यह रखना है । भगवानने 22 प्रकार की तकलीफें बताई है । यह तकलीफें मानव सर्जित या कुदरती हो सकती है । इन सभी तकलीफों का ज्ञानात्मक solution निकाल कर आगे बढ़ना है ।

1) **क्षुधा –** भूख लगना, समय पर भोजन न मिलना । आंतरिक तैयारी करनी पड़ेगी । जागृतिपूर्वक ''मुझे नहीं होना परेशान'' का ध्यान करना ।
2) **पिपासा –** प्यास लगे किन्तु पानी का जोग न हो ।
3) **उष्णता –** अत्याधिक ताप, गरमी ।
4) **ठंडी –** अतिशय ठंडी – '**नमो जिणाणं, जिअ भयाणं**' तथा **शरीरमैत्री – प्राणमैत्री** करना ।
5) **मच्छर जीव जंतु का उपद्रव –** इन दोनो तकलीफों में '**नमो जिणाणं, जिअ भयाणं**' के जाप करना ।
6) **अचेल परिषह –** शरीर पर वस्त्र न रहे, यह कुदरती परिषह है ।
7) **संयम में अरुची पैदा होना –** साधु जीवन में क्रियाए कर के थक जाते है, Mechanical हो जाती है तब संयम पद के लिए कंटाला आता है । सभी क्रियाएँ ज्ञानपूर्वक करना ।
8) **विजातिय आकर्षण –** स्त्री और पुरुष दोनों को आकर्षण होता है । प्राणीक क्रियाएँ है हठयोग में । भगवानने यहाँ विवेक की जागृति रखने को कहा है ।
9) **पादचारी परिषह –** खुल्ले पैर चलने का परिषह ।
10) **एकान्त, निर्जन स्थान पर बैठने का भय –** ''नमो जिणाणं'' की रटण धून, परमात्मा के वचन पर अप्रतिम श्रद्धा ।
11) **मकान का परिषह –** भूमि हमें Accept न करे । मंत्र योग का उपयोग करना ।
12) **कठोर वचन का परिषह –** ''आप कैसे भी हो, I Love You'' प्रेम से अपनाना ।
13) **मारपीट झगड़ा –** 'नमो जिणाणं, जिअ भयाणं' की धून करना ।
14) **भिक्षा परिषह –** मोह को तोड़ने के लिए भिक्षा माँगने जाना । इसलिए साधु को भिक्षा–गौचरी माँगने को कहा है ।
15) **रोग परिषह –** वेदना–पीड़ा शरीर में होना ।
16) **कांटे कंकड़ लगना ।**

शुभेच्छक : **ये मत सोचो की एक महीने में या एक साल में क्या हो सकता है, ये सोचो 24 घंटे में क्या क्या हो सकता है ।**

17) **पसीना बहुत आना –** दुर्गंध आना ।

18) **मान–अपमान परिषह ।**

19) **अल्प बुद्धि परिषह ।**

20) **मेहनत करने के बावजुद परिणाम न मिले –** यहाँ सद्गुरु का शरण लेना ।

21) **दंसण परिषह –** साधना करते करते श्रद्धा तुटे..... यह सब व्यर्थ लगता है ।

22) **आत्मज्ञान परिषह –** वर्षो तक साधना करने के पश्चात् भी आत्मा का वेदन नही होता है ।

प.पू. गुरुदेवने कहा कि भगवान चेतावनी देते हुए कहते है कि ऐसे ओर दुसरे अनेक परिषह, तकलीफें आएगी । **''नमो जिणाणं, जिअ भयाणं''** के रुप में भगवान का शरण, **''मुझे नहीं होना परेशान''** की सतत् जागृति इस परिषह के सामने लड़ने की ताकत और बल देगी ।

यहाँ दुसरा अध्याय पूर्ण ।

3 रा अध्ययन 'चतुरंगी'

3 रा अध्याय की शुरुवात करते हुए पू. गुरुदेवने कहा कि प्रभु महावीरने चार वस्तु को अति दुर्लभ बताया है ।

1) मनुष्य भव मिलना ।
2) प्रभु के वचन सुनने का अवसर ।
3) इन वचनो पर श्रद्धा होना ।
4) भगवानने बताए हुए मार्ग पर चलने का निर्णय ।

प.पू. गुरुदेवने कहा कि प्रभु ने यह चार चीज़ों अतिदुर्लभ बताया है। आप अपने को Check करो कि कितने भाग्यशाली हो ? मनुष्य हो, इन्द्रियाँ सही सलामत है, यह मार्ग मिला है, चत्तारी मंगलम् और उसका शरण मिला है । उदासीनता हटाकर You feel blessed & lucky. भगवान के वचनों में श्रद्धा रखकर धारणा **'मुझे नहीं होना परेशान'** में आगे बढ़ो । एक गति से दुसरी गति में अपना प्रवास सतत चालु है । नरक और देव गति में भगवान नहीं मिलते है । बहुत ही Self-assessment करने का Chapter है और विकास यात्रा को आगे बढ़ाने की बात है ।

4 था अध्ययन 'असंस्कृत'

इस अध्याय में प.पू. गुरुदेवने कहा कि हम कुछ अर्थहीन, मिथ्या मान्यताओं को बाँध लेते है । जैसे – (1) देवी–देवता, मंत्र–तंत्र, ज्योतिष.... आदि पर श्रद्धा करने से सुख शांति मिलती है । (2) धर्म वृद्धावस्था मे ही करना चाहिए । (3) धन–दौलत से सब कुछ कर सकते है । (4) गुरु की निश्रा के बिना स्वच्छंद रुप से साधना कर सकते है । (5) परभव जैसा कुछ नहीं है । (6) यह धर्म करने से मेरा खराब हुआ.... इस तरह की विवेकहीन भावनाओं में जकड़ जाते है । भगवानने यह सभी भावनाओं से मुक्त होने को कहा है । भारंड पक्षी के जैसे सतत जागृत और लक्ष्यसहीत साधना करने के लिए कहा है ।

5 वा अध्ययन 'अकाममरणीय'

जीवन है तो मरण निश्चीत है । प्रभु मरण पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहते है कि मरण दो प्रकार से होता है । (1) सकाम मरण और (2) अकाम मरण ।

यदि जागृतिपूर्वक जीवन जीया हो, सम्यक् पुरुषार्थ किया हो 'मुझे नही होना परेशान' को लक्ष्य में रखकर, 'आप कैसे भी हो, I Love You' का व्यवहार सबके साथ किया हो और सतत, प्रभु का शरण लिया हो तो उस व्यक्ति को सकाम मरण प्राप्त होता है किन्तु जो व्यक्ति सतत भोग विलास में जीया हो, विषयों और वस्तु पर मोह रखा हो तो वह व्यक्ति अकाम मरण को पाता है । जो जीव, गृहस्थ सामायिक, प्रतिक्रमण और व्रतपूर्वक जीवन जीता है और आंतरसाधना में Deeply आगे बढ़ता है वह मुक्ति को पाता है ।

दीपावली पर्व (ता. 19-10-2017)
1st Session - प्रभात 4.30 बजे

अद्भूत दिन, दिव्य मंगल प्रभात मे सभी का मन महावीर के समवसरण मे पहुँच गया ।

'हे नाथ तारा चरणनुं बहु भावथी शरण ग्रह्युं,
तुज मार्गने आराधता मुनिवर तारा शरण ग्रह्युं,
वणी तुज प्ररुपीत धर्म जे ते धर्मनुं शरण मळ्युं'

भाववाही सुर मे, दिव्यता का अनुभव सभी करते हुए इस गीत का गुंजन कर रहे थे ।

वीर–महावीर को पुकारते हुए प.पू. गुरुदेव भाव के बहाव में ले गए जहाँ मात्र मैं और वीर है । और ऐसी शक्ति, कृपा माँगते हुए.... अभिप्रायों को तोड़ता रहूँ, अच्छे–बुरे की भावनाएँ तोड़ता रहूँ, निर्ग्रंथ दशा को मैं प्राप्त करुं, न रोग न शोक, न ताप न संताप, मात्र आनंद ही आनंद ।

जबरदस्त भाववाही के दिव्य बहाव में डुबकी लगाकर प.पू. गुरुदेवने 6 वा अध्ययन शुरु किया ।

6 वा अध्ययन 'क्षुल्लक निर्ग्रंथीय'

प.पू. गुरुदेवने Short मे समझाते हुए कहा कि ग्रंथी यांने बंधन ! गाँठ बाँधना यांने अभिप्राय एकत्रित करना । प्रभु महावीरने उसमे से मुक्त होने के लिए कहा कि मैत्री जैसा कोई दुसरा उपाय नहीं है । यह पुरी सृष्टि Divine है । जो उपसर्ग, तकलीफें आती है उसे तक में Convert करो, Alertness से । अभिप्राय में जकड़ाओ नहीं, जो ऐसी अभिप्राय की गाँठे

छोड़ता है वह साधु है । सामायिक, प्रतिक्रमण, व्रत, जप आंतरिक विकास के लिए है ।

2nd Session - 9.30 बजे

तीर्थंकर परमात्मा सीमंधर स्वामी को वंदन और उनकी स्तुति करते हुए प.पू. गुरुदेवने Session की शुरुवात की । श्री विमलभाई राजावत परिवार के शुभ हस्तों द्वारा दीप प्रकटीकरण किया गया । पू. गुरुदेवने कहा कि प्रभु का मार्ग निर्ग्रंथ बनने का मार्ग है । हरेक तीर्थंकर अपनी परम्परा – तीर्थ की स्थापना करते है । वर्तमान में मनुष्य की दशा का वर्णन करते हुए प.पू. गुरुदेवने कहा कि मनुष्य के दुःख का कारण वह स्वयं है । उसकी मानी हुई मान्यता ही उसे दुःखी करती है । अपने कर्म हमे ही भोगना है । माता–पिता, बहन–भाई, संबंधी आदि सहायक बन सकते है, किन्तु रक्षा नहीं कर सकते । पंचपरमेष्टी रक्षा कर सकते है । शरण पंचपरमेष्टी का लेना बाकि का अशरण लेना । दुःखी मनुष्य दुसरो पर आरोप लगाकर आर्तध्यान, रौद्रध्यान धरता है और तिर्यंच में जाता है । भगवानने कृपा करके वाणी बरसाई है, इन वचनों को अमल में लाना जरुरी है । भगवानने 'सेवा' करके परिणाम प्रकट करने के लिए कहा है। चलते–फिरते, बोलते, खाते–पीते, Care-Love का Attitude developed करना है । लोगो को उपयोगी बनना शुरु कर दो । तेरा रास्ता तुझे ही चलना है ।

3rd Session - 3.00 बजे

''ॐ अर्हम् ॐ अर्हम् महावीर....''

अब थोड़ा ही समय बाकि था महावीर के निर्वाण का । भगवान की वाणी दो प्रकार की थी परा वाणी और वैखरी वाणी । 48 घंटे की वाणी में ज्यादा परावाणी थी । प्रभु स्वयं मौन रहते किन्तु उनके अस्तित्व मे से भाव तरंग निकलते रहते थे जिसे गणधर भगवंत समझ सकते थे और शब्दो द्वारा उसे गुँथते थे ।

प.पू. गुरुदेवने प्रभु से विनंती करते हुए कहा कि प्रभु मुझे साधक बन कर हर क्षण मुक्त होते जाना है, आपके बताए हुए मार्ग मे रहूँ और मेरी मंजिल प्राप्त करुँ ।

7 वा अध्ययन

भगवानने तीन उदाहरण देकर बोध दिया है । प्रथम बोकडे का यांने के बकरा । बकरे को खरीदने वाला उसे खूब हृष्टपृष्ट बनाता है । ताजा माजा तगड़ा बनाता है । बकरे की सब खातीरदारी करता है । बकरा अपने आप को नसीबवाला मानता है । यह बकरा अपने मालिक द्वारा दी गई सुखसुविधा, अनुकुलता में खो जाता है किन्तु इस बकरे को मालुम नही कि उसका मालिक उसे हलाल करने के लिए पोष रहा है । भगवान यहाँ Message देते है कि तु भी तुझे मीली हुई सुखसुविधा, अनुकुलता जो पुण्यबल से मिली है उसमे खो मत जाना । प.पू. गुरुदेव यहाँ टकोर करते है कि हम सुखसुविधा प्राप्त करने के लिए कितने गोटाले करते है । मौज शौक में डूब जाते है, प्रमादी बन जाते है । यहाँ भगवान हमे सावधान करते है और कहते है तुझे जो अनुकुलता मिली है उसे सेवा में Convert कर मुक्त होते जा.... ।

दुसरा उदाहरण आम और राजा का देते हुए प.पू. गुरुदेवने बताया कि लालसा के पिछे जीवन खत्म हो जाता है । लोभवृत्ति को समझ कर उसे दुर कर और संयम से रह ।

तीसरा उदाहरण वाणिक पुत्र और सुवर्णमुद्रा का दिया है । मनुष्य बनकर सेवा कर और मुक्त हो । Invest your time in Seva.

4th Session - 7.30 p.m.

वीर प्रभु के अंतिम समवसरण के अंतिम चरण में कुछ प्रकृष्ट झंखना लेकर सभी बैठे थे कि प्रभु की इस दिव्य धारा में मेरे अस्तित्व में कुछ ऐसा रसायण मिल जाय, जो मेरा मनुष्यभव सार्थक कर दे । प.पू. गुरुदेवने यहाँ ज्ञानात्मक रुप से समझाते हुए कहा कि तेरी करनी तेरा भविष्य तय करेगी । तु तेरा ही भविष्य विधाता है । मनुष्य बना है तो नित्य मेरी वाणी का श्रवण कर, लक्ष्य के साथ कर । भगवान का शरण लेकर अपने आप पर विश्वास कर और हमेशा सत्संग में रहना । मनुष्य का जीवन पुनः चाहता है तो सेवामय जीवन जीना ।

8 वा अध्ययन 'कापिल्य'

प.पू. गुरुदेवने कपिल मुनी की कथा का सार समझाते हुए कहा कि आसक्ति, आकर्षण व्यक्ति के प्रति, वस्तु के प्रति हो तो वह तुम्हे अंध बना देता है । इच्छाओं का कोई अंत नहीं है । इच्छा करना बुरा नहीं है किन्तु उसके लिए Craving खतरनाक है । प.पू. गुरुदेवने आहार औचित्य पर वजन रखते हुए कहा कि दुर्गति से बचने के लिए पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पती को Thank you, God bless you के भाव SMS भेजो ।

इस तरफ पावापुरी नगरी में प्रभु महावीर की अंतिम घड़ी नजदीक आ चुकी थी । महावीरने अपने प्रिय शिष्य गौतम को अपने से दुर करने के लिए देवशर्मा को प्रतिबोध देने के लिए भिजवाते है । प्रभु जानते थे कि मेरे पर अतिराग होने के कारण गौतम का कैवल्य ज्ञान नहीं हुआ है । गौतम हंमेशा प्रभु को पुछते थे कि भंते मुझे कैवल्य ज्ञान कब होगा ? प्रभु हँसते, आज वह घड़ी पास आ रही थी । सभी लोग इस महान ज्योति के अंतिम दर्शन करने के लिए इकठ्ठे हुए थे । प्रभु शुक्लध्यान में लीन है । शैलेषीकरण की क्रिया करके सम्पूर्ण शरीर को 1/3 जितना संकुचित करके सर्व परमाणु का समुत्घात कर चौदह राजलोक में परमाणु फैलाते है और चैतन्य, शरीर मे से निकल कर सीधा रॉकेट के जैसे सिद्धशिला पर पहुँच जाता है । यह थी प्रभु के निवार्ण की घड़ी.....

''ॐ अर्हम महावीर पारंगताय नमः''

शुभेच्छक : तुम अपनी जिंदगी का अगला पाठ नहीं पढ़ सकते जब तक पिछले पाठ को याद कर रहे हो ।

प.पू. गुरुदेवने बहुत ही Energetic जाप करवाए और महावीर से प्रार्थना की कि आपने निर्वाण प्राप्त किया, मेरा भी इस तरह निर्वाण हो ऐसी भावना भाता हूँ।

''एक महान ज्योत बुझाई, त्यांज देव दुंदुभि वाग्या....
देवोए पोकार्यु वीरे मुक्ति प्राप्त करी.....
दिवाओ प्रगटावो, प्रकाश फैलावो, आनंदोत्सव मनाओ...''

तभी तालियों के नाद में और संगीत के साथ में हर कोई झुम उठा। दिपक प्रकटाए.... गरबा नृत्य किया.... लोगोने अपनी अपनी कला एवं Talent प्रस्तुत किए । Group Dance, Education Skit, मारवाडी नृत्य, स्तवन, वर्तमान समस्या शादी एवं तलाक से Related Skit, शांताबाई कामवाली..... इत्यादि हँसते हँसते आनंद उल्लास के साथ यह Session पुरा हुआ।

गौतम विलाप – कैवल्य ज्ञान Session (रात – 3.30 बजे)

प्रभु.... वीर.... निर्वाण को प्राप्त हुए.... गौतम स्वामी देवशर्मा को प्रतिबोध करके लौटे तो उन्होंने यह समाचार सुने । प.पू. गुरुदेवने कहा कि वीर प्रभु और गौतम स्वामी का संबंध अद्‌भूत था । गौतमने अपने भाई के साथ भगवान महावीर के पास दिक्षा ली, उस घड़ी से उन्होंने मात्र भंते – भंते – भंते..... ही किया । चार ज्ञान के मालिक थे । 50000 शिष्य थे । भगवान के प्रति इतनी असीम भक्ति थी कि वीर प्रभु के बिना कुछ नही है । इतना अहोभाव, प्रेम और समर्पण था । इतनी अगाढ़भक्ति प्रभु के प्रति होने से उन्हे बहुत सी लब्धियाँ प्राप्त हुई थी । इसका श्रवण करते हुए सबके हृदय में गौतम स्वामी के लिए अहोभाव प्रकटे.... आँखो मे भक्ति के आँसु आ गए । गौतम स्वामी वीर प्रभु को प्रश्न करते कि हे भंते, मुझे कब कैवल्य ज्ञान प्राप्त होगा? तब प्रभु कहते है, 'जे दिने मुझ निर्वाण थशे, ए दिन मलशे केवलज्ञान....।'

प्यारे वीर को निर्वाण प्राप्त हो गया... अंतिम घड़ी मे मुझे दूर कर दिया... विलाप करने लगे... चौधार आँसुओं से रोने लगे.... गौतम संताप करते है मुझे अकेला छोड़कर क्यों चले गए । फुट फुटकर रोते है... ऐसा लग रहा था कि समग्र सृष्टि रो रही है । रोते रोते शांत हुए और गौतम विचार श्रेणी में चढ़ गए । वीर प्रभुने मुझे दूर किया कारण मेरा मोह, मेरा प्रभु के प्रति राग, प्रभु जानते थे.... मेरे मोह पर हथौड़ा मारे बिना मेरा कैवल्य ज्ञान नहीं होगा.... अहो ! प्रभु आप जाते जाते यह अंतराय दूर करते गए.... सदा सबका हित और मंगल करनेवाले..... पश्चाताप के आँसु के साथ क्षपक श्रेणी भावधारा में ऊँचे ऊँचे जाने लगे.... तभी प्रकाश पूंज झलक उठा । गौतम को कैवल्य प्राप्त हुआ । गौतमने मल्यु केवलज्ञान केवलज्ञान..... सभी देव–देवियाँ वंदन करने आ पहुँचे... हर्ष... उल्लास... ज्ञान का प्रकाश... नूतन वर्ष की मंगल प्रभात केवलज्ञान के प्रकाश के साथ जगमगाने लगी... सभी ने **'ॐ गौतम केवलज्ञानाय नमः'** के जोरदार जाप किए ।

जैन इतिहास की यह दो विरल घटना गुरु शिष्य के अनुराग को दर्शाती है । रात 12.00 बजे (अश्विनी) आसो वद अमावस्य को प्रभु महावीर का निर्वाण..... और ब्रम्ह मुर्हूत में 4.00 बजे गुरु गौतम को कैवल्य ज्ञान... बहुत ही तादृश्य घटना.... और परम पूज्य गुरुदेव की अद्‌भूत दिव्य सीमंधरी वाणी..... के साथ लगभग 5.30 बजे... इस अंतिम वाणी का अंतिम Session पूर्ण हुआ ।

किसी के मुख पर न थकान, न नींद, न कंटाला..... यही तो है सीमंधर की हाजरी का कमाल.... वहाँ से सभी देहरासर के द्वार उद्‌घाटन के लिए जमा हो कर **विमलभाई राजावत परिवार** के साथ द्वार उद्‌घाटन का लाभ लिया और राता महावीर के दर्शन किये ।

सुबह 6.15 बजे नूतनवर्ष महामांगलिक प.पू. गुरुदेव के श्री मुख से सुनकर गुरु गौतम की कृपा लेकर निर्णय लिया 'मारे नथी थवुं हेरान'.... मैं सहज बनुँ, सरल बनुँ, नम्र बनुँ । विवेक और मैत्री को जीवन में स्थान देकर.... मेरी आंतरिक विकास यात्रा में.... गुरु–आश्रय के साथ आगे आगे बढ़ता रहुँ.... मेरा मंगल, तेरा मंगल, सबका मंगल हो ।

इस तरह 16 प्रहर की महावीर की अंतिम वाणी प.पू. गुरुदेव के श्री मुख से सुनी जो यहाँ पूर्ण हुई ।

यह दिन अवकाश और विराम का था । सुबह थोड़ा आराम कर नहा धोकर राता महावीर तीर्थ के देहरासर में पूजा, चैत्यवंदन किया । वहाँ समवसरण मंदिर में प.पू. गुरुदेव के साथ ज्ञान सत्संग का लाभ लिया ।

पंच तीर्थ यात्रा

ता. 21-10-2017 को सुबह 5.00 बजे सभी ने राता महावीर की पावनभूमि को, वापस आने की भावना करते हुए नमन किया और वहाँ से प्रयाण किया बस द्वारा पाँच तीर्थो के दर्शन हेतु..... बस मे राता महावीर की स्मृतियों के साथ.... **नागेश्वर जैन तीर्थ**, भद्रंकर नगर पहूँचे..... पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन–वंदन किए ।

बस में बैठकर **राणकपूर जैन तीर्थ** पहूँचे । नवकारसी की, देवदर्शन किए । वहाँ के पुजारीजी से इस अद्‌भूत और शिल्पकला से भरपुर तीर्थ के विषय में जानकारी प्राप्त की । भव्य स्थापत्य और संगमरमर का चौमुखी मंदीर केवल जैनों में ही नही किन्तु पूरे विश्व में अपनी शिल्पकला के लिए प्रसिद्‌ध है । भगवान आदीनाथ की सुंदर मनमोहनीय प्रतिमा है । इस परिसर के अंदर चारो ओर छोटी छोटी देरियाँ, 1444 खँभे, हर खँभे के पास खड़े होकर आप को प्रभु के दर्शन होगे । वहाँ के शेठ धन्नाशाह ने यह मंदीर, 15 वी सदी में बँधवाया था । मंदीर का नाम वहाँ के राजा राणा कुंभा के नाम

पर रखा गया । इस मंदीर का इतिहास ताम्रपत्र पर अंकित किया गया है । इस मंदीर के Architecture दीपचंदभाई सोमपुरा थे । भव्य कलाकारी, Great नक्काशी, छत पर कल्पवृक्ष, पाँच मूलभूत तत्वों का सुंदर समायोजन.... अफलातून भव्य मंदीर का यह इतिहास सुनकर अहो अहो हो गए ।

ऐसे सुंदर भव्य तीर्थ के दर्शन कर आगे के तीर्थ के लिए प्रयाण किया । **मुँछाला महावीर तीर्थ** में पहुँचे, वहाँ दर्शन किए । वहाँ से **नारलाई शत्रुंजय तीर्थ एवं गीरनार तीर्थ** की ओर रवाना हुए । जहाँ दो छोटे छोटे आमने सामने पहाड़ है । जहाँ एक ओर गीरनार और दुसरी ओर शत्रुंजय तीर्थ बनाया गया है । हमने वहाँ 450 सीढ़ियाँ चढ़कर शत्रुंजय तीर्थ में आदीनाथ दादा के दर्शन किए । वहाँ आदीनाथ भगवान की पूजा एवं जबरदस्त जाप एवं भाव धून की । नीचे धर्मशाला में चौविहार कर आगे **नाड़ोल** की ओर प्रस्थान किया जहाँ **मानदेवसूरीजी का समाधी स्थल** है । शांति स्त्रोत के रचयिता श्री मानवदेवसूरी ने किस तरह इस स्त्रोत की रचना की, किस लिए की उसका समग्र इतिहास चित्रों के साथ Exhibit किया है । वहाँ बैठकर मंत्र जाप किए । वहाँ आजुबाजु प्राचीन मंदीर थे वहाँ दर्शन किए । वहाँ लगभग हर गल्ली में मंदीर और जिन बिंब के दर्शन होते है । लगभग रात के 8.30 बज चूके थे । बस में कुछ खराबी आने के कारण हम सबने वहाँ मंदीर में बैठकर जाप किये । वहाँ से लगभग 10.00 बजे बस में बैठकर **वरकाणा तीर्थ** की ओर प्रयाण किया । 'मुझे नहीं होना परेशान', Come what may I will enjoy इस मंत्र का साक्षात्कार किया और वरकाणा तीर्थ पहूँचे । दुसरे दिन यांने के 22 तारिख को सुबह जिनमार्ग Trekking के लिए निकलना था । प.पू. गुरुदेवने Brief में आगे का कार्यक्रम समझाया और सभी अपना अपना सामान लेकर अपने अपने रुम में गए ।

जिनमार्ग Trekking
(ता. 22-10-2017 से ता. 24-10-2017)

प्रभु की वाणी का श्रवण करने के बाद, उस श्रवण का चिंतन, मनन कर जीवन में उसका यथार्थ उपयोग कर, जीवन मार्ग को योग बनाकर, परम आनंद प्रकट करने का चढ़ान चढ़ने (trekking करना) का प्रयोग यांने **जिनमार्ग Trekking**. प.पू. गुरुदेव **श्री पंकजभाई** ने यह नवीन प्रयोग जो परम्परा में पहले था किन्तु जो लुप्त हो गया था उसे नवीन स्वरुप में प्रस्तुत किया है । प्रभु संदेश, कुदरत का हरेक अंश, जीव, परमाणु आत्मसात करे.... जीवे जीवे अरिहंत नाद.... बस यही पवित्र उद्देश्य जिनमार्ग Trekking का है ।

ता. 22-10-2017 को सुबह 5.00 बजे सभी श्वेत वस्त्र धारण कर, नीचे परिसर में जमा हो गए । Banners लेकर सब सज्जित हो गए । **'मुझे नहीं होना परेशान', 'आप कैसे भी हो, I Love You', 'नमो जिणाणं'** यह संदेश सभी जीवों को पहुँचाना था । प.पू. गुरुदेवने कहा कि हमारा मुख्य लक्ष्य है परम स्वतंत्रता.... और विचरण करते करते निम्न तीन मंत्रो को Illuminate जागृत करना है ।

(1) मेरे साथ जो कुछ हो रहा है उसका जबाबदार मैं स्वयं हूँ ।

(2) 'मुझे नहीं होना परेशान' ।

(3) परमात्मा मेरे साथ है ।

विचरण दरम्यान इस दिव्यतत्व के साथ जुड़ना है । मैं भगवान के शरण में हूँ । हम सतत् शंका और भय से क्षण क्षण मर रहे है । अब से मैं भगवान के शरण में हूँ, मुझे कोई Disturb नहीं कर सकता है । यह मंत्र वाणी सुनी तभी ढ़ोल, शरणाई के सुर और ताल में सभी आनंद उल्लास के साथ गरबा नृत्य करते करते.... जिनमार्ग Trekiing के लिए निकले । पू. गुरुदेव के चरणरज लेकर निकले । रास्ते में सभी को प्रकृति, जीव, पशु, पक्षी आदि को I Love You, Thank you, God bless you इस Message के भावतरंग फैलाते गए । शांत प्रकृति, पवित्र वातावरण, कुदरत का नजारा... पक्षियों का कलरव, ऐसा लग रहा था कि समस्त कुदरत हमारा स्वागत कर रही है । विचरण करते करते जो भी मिलता था उसे हँसकर 'नमो जिणाणं' कहते थे सामने से उनका मीठा स्मित साथ में लेकर विचरण करते करते 7 Km. की दुरी तय कर **अष्टापद तीर्थ** पहुँचे । लगभग 2 घंटे की यह पदयात्रा चली । जो लोग नहीं चल सकते थे उनके लिए Van Vehicle की व्यवस्था रखी गई थी । इस पद यात्रा दरम्यान, आशिषभाई महेता और प्रदीपभाईजी जवानवृद्ध थे जो सबसे आगे चलते थे..... सलाम उन्हें । अष्टापद तीर्थ पर पहुँचकर सबसे पहले नवकारसी की तत् पश्चात वहाँ **आदिनाथ भगवान** का नयनरम्य सुंदर मंदीर था । वहाँ दर्शन, वंदन किये । उसके पश्चात् प.पू. गुरुदेवने भक्ति रस का अद्भूत थाल परोसा । भगवान की स्तुति स्तवना की । ऐसी पावनभूमि पर बैठकर शांति और पवित्रता का जो अनुभव हुआ वह अवर्णनीय है । यह अद्भूत अनुभव करके सभी बस में बैठकर वरकाणा तीर्थ पहुँचे ।

दोपहर में सत्संग का सत्र था । सत्संग में बहार से भी लोग आए हुए थे । पू. गुरुदेवने स्तुति स्तवना करके सत्र की शुरुवात की । प.पू. गुरुदेवने कहा कि भगवानने मात्र तीन शब्द अपने मुख से उच्चारे थे । **उपन्नेईवा, विग्नेईवा, ध्रुवेईवा ।**

पुद्गल, परमाणु उत्पन्न होना.... विसर्जन होना यह वैज्ञानिक सत्य है । मुख्य Centre Point है ध्रुवेईवा..... मेरा अस्तित्व । सतत् हमारे संपर्क में व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति, जीव और परमाणु आते है । इन पाँचो के साथ मात्र मैत्री का संबंध बाँधकर मुक्त होना है.... Life style को बदलना है – विचार – वाणी – व्यवहार – संस्कार में मात्र 'मैत्री' और विनय का सिंचन करना है ।

शाम को चौविहार करके सत्संग के लिए एकत्रित हुए । प.पू. गुरुदेवने लोगो के प्रश्नों के उत्तर दिए । शरीर यह जीवन जीने का Vehicle है और इसे Well maintain रखना है । इसके लिए शरीरमैत्री, प्राणमैत्री, आहारमैत्री..... बहुत आवश्यक है । सत्र के अंत में आरती, मंगल दीपक करके सभी अपने Room में गए और निंद्राधिन हुए ।

ता. 23-10-2017 जिनमार्ग Trekking – बिजोवा तीर्थ

सुबह 5.00 बजे से 6.00 बजे तक नीतिनभाई का शरीरमैत्री पर Session था । 6.30 बजे पू. गुरुदेवने विचरण शरु करने से पहले कहा कि मैत्री का विकास करना है । पिछले दिन के तीन मंत्र के साथ आज का मैत्री मंत्र उसमें जोड़ना है । Opinion को पकड़ना नहीं है । प्रभु ने भी यही किया था – मैत्री हर जीव के साथ करते गए और मुक्त होते गए ।

इन चार मंत्रो को Illuminate करते हुए कुदरत के हर एक तत्व को Love-Friendship के भाव तरंग प्रसारित के साथ स्तवन और स्तुति गाते हुए विचरण कर रहे थे । 3 Km. की यात्रा करके बिजोवा तीर्थ पहुँचे, वहाँ नवकारशी की, मंदीर में दर्शन, वंदन और भक्ति भावना प.पू. गुरुदेव की उपस्थिति में किया । 1 घंटे भक्ति में तल्लिन हुए और उसके बाद बस में बैठकर वरकाणा तीर्थ पहुँचे ।

वरकाणा तीर्थ के मंदिर में दोपहर 2.00 बजे अर्थ और भावसभर अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन किया गया था । हरेक जन पूजा के वस्त्रों में सज्जित होकर, वहाँ बिराजमान प्रतिमा की समक्ष, एक व्यक्ति एक भगवान, इस तरह तैयार होकर बैठ गए थे । हर एक को अष्टप्रकारी पूजा की सामग्री दी गई थी । प.पू. गुरुदेवने अष्टप्रकारी पूजा का मर्म समझाते हुए कहा कि अष्टप्रकारी पूजा यह भगवान की स्तुति करने का प्रकार है । लक्ष और भाव के साथ यह पूजा करनी है । इस द्रव्य पूजा में भाव और भक्ति, प्रभु के साथ जुड़ने की झंखना होनी चाहिए । पू. गुरुदेवने कहा कि अष्टप्रकारी पूजा आठ कर्म का क्षय करने वाली पूजा है । हर पूजा में रहे हुए भाव से भावित होकर परमात्मा के साथ जुड़ जाना है ।

सर्वप्रथम तीन प्रदक्षिणा दी प्रभु के चारो ओर उसके बाद स्तुति – जिसमें प्रभु के गुण की स्तवना की, यह गुण मेरे अंदर प्रकट हो इस भाव के साथ प्रभु के गुणगाण करना । इसके पश्चात् अष्टप्रकारी पूजा की शुरुवात की ।

अष्टप्रकारी पूजा

(1) **जल पूजा –** प्रभु पे जल का अभिषेक करते करते यह भाव करना है कि मेरा मेल - Negativity दूर हो । दूध का पक्षाल करते हुए यह भाव करना है कि अपने आत्मा को शुद्ध कर रहा हूँ और यह महसुस करना है कि जैसे मैं अपना पक्षाल कर रहा हूँ ।

(2) **चंदन पूजा –** प्रभु के नव अंग पर अंगुठा, घुटने, कलाई (कांड़ा), कंधे, मस्तक (शिखा), कपाल, कण्ठ, नाभि की चंदन पूजा की । यह नव अंग शक्तिपात के स्पर्श बिन्दु है । एक–एक अंग पर अपना पूर्ण समर्पण देकर, वहाँ से प्रकट होने वाली शक्ति कृपा लेनी है ।

(3) पूष्प पूजा (4) धूप पूजा (5) दीपक पूजा (6) अक्षत पूजा (7) नैवध पूजा (8) फल पूजा (अग्र पूजा) ।

इस तरह द्रव्य पूजा की, चैत्यवंदन किया । आरती, मंगल दीपक और शांतिकलश करके.... संकल्प किया कि हे प्रभु, यह आठ प्रकार से आपकी स्तवना, भक्ति, पूजा की है । मेरे अंतर का शुद्धिकरण हो इस लक्ष्य के साथ की है । सभी जीवों का मंगल हो... सद्शक्ति, सद्बुद्धि प्रकटे..... बहुत ही अद्भूत और भावसभर अष्टप्रकारी पूजा की । कुछ अलग अनुभव था । 3 से 3½ घंटे तक चली इस पूजा दरम्यान भगवान और मैं, मैं और भगवान और पू. गुरुदेव की दिव्य वाणी का सत्संग.... अहो ! अहो !..... धन्य पल थे वह.....!

शाम को चौविहार करके सत्संग का सत्र था ।

ता. 24-10-2017 दादाई तीर्थ

सुबह 5.00 से 6.00 नीतीनभाई का शरीरमैत्री, प्राणमैत्री का सत्र था । 6.00 बजे से विचरण, पदयात्रा दरम्यान मैत्री का संदेश प्रसारित करते हुए समग्र सृष्टि मेरा परिवार है..... यह भावना प्रदीप्त हो रही थी । दादाई तीर्थ लगभग 4 Kms. दुरी तय करते करते हमारे साथे के तिर्यंच का जीव (कुत्ता) भी जुड़ा । बराबर हमारे साथ–साथ ही चल रहा था । दादाई तीर्थ पहूँचने तक वह हमारे साथ चला.... मैत्री के Vibration सबको बुला रहे थे ।

विमलभाई राजावत परिवार (मीरा रोड़) के मित्र का वहाँ Resort था । वहाँ Resort में नवकारसी का आयोजन किया गया था । नवकारसी करने के पश्चात् Resort में एक घंटा कुदरती वातावरण में बिताया । उसके पश्चात् दादाई तीर्थ पहुँच कर प्रभु शांतिनाथ के दर्शन किए । विमलभाई राजावत परिवार के स्वगृह में आराम किया । उसके पश्चात् दोपहर के भोजन की व्यवस्था वहाँ के स्थानक वाड़ी में रखी गई थी । भोजन के पश्चात् खुल्ले आकाश के नीचे, विशाल वृक्ष की छाया में सत्संग का आयोजन किया गया । वहाँ के ट्रस्टीयों ने प.पू. गुरुदेव का सम्मान किया और विमलभाई राजावत परिवार का भी सम्मान किया । परम सुख जीवन विकास केन्द्र का तथा संस्था के योगदान का यह सम्मान था । वहाँ के उपाश्रय में बिराजमान साध्वी महाराज श्री कीर्तिशीलाश्रीजी एवं विरतिशीलाजी सत्संग में पधारे थे । शाम को महाजन वाड़ी में चौविहार कर, शांतिनाथ दादा के दर्शन कर,

आरती, मंगल दीपक का लाभ लिया । बस में बैठकर वरकाणा तीर्थ लौटे । अगले दिन मुंबई की ओर प्रयाण करना था इसलिए सब Bag Luggage तैयार करने में Busy हो गए ।

ता. 25-10-2017 वरकाणा तीर्थ
लाभ पांचम – ज्ञान पांचम

सुबह 6.30 बजे का शरीरमैत्री का सत्र नीतीनभाई ने लिया था । शारीरिक तकलीफों से संबंधित सारे प्रश्नों का निवारण नीतीनभाई ने बहुत अच्छे से किया । जानकारी से भरपूर लाभदायी सत्र था । सुबह 7.30 बजे नवकारसी कर नहा–धो कर पूजा के वस्त्रों में सुसज्जीत होकर सभी 9.00 बजे हॉल में ज्ञान पूजन के लिए पहूँच गए थे । ज्ञान पांचम के शुभ दिन ज्ञान की आराधना – जाप पूजन और पू. गुरुदेव के श्री मुखसे वाणी का झरना... सीमंधर स्वामी की हाजरी में.... जैसे सोने में सुगंध भर गई हो ऐसी बात थी। हरेक सत्संगीयों को Individually ज्ञान पूजन की सामग्री – सिध्धचक्र यंत्र के साथ दी गई थी ।

प.पू. गुरुदेवने पंचपरमेष्ठी शरण लेकर, आत्मरक्षा मंत्र की उद्घोषणा के साथ शुभ मंगल शुरुवात की । पाँच परम लक्ष्य का जागृतिपूर्वक गुंजन किया । प.पू. गुरुदेवने कहा कि हरेक व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिति में सम्यक् ज्ञान हमें Alert करता है । हम सब पर निर्भर है फिर भी मुक्त होना है, निर्ग्रंथ बनना है । मान्यताओं की गाँठे यही अज्ञान है । लक्ष्य प्राप्त करने के लिए महेनत, श्रम करना है किन्तु सम्यक् ज्ञान की समझ के साथ और भगवान के दिए हुए ज्ञान को Day to Day life में Connect करना है । ज्ञान पद के अष्टक की एक एक गाथा समझाते हुए प.पू. गुरुदेवने कहा कि सम्यक् ज्ञान को ध्यान में रखकर हमें अपनी Life style develop करनी है । ऐसी Life style develop करने की जो महेनत है, Process है वह तप है । दोष, भूलों का स्वीकार कर, दुःख के कारणों को दुर करने की Setting कर, इसे ही स्वाध्याय तप कहा है । इसीसे विवेक प्रकट होगा । एक गाथा पुरी होने पर सभी वाक्षेप पूजन करते थे और '**ॐ नमो नाणस्स**' के जाप ।

''ज्ञाने जीवनी दया पड़ाय, ज्ञाने सवि आराधना थाय,
ज्ञाने विवेक दीप जले, ज्ञाने भवनी भीति टले ।''

सम्यक् ज्ञान प्रकट होता है तभी हरेक जीव के प्रति मैत्री, करुणा, दया बहने लगती है । प.पू. गुरुदेवने कहा कि जो अपनी मुक्ति चाहते है, उसे सबके साथ मैत्री करनी पड़ेगी । लक्ष्य को Centre में रखकर सबके साथ बिना कारण मैत्री करना । यही विवेक है । विवेक ही मैत्री प्रकट कर सकता है।

''ज्ञाने तत्वनो बोध ज थाय, ज्ञाने मोहनो नाश ज थाय,
ज्ञाने विरति धर्म पमाय, ज्ञाने भवजल पार तराय ।'"

पू. गुरुदेवने कहा कि तीव्र झंखना से तत्वज्ञान प्रकट होगा । मैं हमेशा प्रभु के मार्ग में रहूँ। इस सृष्टि में मेरा Role क्या है ? उसकी समझ मिले ।

ज्ञानियों का सम्मान, आदर करो । अलग अलग Level के ज्ञानी मिलेंगे उनका सत्कार करो । आपके कर्म की निर्जरा होगी ।

ज्ञान यह अग्नि है, कर्मों को नाश करने की उसमें ताकत है । जीवन में मंगल और शांति का वातावरण सर्जित होता है । यदि बारम्बार ऐसे ज्ञानोपार्जन का कार्य करेंगे तो जीवन में सुख और शकुन आएगा । हमारा मुलभूत स्वभाव है ज्ञान, यह ज्ञान हमें मुक्ति दिलवाएगा ।

ज्ञान पद की इतनी सुंदर आराधना, जाप करने के बाद सेवकोने प्रभु की आरती, मंगल दीपक किया... ऐसी भावना के साथ कि यह ज्ञान का प्रकाश, हमारे सबके जीवनमार्ग को प्रकाशित करता रहे.... जीवे जीव का मंगल हो.... ।

ज्ञान पूजा के इस सत्र के बाद भोजन करके, लगभग दोपहर 2.00 बजे बस में बैठकर मुंबई की ओर प्रयाण किया ।

यह थी अद्भूत, विकासात्मक, जीवन को Quality देनेवाली, रंगीले राजस्थान की आध्यात्मिक यात्रा प्रवास । मुख्य तीन Milestone में आकार पाई हुई यात्रा ।

(1) प्रभु की अंतिम वाणी 48 घंटे की Non-Stop देशना ।
(2) पंच तीर्थ की दर्शन यात्रा ।
(3) जिनमार्ग Trekking.

इस यात्रा प्रवास के लिए परम सुख जिवन विकास केन्द्र, प.पू. गुरुदेव जो इस यात्रा के Soul थे । सभी सत्संगी, सभी के प्यारे और न्यारे सेवको का साथ और सेवा को खुब–खुब Thank You और अपने अरिहंत परमात्मा सीमंधर स्वामी.... जिनकी अखँड कृपा, सभीने इस यात्रा के दरम्यान अनुभव की । उनके चरणों में कोटी कोटी वंदन..... । इसी के साथ यह अहेवाल पूर्ण कर रही हूँ।

जीव मात्र पर प्रीत राखो अे ज प्रभु संदेश
सहु जनों थी मैत्री होजो, ना हृदय द्वेष
प्रभु तणी श्रद्धा राखी ने जलावो जीवन दीवो,
अेना शरणे जीवन सोंपी, मस्त थईने जीवो... ।

और अंत में विमलभाई राजावत परिवार की तन, मन, धन संबंध सेवा के लिए खुब खुब अनुमोदना के साथ.... ।

नमो जिणाणं ।

■

गुरुपूर्णिमा

''सारे तीर्थधाम आपके चरणों मे,
हे गुरुदेव प्रणाम आपके चरणों मे ।''

गुरु यांने ज्ञान का प्रकाश और यह ज्ञान का प्रकाश हमें अज्ञान के अंधकार से दुर कर पूर्णता की ओर ले जाता है अर्थात् **'गुरुपूर्णिमा'** । इस वर्ष गुरुपूर्णिमा का महोत्सव पार्ला सेंटर पर मनाया गया । हर सेवक एवं सत्संगी को इस दिन का इंतजार होता है क्योंकि इस दिन हम गुरु के प्रति विशेष अहोभाव प्रकट करते है ।

सभी सेवक उत्साहपूर्वक तैयारी मे लगे हुए थे । कोई भगवान को सजा रहा था, तो कोई पू. गुरुदेव के पाट को सजा रहा था, तो कोई तोरण बाँध रहा था, तो कोई रंगोली बना रहा था । हर कोई तैयारी में लगा हुआ था । देखते ही देखते पुरे हॉल में एक दिव्य वातावरण का अनुभव होने लगा । जैसे ही पू. गुरुदेवने हॉल मे प्रवेश किया तो ऐसा लगा कि सोने मे सुगंध मिल गई है । ऐसे दिव्य वातावरण मे द्वार पर पू. गुरुदेव के मस्तक पर तिलक लगाया गया, साफा पहनाया गया, 'गुरुजी हमारो अंतरनाद अमने आपो आशिर्वाद' इस नारे की गुंज के साथ गुरुदेव का स्वागत किया गया । तत्पश्चात् वहाँ उपस्थित सभी ने पू. गुरुदेव के चरणों का पक्षाल किया एवं आशिर्वाद प्राप्त किए । पुष्पगुच्छ एवं Card द्वारा सेवकों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति की । इस तरह सभीने द्रव्य स्वरुप अपने अपने अहोभाव व्यक्त किए ।

'नमो जिणाणं' की धून एवं प्रभु कृपा द्वारा प.पू. गुरुदेवने ज्ञान रुपी प्रसाद बाँटने की शुरुवात की । प.पू. गुरुदेवने सबसे सवाल पूछा कि पूर्णिमा को ही क्यों गुरुपूर्णिमा मनाते है आपको पता है ? इस प्रश्न का जवाब देते हुए पू. गुरुदेवने कहा कि चंद्र की Maximum कला पूर्णिमा के दिन ही खीली होती है और ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चंद्र आपके मन से जुड़ा हुआ है । यह महीने मे दो बार पूर्णता और शुन्यता की ओर जाता है । दोनों ही उपकारी है । पूर्णता यांने ज्ञान की पूर्णता और शुन्यता यांने Negativity को खाली करना । ज्ञान का प्रकाश और ज्ञान के प्रकाश की पूर्णता ही गुरुपूर्णिमा है ।

Physical गुरु के माध्यम से परमात्मा तक पहुँचना है, सिमीत नही रहना है । उनका अनुभव, उनका Connection प्रभु के साथ है । सतत् उनकी धाराएँ, उनका प्रकाश, छाया, शक्ति मिलने की संभावनाएँ है । कृपा रुपी बारिश मे गुरु हमें भिगोना चाहते है लेकिन हम शंका रुपी छाता लेकर अपने आप को उनकी कृपा से वंछीत करते है । प्रभु कृपा प्राप्त करने के लिए प.पू. गुरुदेवने धून की शुरुवात की –

''बरसत बरसत प्रभु की कृपा,
पिऊ पिऊ प्रभु की कृपा...''

आनंदविभोर होकर सभी ने प्रभु कृपा स्वीकारी । अगाथ अनंत अनंत प्रभु कृपा बरस रही है इस बात को उजागर करनेवाला मात्र गुरु है । प्रभु की पहचान करानेवाला कौन होता है ? मात्र सद्गुरु । यह सद्गुरु Live है । Live क्यों है ? क्योंकि इनके माध्यम से हम परमात्मा तक पहूँच सकते है, परमात्मा से बातचित कर सकते है, यह ताकत है गुरु शक्ति की, गुरु तत्व की अर्थात् गुरु ही हमें पूर्णता तक ले जा सकता है । गुरु ही हमे अपने घोर अंधार और घोर नींद से जगाकर वहाँ ले जा सकता है । जिसने अपने आप को इस गुरु को समर्पित कर दिया उसका कल्याण एवं मंगल निश्चीत है । समर्पण यह तिसरा Level है । पहला नमन अर्थात् अहोभाव, दुसरा शरण अर्थात् Receiving Mode में सुनना और तिसरा Level समर्पण यांने जो बताते है उसका अमल करना । सद्गुरु is the centre proint of all universe because he is the factor of this whole universe. प्रकाश देनेवाली Entity है जो परमात्मा की पहचान करवाता है, हमारे माँ–बाप की पहचान करवाता है, धर्म तत्व की पहचान करवाता है और हम अपने Day to Day Life कि परेशानियों से मुक्त होकर आनंदमय जीवन कैसे जी सकते है उसका रास्ता दिखाने वाला जो एक तत्व है वह है गुरु । वह सतत परमात्मा के साथ Connect रहता है, Hot line में रहता है और हमारा काम क्या है ? यह Step चढ़ना है ।

'अहो भाव', 'नमन भाव'

अहो भाव, नमन भाव को विशेष रुप से प.पू. गुरुदेवने समझाया और उसके पश्चात साधक नवकार मंत्र के जाप करवाए । आगे कहा परमात्मा, सद्गुरु, माता–पिता यह हमारी मुक्ति के सोपान है, आनंद का सोपान है । जब सद्गुरु बोलते है तो परमात्मा बोल रहे है । माता–पिता बोल रहे है तो यह उनकी अंदर की आवाज है । और यह हमारे मंगल के लिए ही है । आगे प.पू. गुरुदेवने तन सेवा, मन सेवा, वचन सेवा, धन सेवा एवं संबंध सेवा का महत्व समझाया । इस तरह गुरुपूर्णिमा का महोत्सव संपन्न हुआ और अंत मे ज्ञान प्रसाद के साथ साथ सभी ने गौतम प्रसादी ग्रहण की और विदा ली ।

नमो जिणाणं ।

प्रजापिता ईश्वरीय विश्व विद्यालय ब्रह्माकुमारी'स Mount Abu द्वारा आयोजित Conference में पूज्य गुरुदेव को संत स्वरुप सादर आमंत्रण

परम सुख जीवन विकास केन्द्र – मुंबई
एक कदम आगे की ओर प्रस्थान....

कदम कदम बढ़ाए जा... आगे कदम बढ़ाए जा...
अरिहंत के मार्ग में आगे कदम बढ़ा जा... ।

और परमात्मा के मार्ग को सबको बाँटते जा...
यह Vision साकार हो रहा है एक एक कदम... ।

अक्षय तृतीया की दिव्य संध्या थी, जहाँ महासत्संग और प्रभुभक्ति का आयोजन पू. गुरुदेव के निवास स्थान पर हुआ था । इसी दिन शाम को हमारी संस्था की सेविका ब्रह्माकुमारी प्रविणाबेन जो मुलुन्ड Centre चलाते है तथा ब्रह्माकुमारी से जुड़े श्री राजनभाईजी को अपने साथ यह प्रभुभक्ति योग मे जुड़ने हेतु आमंत्रण देकर अपने साथ ले आए और पू. गुरुदेव से मुलाकात करवाई । तत् पश्चात उन्होंने प्रभु भक्ति योग में भी पू. गुरुदेव की भक्ति का अनन्य स्वरुप देखा । वे काफी प्रभावित हुए । और उन्होंने निर्णय लिया की पूज्य गुरुदेव की वाणी और उनके अनुभव ज्ञान जो Scientific और Practical है, उनका परिचय ब्रह्माकुमारी'स मे भी अवश्य होना चाहिए ।

तभी जुलाई मे Mount Abu मे ब्रह्माकुमारी'स मे Religious Wing मे Conference होनेवाली थी उसकी जानकारी प्राप्त हुई और ब्रह्माकुमारी प्रविणाबहनने इस Conference मे हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित किया ।

यह Conference ता. 21 July 2017 से 24 July 2017 तक रखी गई थी । इसका विषय था – **Conference Cum Rajyoga Shibir on "God's Wisdom for Happiness & Peace" 'परमात्मा के ज्ञान द्वारा सुख और शांति'** यह Conference Mount Abu मे Religious Wing (RERF - Rajyog Education & Research Foundation) & Brahmakumaris द्वारा आयोजित की गई थी ।

All over India से अलग अलग संस्थानो से संत, साधु भगवंत, साध्वीजी, सतीजी, ब्रह्माकुमारी के All over World से ब्रह्माकुमारीस बहने, Delegates पधारे हुए थे ।

पू. गुरुदेव को संत स्वरुप आमंत्रित किया था । उन्हे संत की उपमा दी गई । मुंबई से पू. गुरुदेव के साथ 8 सेवक Mount Abu के लिए रवाना हुए थे । Train जब आबु रोड़ पहुँची तब वहाँ Brahmakumari's के सेवक महेमानो के स्वागत के लिए तत्पर थे । उनके संस्था की बस, गाड़ीयाँ आये हुए महेमानो को पहले शांतिवन और वहाँ से Mount Abu - Gyan Sarovar लेकर जा रहे थे ।

ता. 21 July 2017 पहले दिन Inaugration शाम को 5.00 बजे रखा गया था । जहाँ आये हुए संतो को Stage पर आमंत्रित किया गया ओर पू. गुरुदेव तथा अन्य साधु संतो के करकमल से दीप प्रगटीकरण करवाया गया । दूसरे दिन 22 July 2017 को पू. गुरुदेव का सुबह के सत्र मे Presentation था । पू. गुरुदेवने 'नमो जिणाणं' और साधक नवकार मंत्र बोलकर प्रारंभ किया ।

''नमो जिणाणं'' — आपके अंदर रहे हुए परमात्मा को नमस्कार करता हूँ, स्वीकार करता हूँ, परमात्मा स्वरुप और मेरे हृदय के अंदर Special स्थान देता हूँ ।

पू. गुरुदेवने बताया की, मैं आज आपके समक्ष एक यथार्थ और वास्तविकता के आधार पर आज के युग के अंदर विज्ञान का जो महत्व है, उस Dimension से उस Perspective से उस दृष्टिकोण से आज का विषय मैं आपके समक्ष रजू करुँगा और वो विषय मेरे जीवन के साथ यानी हमारे सबके जीवन के साथ संलग्न हो, वो ही यथार्थ हो सकता है और वो ही वास्तविक हो सकता है ।

तत् पश्चात पू. गुरुदेव ने अपना परिचय देते हुए कहा की, I belong to Scientific Community. मैं BARC के Research Centre का Scientist रहा हूँ, Applied Engineer याने Electronic Engineer रहा हूँ ।

उनका संशोधन यही रहा है की आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? भगवान क्या है ? ईश्वर क्या है ? मेरा उससे क्या ताल्लुकात् है ? यह जगत क्या है ? इस जगत का स्वरुप क्या है ? उस जगत का स्वरुप मेरे साथ क्या है ? मैं यहाँ आया हूँ क्यों ? और क्या करने आया हूँ ?

यह हमारे सब का भी विषय रहा है । पू. गुरुदेवने कहा की, एक एक लाईन मे, एक एक बात की व्याख्या याने Defination करते जाऊँगा जो मैने अपने ज्ञान से और परमगुरु की कृपा से एकत्रित किया है, वो मैं

शुभेच्छक : एक सिक्का हमेंशा आवाज करता है । पेपर का नोट नहीं, ऐसे ही जब तुम्हारी कीमत बढे तो शांत रहना सीखो ।

आपको बताने जा रहा हूँ।

पू. गुरुदेवने सबसे पहेले जिसे हम ईश्वर कहेते है, वो ईश्वर याने क्या ? ईश्वर – Scientific Perspective of Ishwar

हम सब स्वर से बने हुए है और उसका Centre Proint है ईश्वर याने के हम सब तरंग स्वरुप है । हमारी Body को हम Solid मानते है, हम Solid नही है । We are all तरंगमय, हमारी Body भी तरंगमय है, लेकिन हमे दिखता नही है ।

हमारे पास पाँच केमेरा है । जो शास्त्रीय भाषा मे इन्द्रियाँ कही जाती है, उसे Scientific दृष्टि से मैं पाँच केमेरा कहता हूँ । उसके ऊपर जो Data Management करता है उसे मैं मन कहेता हूँ और उसके ऊपर जो निर्णय लेता है उसे मैं बुद्धि कहता हूँ । याने के बाहर के जो दृश्य है वो सारा कुछ इस जगत मे दिख रहा है हमें वो और जो नहीं दिख रहा है वो दृश्यमान और अदृश्यमान यह सब ईश्वर का स्वरुप है ।

याने के हर चीज, हर जीव, हर अजीव, हर Consciousness, Unconsciousness सब कुछ अपने नियम के आधार पर चलता है और यह जो नियम का आधार है, इसीका नाम है ईश्वर । यह ईश्वर की परिभाषा हुई ।

आगे पू. गुरुदेवने भगवान की परिभाषा बताते हुए कहा की –

हमारे पहले महाराष्ट्र के महामंडलेश्वरजीने भगवान का स्वरुप बताया, जो ईन्सान के अंदर ऐश्वर्य, वैराग्य, परम ज्ञान का विकास होता है और परम सीमा तक पहुँचता है, उसे भगवान कहते है ।

तीसरा विश्लेषण याने व्याख्या –

परमात्मा – आत्मा की परम शुध्ध अवस्था –

यही है परमातम् । परमातम् – दो स्वरुप से होता है ।

(1) सगुण अवस्था स्वरुप और (2) निर्गुण अवस्था स्वरुप ।

जिसे हम शीव कहेते है, वो निर्गुण अवस्था स्वरुप होते है और जो सगुण अवस्था होती है वो गुण से सभर होती है, जो हमें दिखाई देते है, जिसे हम अवतार के स्वरुप मे कहेते है । जिन परिभाषा मे तीर्थंकर स्वरुप कहेते है । वेद परंपरा में अवतार स्वरुप कहेते है । बुध्ध परंपरा मे भी अवतार स्वरुप कहेते है ।

हमे इससे क्या ताल्लुकात है ? हमारी इनसे क्या Relationship है ? हमारा जो विषय है **''परमात्मा के ज्ञान द्वारा सुख और शांति''** । तो ये परमातम् ज्ञान क्या है ? और सुख और शांति की परिभाषा क्या है और सत्य की परिभाषा क्या है ?

सत्य दो प्रकार के होते है – एक सनातन शाश्वत सत्य – जो कल था, आज है और कल रहेगा । इसे हम परम सत्य कहेते है । और वो है यह ऐश्वर्य – ईश्वरीय व्यवस्था । उसके अंदर हम एक मात्र अंश है । We are all controlled by this law of universe याने कुदरत का कानून और यह कुदरत का कानून हम सब पर एक सरीखा लागु होता है । हम सब अंश मात्र है । अंश दो स्वरुप मे होते है –

(1) Concious स्वरुप याने चैतन्य स्वरुप जो हम है । जिसे हम नाम 'आत्मा' देते है ।

आत्मा नाम किसे देते है ?

तो आत्मा इसे नाम देते है..... जिसके पास तीन शक्तियाँ होती है, देखने की, जानने की और अनुभव करने की ।

हमारे पास देखने की, जानने की, अनुभव करने की शक्ति है ।

है के नही..... ? इसलिए हम चैतन्य स्वरुप है, हम आत्म स्वरुप है ।

अब, देखने, जानने का अनुभव कर ही रही है, लेकिन गड़बड़ कहाँ हो रही है ?

आगे, पू. गुरुदेवने इस बात पर गौर करते हुए यह समझाया की, गड़बड़ ये हो रही है के हम इस Law of Nature, कुदरत के कानून से बाहर निकल आये है ।

इन्सान के स्वरुप हमारे पास तीन स्वतंत्रता है । जो इस सृष्टि मे किसी के पास ऐसी स्वतंत्रता नही है ।

हमारे पास तीन स्वतंत्रता है । इस जगत का कोई भी भगवान भी इसके अंदर हस्तक्षेप नही कर सकते, ऐसी तीन स्वतंत्रता इन्सान के स्वरुप मे हमारे पास है.... इसलिए इन्सान भगवान बन सकता है, यह तीन स्वतंत्रता के आधार पर ।

कौनसी है ये तीन स्वतंत्रता ?

पता भी है हमे के हम स्वतंत्र है तीन स्वरुप से । और हम सारे जगत से, जीव जंतु, पशु पक्षी, वनस्पति, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु यह सबसे हम ऊपर है । क्यों ? किस आधार पर ?

हम आज इस विश्व विद्यालय के अंदर ज्ञान सरोवर के अंदर ऐसी चर्चा कर सकते है । इन्सान स्वरुप कर सकते है.... क्यों ?

क्योंकि हमारे पास तीन स्वतंत्रता है । जब हमें यह तीन स्वतंत्रता का यथार्थ स्वरुप पता चलेगा, यही यथार्थ सत्य है ।

यथार्थ और व्यथार्थ में फरक समझाते पू. गुरुदेवने आगे समझाया की,

हम बहुत कुछ जानते है । लेकिन जो काम का नही है उसे व्यथार्थ कहेते है और जो काम का है उसे यथार्थ कहेते है ।

यथार्थ से एक Step आगे जाएंगे तो गीतार्थ होता है ।

गीतार्थ वो होता है, जो जानकारी हमारा मंगल करता है, हमारे आसपास जो लोग है उसका भी मंगल करता है, उसे गीतार्थ कहेते है ।

उससे एक Step ओर आगे है... सर्वार्थ... सर्वार्थ क्या होता है ?

जो इन्सान परम लक्ष की ओर आगे बढ़ता है, परम स्वतंत्रता की ओर आगे वढ़ता है । जो शिव बनने के लिए, शिव के अंदर लीन होने के लिए अपना जीवन बीताता है... वे है परम सर्वार्थ ।

बस, इसी के लिए हम पैदा हुए है और यह हमे बार-बार स्मृति मे रखना है । अगर ये स्मृति मे रहेगा तो हमारा जीवन, अपनेआप यथार्थ बनेगा, अपनेआप गीतार्थ बनेगा और अपनेआप सर्वार्थ बनने की ओर आगे बढ़ेगा । और एक दिन हम जरुर सर्वाथ बनेंगे ।

इस परम सत्य को जीवन मे उतारने के लिए धून के माध्यम से यह वास्तविक सत्य को हम स्वीकारेंगे । पू. गुरुदेवने सबसे कहा कि चलो, हम मंत्रयोग के माध्यमसे धून के माध्यमसे हम सब परम सत्य को अपने जीवन में उतारते हुए धून गायेंगे क्योंकि ये ही हमारा परम सत्य, यथार्थ सत्य, वास्तविक सत्य है ।

पू. गुरुदेवने सभी से ताली बजाते बजाते साथ में धून गाने की प्रेरणा की....

मैं समय का प्रवासी हूँ..... (२)
मानव स्टेशन आया हूँ..... (२)
कुछ क्षणों का Credit Card लेकर मैं तो आया हूँ (२)
सत्, चित्, आनंद मेरा स्वरुप..... (४)
परमानंद बनने आया हूँ..... (४)
मैं समय का प्रवासी हूँ..... (४)
मैं सृष्टि का अंश हूँ.... (२)
सृष्टि के सारे नियम मुझ पर लागु होते है (२)
सृष्टि के सारे नियम सब पर लागु होते है (२)
तीन प्रकार की स्वतंत्रता को प्रभुकृपा से लाया हूँ (२)
स्वतंत्र विचार, स्वतंत्र निर्णय, स्वतंत्र अमल करने आया हूँ (२)
मैं समय का प्रवासी हूँ (४)
20% की स्वतंत्रता को अनंत बनाने आया हूँ (२)
मैं समय का प्रवासी हूँ.... हो... हो... हो....

तत् पश्चात पू. गुरुदेवने दूसरी बहोत ही Important बात बतायी ।

हम हमारे Day to Day life के अंदर एक ही अनुभव करते है और वो है परेशानी ।

क्या परेशानी से मुक्त होना है ?

तो अपने आप को ये याद दिलाना है, स्मृति दिलानी है –

''बोल मनवा बोल, मुझे नहीं होना परेशान (२)
के मेरा पक्का है निर्धार'' (२)

जब हम ये बोलते है के मेरा पक्का है निर्धार तब हमारे दोनो हाथ हम ऊपर करते है, ये दोनो हाथ ऊपर होते है उसे Antena कहेते है ।

इस बात पर पू. गुरुदेवने समझाया की कैसे प्रभुकृपा मिलती है ?

''जब हमारे Antena (याने दोनो हाथ) ऊपर होते है, तभी तथास्तु मिलता है । यह ईश्वर देखते है की हमने निर्णय लिया की मुझे परेशान नहीं होना है, मुझे परम स्वतंत्र बनना है ।

जब हमारे Antena खड़े होते है, हमारी इच्छा से, परम इच्छा से, तभी हम पर यह आर्शीवाद मिलते है की हम स्वतंत्र बनेंगे ।

आखिर मे समापन करते हुए पू. गुरुदेवने सारे गुरुजन, ब्रह्माकुमारी की देवीयाँ, उनके गुरुजनो और खास कर ब्रह्माकुमारी प्रवीणादीदी (Mulund Centre) जिन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था में Intorduce किया, सभी को प्रणाम करते हुए आभार व्यक्त किया ।

सभी को **अरिहंत टीवी चॅनल** तथा **Youtube.com / paramsukhtvnamojinanam** से जुड़ने की प्रेरणा की ।

और कहा की ये जो है ''परमात्मा के ज्ञान द्वारा सुख और शांति.... परम सुख और परम शांति की ओर कैसे आगे बढ़ना, उसका Scientific उपाय क्या है, Day to Day life मे कैसे जरुरी है... उसके लिए जरुर हमारा संपर्क करें.... आगे बढ़े ।

ॐ शांति... शांति... शांति....
नमो जिणाणं ।

संत स्नेह संमेलन (ता. 23-07-2017)

यह Conference के दौरान संत स्नेह संमेलन का भी आयोजन किया गया था जहाँ पधारे हुए सारे संत-साध्वीजीयों तथा ब्रह्माकुमारी दीदीयाँ तथा दूसरे वक्ता मोजूद थे और उन सभी को अपना अनुभव Share करना था ।

पू. गुरुदेव (संत स्वरुपी) अपना अनुभव अपना मंतव्य Share करते हुए,

पू. गुरुदेवने सौ प्रथम प्रभुकृपा से शुरुआत की ।

''आप सबके अंदर रहे हुए शिव परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ । आप सब की सेवा करने के लिए मैं तत्पर हूँ । यही शिवबाबा की आज्ञा है और इसीसे मेरे सर्व दोषो का नाश हो । मैं स्वयं शिवत्व को प्राप्त करुं ऐसी कृपा हम सब पर बरसे । अत्र, तत्र, सर्वत्र आप यथायोग्य हो, व्यवस्थित हो । आप सबका मंगल और कल्याण हो ।''

नमो जिणाणं ।

पू. गुरुदेवने कहा,

ये ''**वसुधैव कुटुंबकम्**'' गीता के अंदर जो बताया गया है और

महावीर परमात्माने एक Step ओर आगे बताया **''परस्परोपगृह जीवानाम्''** याने के हम सब एक दूसरे के ऊपर निर्भर है, ये वास्तविकता है। हरेक जीव अनेक लाखो करोड़ो जीव के ऊपर निर्भर है, ये एक परम सत्य है । और जो ये परम सत्य को स्वीकारता है, उसी प्रकार जीवन बनाता है, उसीका अभ्यास करता है वो शिवत्व को प्राप्त करता है ।

आगे पू. गुरुदेवने बताया की, यही माहोल प्रगट करने के लिए आज से 12 साल पहेले ऐसा निर्णय जाहिर किया था और उस निर्णय के साथ **''परम सुख जीवन विकास केन्द्र''** नामक Trust संस्था की स्थापना की ।

यहाँ पर हम सहज आ गए है, जो हमने कल्पना की थी, जो निर्माण करने की, जो जगत निर्माण करने की, क्योंकी आज के जगत को ये पैगाम पहुँचाना बहोत आवश्यक है । आज का जनमानस इतना सीमित है, वो खुद को भी नही देख सकता । 5 minutes के अंदर मुझे जो चाहिए उसके आगे उसको दिख ही नही रहा इतना Short Vision है ।

हमारी भारतीय परंपरा के अंदर **''वसुधैव कुटुंबकम् और परस्परोपगृह जीवनाम्''** का ये जो Vision है, शिवत्व का जो Vision है, हम एक ही परिवार है, वो Vision आज की तारीख मे, सारे जग के सारे Solutions इसीके अंदर है ।

ये ज्ञान सरोवर नही है ये मानस सरोवर है ऐसा मैं कहेता हुँ क्योंकी मानस को जो बदल सकता है वो मान सरोवर है । ज्ञान के आधार पर मानस को बदलना यही आज की Modern World की खास जरुरत है ।

जो सपना मैने सजोया था 12 साल पहेले वो आज मैं साकार स्वरुप मे देख रहा हूँ । February महिने मे हमने हमारा सारा Vision 2025 के अंदर मैने जो प्रगट किया है वो ही मैं यहाँ साकार स्वरुप मे इन देवीओ के माध्यम् से देख रहा हूँ ।

हम सब एक है, हम सब परिवार एक है । इन्सान के बनाए हुए धर्म संप्रदाय का लक्ष एक ही है और यह है 'परम सत्य' को प्राप्त करना । यह जो हमारे Young generation से लेकर बुजुर्गो तक सबके अंदर यह भावना प्रगट हो और यही भावना का संवर्धन बार बार किया जाए, ऐसा एक मैदान खड़ा हो और वहाँ सब आकर गंगास्नान करे इस सरोवर मे और अपना मानस बदले । बस, ऐसा मान सरोवर मानस सरोवर मानस को बदलनेवाला सरोवर ऐसा मैने चाहा है ज्ञान सरोरवर मे । ऐसा एक सरोवर नही मुझे तो लगता है ऐसे ज्ञान के मानस सरोवर हर District मे खड़े होने चाहिए, भारत के अंदर और हर State मे होने चाहिए । यह मेरा खुद का Vision है जो मैने प्रगट किया ।

2012 के अंदर हमने ये Broadcast किया था । TV और Internet पर जिसका उद्घाटन हमने February 2017 मे किया ।

हम भी आपके साथ एसी हमारी भावना है और ये आगे बढ़े ऐसी भावना.....।

यह सेमिनार Conference और संत स्नेह संमेलन के बाद पू. गुरुदेव के साथ सभी सेवकोने इस ज्ञान सरोवर के अलग अलग 18 Wings (Department) की मुलाकात ली । ब्रह्माकुमार नीलेश भ्राताजीने साथ मे रहकर सब कुछ बताया अलग अलग Wings के लोगो से मुलाकात करवाई ।

Thank you BK Nileshbhai
Thank you BK Pravinaben

ऐसे ही अलग अलग Wing की Visit करते हुए हम पहुँच गए SPARC Wing मे । (SPARC - Spiritiual Applications Research Centre) जहाँ हम BK श्रीकांतजी और BK त्यागराजनजी से मिले ।

पू. गुरुदेव के साथ मुलाकात करके वे काफी प्रभावित हुए । BK रामनाथजी जो Religious Wing के मुख्य सेवक है उन्होंने भी SPARC Wing की मुलाकात करने के लिए खास कहा था ।

तभी हमे वहीं बताया गया की सितंबर मे भी SPARC Wing ने Conference - Seminar आयोजित किया है । तभी उन्होंने इस Conference में Participate करने के लिए पू. गुरुदेव को As a Speaker आमंत्रित किया ।

नमो जिणाणं ।

Thank You. God Bless You.

Conference में पधारे हुए संतो के अनुभव

अमृतसर से आये हुए **संत श्री रघुबीर सिंगजी**ने समापन समारोह मे यही कहा की,

जो संतने बताया की,

''मैं समय का प्रवासी हूँ, मानव स्टेशन आया हूँ, कुछ समय का Credit Card लेकर आया हूँ, सत्त चित्त आनंद मेरा स्वरुप है, परमानंद बनने आया हूँ । मैं सृष्टि का अंश हूँ''

यह बहुत ही बड़ी बाते है । इसीको जीवन मे उतारना है । Total Transformation करना है । तनावमुक्त समाज, नशामुक्त समाज की रचना करनी है ।

श्री रघुबीर सिंगजीने यह बताया की, इसे मैं पूरे अमृतसर मे बाटुँगा । मैं बहोत ही Fresh हो गया । चेहरे पर चमक आ गई ।

जैसे श्री रघुबीर सिंगजीने अनुभव सबसे Share किया वैसे ही आये हुए मूर्तिपूजक संप्रदाय के **पूज्य अरविंदमुनी म.सा.** पटियाला से आये

हुए थे । उन्होंने भी काफी सराहा पूज्य गुरुदेव की वाणी को । काफी प्रभावित हुए । कई लोग ने पू. गुरुदेव को 'ब्रह्माबाबा' की उपमा दी । आणंदी से आये हुए वारकरी संप्रदाय के कीर्तनकार **श्री सुभाषभाऊ और उनके Group** ने अनुमोदना करते हुए कहा की, 'खरोखरच हे च सत्य आहे. आम्हाला खूप काही नवीन नवीन समझलं. आम्ही पूर्ण आणंदीच्या लोकांना सांगणार.'' श्री सुभाषभाऊ पर्युषण – 2017 मे भक्तियोग के दिन पधारे हुए थे । दो दिन उन्होंने पर्युषण का लाभ लिया । भक्तियोग के दिन उन्होंने अपना व्यक्तव्य भी सबके सामने प्रस्तुत किया ।

SPARC Wing Conference

पूज्य गुरुदेव पंकजभाई को ब्रह्माकुमारी'स से Conference मे as a Spiritual Scientist निमंत्रण

11th SIR (Spirituality In Researchers) Conference & Meditation Retreat on "Inner Resilience to Outer Agility" from 15th September to 19th September 2017 at 'Gyan Sarover - Maunt Abu.'

Organised & Hosted by :
SPARC (Spritiual Application Research Centre) Wing

आप सभी को यह बताते हुए आनंद हो रहा है और गर्व भी महेसूस हो रहा है की '**परम सुख जीवन विकास केन्द्र**' एक एक कदम सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है ।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीस ईश्वरीय विश्व विद्यालय – Mount Abu की ओर से पूज्य गुरुदेव को SPARC Wing की ओर से as a Spiritual Scientist निमंत्रण भेजा गया ।

पू. गुरुदेव तथा अन्य सेवक मुंबई से ता. 14th September 2017 को रवाना हुए । साथ मे ब्रह्माकुमारी प्रवीणादीदी भी आये हुए थे ।

ता. 15th September 2017 को शाम को Inaugration का कार्यक्रम रखा गया था । जिसके अंदर आये हुए महेमानो का स्वागत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया था । जो भी विशेष महेमान थे, Speaker थे उनके करकमल से दीप प्रगटीकरण करवाया गया ।

दूसरे दिन सुबह के पहेले सत्रमे ही पू. गुरुदेव का Presentation रखा गया था । BK विनयभाई पंडयाने पू. गुरुदेव का बड़े विस्तार से Introduction दिया और उन्होंने यह इच्छा दर्शाइ की पूज्य पंकजभाई के मुखारविंद से नवकार मंत्र का स्मरण हो ।

पू. गुरुदेवने सभी को 'नमो जिणाणं' कहेकर पहेले प्रभुकृपा करवाई ।

'नमो जिणाणं'

आपके अंदर रहे हुए परमात्मा को वंदन करता हूँ, स्वीकारता हूँ और मेरे हृदय मे Special स्थान देता हूँ ।

Started process of Practical Spirituality through Mantra Yog.

साधक नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं ।
नमो सिध्धाणं ।
नमो लोए सव्वसाहुणं ।
नमो सव्व धम्माणं ।
नमो लोए सव्व जीव अजीवाणं ।
एसो पंच नमुक्कारो ।
सव्व कम्मपणासणो ।
परम मंगल सव्वेहीं ।
पढ़मं होई मंगलम् (२)

नमस्कार हो परम पुरुष परमेश्वर को, आपने हमे जो प्रकाश दिया है, आपको हम भावपूर्वक समर्पण करते है ।

सर्व मुक्त, परम मुक्त सिध्धत्व को प्राप्त करनेवाले, शिव स्वरुप को प्राप्त करनेवाले सर्व आत्माओ को भावपूर्वक नमस्कार करते है । आप ही की कृपा से हम सब व्यवस्थित है, जहाँ है आपकी कृपा से है ।

सर्व साधु परमात्मा, जो इस परम मंगल को प्राप्त करने के अंदर पुरुषार्थमय है, आप ही हमारे प्रेरणाबल हो, ज्ञानबल हो, मुक्तिबल हो ।

आप सबको हम भावपूर्वक समर्पित कर रहे है । समस्त जगत का धर्मतत्व यही मेरा आधार है । आप ही के आधार पे, आप ही की कृपा से आप ही के बल स्वरुप हम है ।

हम सब पर कृपा करो..... ।
हम सब परम मुक्ति की ओर आगे बढ़े,
आपके बताए हुए लक्ष की ओर आगे बढ़े,
ऐसी हम सब पर कृपा करो....

समस्त सृष्टि के जीव अजीव के लोग आप सबको भावपूर्वक नमस्कार करते है । मेरा मित्रभाव है । आप सब मेरे मित्र है और रहेंगे, यह मेरा वैयक्तिक निर्णय है । परमात्मा की कृपा से लिया है ।

आप सभी ऐसा निर्णय ले ऐसी मैं प्रार्थना करता हूँ।

आप पाँचो को मैं समर्पण करता हूँ। आप पाँचो के समर्पण से ही मैं सर्व दोष, सर्व कर्म, सर्व अशुभ कार्यो का नाश करूँगा। और परम मुक्ति को प्राप्त करूँगा। आप सबका मंगल हो.... कल्याण हो.... आप जैसे हो वैसे मुझे आप स्वीकार हो.... स्वीकार हो.... स्वीकार हो..... ।

नमो जिणाणं ।

प्रभुकृपा के बाद पू. गुरुदेवने प्रभुकृपा का महत्व समझाया।

रोज सुबह उठते ही ऐसे पाँच महाविभूतियों का शरण और समर्पण करना है।

तत् पश्चात पू. गुरुदेवने कहा की, आज हमने BK उषाबहेनजी के मुख से जो कुछ भी सुना, Connectivity of Yog.... Yog शुरु हो गया।

Connectivity with Infinity.

Connectivity with that iternal on whose base of our existes.

हमारा अस्तित्व जिसके ऊपर निर्भर है इस पाँच विभूतियों के माध्यम से हम Connect होते है, इस Divine World के अंदर।

रोज सुबह उठकर इस प्रकार जो Connect होता है उसे योग कहेते है।

उस योग के बाद Second Stage है उपयोग।

उपयोग क्या है?

Instant Constant Awareness.
Instant Constant Meditation.
Meditation of What?
Meditation of Who I am?
Meditation for What I am existing on this earth.

मैं इस दुनिया में क्यों आया हूँ? ये लक्ष रहे, जागृति रहे और मुझे कार्य क्या करना है? हर क्षण जीवन के सारे व्यवहार करने है। इन्सान बने है, घर चलाना है, जीवन चलाना है, व्यवहार करना है, बोलना है, चलना है, उठना-बैठना है।

Everything has to be done. Nothing is seperate from our living. It is part of living.

जिस दिन से हम इस प्रकार की उपयोगमय जीवन जीने की व्यवस्था बनाएँगे....... । उपयोगमय कैसे बनाना है?

इसे समझाते हुए पू. गुरुदेवने आगे बहोत ही हृदयस्पर्शी बाते बताई।

पू. गुरुदेवने कहा, आज इसको मैं Short मे, संक्षिप्त मे मंत्र स्वरुप आपको दो मंत्र दुँगा, जो हम सब साथ मे बोलेंगे।

यह धून स्वरुप है, संगीत स्वरुप है।

सबसे पहेले हमने जो परमात्मा से Connection लिया वो रोज सुबह उठकर करना है। और हर क्षण जीवन मैं कैसे गुजारूँगा?

उसके अंदर दो निर्णय लेने है.... मंत्र स्वरुप।

पहेला निर्यण –

''बोल मनवा बोल, मुझे नहीं होना परेशान.... (२)
के मेरा पक्का है निर्धार (२)
मुझे नहीं होना परेशान....''

(जब हम मेरा पक्का है निर्धार बोलते है तब दोनो हाथ ऊपर करते है, यह दोनो हाथ ऊपर उठते हे उसे Antena कहा है।)

पू. गुरुदेवने कहा ''ये दो Antena है और जो Antena ऊपर करेंगे उसे तथास्तु मिल जाएगा।''

दूसरा मंत्र –

दिनभर मे हम जिससे भी मिले तब यह मंत्र मन मे बोलना है।

''आप कैसे भी हो, I Love You (4)
I Love You, I Love You, I Love You
Because of You (2)

रोज सुबह यह दो मंत्र और दिनभर कैसे जीना है?

जो मिले उसे **''नमो जिणाणं''**। मन से उसे परमात्मा स्वरुप स्वीकारना है। जब हमने उन्हे परमात्मा स्वरुप स्वीकारा तो उनके अच्छे बुरे गुण अवगुण हमारे Screen से Automatic हट जाएंगे।

मन के अंदर दो निर्णय लेने है,

''मुझे नहीं होना परेशान''

और दूसरा निर्णय,

''आप कैसे भी हो, I Love You''

फिर धंधा शुरु कर दो। फिर कामकाज शुरु कर दो। जो करना है वो शुरु करो।

ये दो निर्णय Constant चलने चाहिए और कामकाज पूरा होते ही वापस Fullstop लाना है।

नमो जिणाणं। मन मे वापस 3 निर्णय लेने है। 3 Messages भेजने है। Silent Message, मौन Message.

"I Love You,
I Thank You,
God Bless You."

जब हम बिछड़ेंगे, बिछड़ने के समय Fullstop लाना है। क्योंकी हमारी आदत क्या है?

जो भी हमारे व्यवहार के अंदर Differences होते है, वो हम Carry forward करते है। Am I right?

लोगो को Judge करने में अपना समय खराब मत करो।

Yes. We always do this. Personal Likes & Dislikes always carry forward of all Individuals about all objects.

वस्तुएँ भी हम वापरते है, उसके बारे मे भी हम Likes Dislikes एकत्रित करते है । हम Garbage bin बन चुके है ।

इस Garbage bin मे से मुक्त होने का ये प्रयोग है । It is Spiritual Application Applied Spiritually.

Instant Constant Yog.

Instant Constant उपयोग । This is dynamic meditation. प्रयोग पर प्रयोग करते रहना है । जो भी इन्सान मिले, जो भी हम वस्तुएँ उपयोग करने के लिए ले यह तीन Process, तीन प्रयोग करने है ।

चलिए, वापस तीन प्रयोग करते है ।

प्रयोग नं. (1) – नमो जिणाणं । याने हम परमात्मा स्वरुप उस व्यक्ति को, वस्तु को, Situations (परिस्थिति) को स्वीकारते है ।

इस दुनिया मे हमारे पाँच Contact Points है ।

व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति, जीव, परमाणु ।

यह पाँचो के साथ हमे तीन व्यवहार करने है ।

जो भी हमे मिले संपर्क के समय ''नमो जिणाणं'' । परमात्मा स्वरुप स्वीकारना, उनको हृदय के अंदर Special स्थान देना ।

जब बिछड़े, वापस '**नमो जिणाणं**' ।

'I Love You, I Thank You, God Bless You'.

This is the formula.

अंत मे पू. गुरुदेवने समापन करते हुए कहा **If you are interested meet me on Arihant TV Channel, meet me on Youtube.com / paramsukhtvnamojinanam or Joint Science of Divine Living on facebook.**

We can meet again, any time, any where in PSJVK. We are creating awareness in 150 countries on world level.

I invite you all to join this Bandwagon of Scientific Presentation of Applied Spirituality.

Namo Jinanam.

यह Presentation एकदम हृदयस्पर्शी रहा । सबके दिल को यह बाते छू गई । सभी कहे रहे थे Yes, this is reality. This is truth.

वहाँ जो भी Guest आए थे सब बड़े बड़े Scholars, Scientists, Ph.D, Doctors सभी को लगा की यह ही Science है यह Practice मे लाने से, जीवन मे Impliment करने से हमारा जीवन सार्थक होगा ।

सब आतुर थे पू. गुरुदेव से Personally मिलने के लिए और अपने जीवन के जो भी Issues थे उसका Solution पाने के लिए ।

काफी लोग पू. गुरुदेव से Personally मिले । उन्होंने अपने जीवन की समस्याएँ, मन मे उठते सवाल, Jainism क्या है ? इसके बारे मे Questions पू. गुरुदेव के सामने रखे । और सभी ने अपने प्रश्नो का पूरा समाधान पाया ।

ब्रह्माकुमारी अलकादीदी, ब्रह्माकुमारी छायादीदी, ब्रह्माकुमारी उषादीदी सभी पू. गुरुदेव का सत्र सुनकर काफी प्रभावित हुए ।

आगे मिलते रहे, ऐसी सभी ने भावना व्यक्त की ।

नमो जिणाणं ।

Thank You. God Bless You.

'परम सुख जीवन विकास केन्द्र'की एक नयी सिध्धी – नया अभियान स्कूल/कॉलेज के विद्यार्थीओंकी Special शिबीर रानी गाँव – वरकाणा (राजस्थान)

स्कूल और कॉलेज के छात्रो के लिए Scientifically जीवन कैसे जीना, हर वक्त Enjoy कैसे करना ? पढ़ाई के Stress, Tension से कैसे दूर होना ? Friendship कैसे करनी है ? Exam के समय जो भय होता है उसे कैसे दूर करे ? Depression से बाहर कैसे आएँ ? हर वक्त Fresh कैसे रहना ?

इन विषय (सवालो) पर **राजस्थान मे खीमेल (रानी गांव) मे स्थापित मरुधर महिला विद्यापीठ मे तथा वरकाणा पार्श्व महाविद्यालय वरकाणा** मे दो–दो सत्र की शिबीर का आयोजन किया गया था ।

इसकी शुरुआत कहाँ से हुई ? कैसे हुई ?

दिवाली के दरम्यान इस साल Non-stop 48 hours देशना का आयोजन राजस्थान मे राता महावीर तीर्थ हथुंडी मे तथा जिनमार्ग Trekking का आयोजन वरकाणा तीर्थ मे हमारे सेवक श्री विमलभाई राजावत परिवार के सीजन्य से हुआ था । इसकी पूर्व तैयारी के लिए पूज्य गुरुदेव और अन्य सेवक वहाँ गये थे । जहाँ श्री कपूरभाई जो राजावत परिवार के स्वजन है और वरकाणा तीर्थ और दादाई तीर्थ मे अपनी सेवाएँ दे रहे है । वो भी पूज्य गुरुदेव के साथ सेवा मे लगे हुए थे ।

वरकाणा तीर्थ मे श्री कपूरभाईने श्री फत्तेहचंदजी रांका (श्री वरकाणा पार्श्व विद्यालय के President है) और श्री चांदमलजी हिंगड (जो Secretary है) की मुलाकात पूज्य गुरुदेव से करवाई ।

पूज्य गुरुदेव के साक्षात् स्वरुप दर्शन करके वे बहोत ही आनंदित हो गये । वे पूज्य गुरुदेव को अरिहंत टी.वी. के माध्यम से जानते थे और रोज टी.वी. पर सुनते भी थे ।

उसी दिन वरकाणा पार्श्व विद्यालय मे एक छात्रा जो BCA मे पूरे राजस्थान मे Top आई थी उनका सन्मान समारोह भी था । श्री फतेहचंदजी और श्री चांदमलजीने यह छात्रा का बहुमान पूज्य गुरुदेव के हस्तक हो ऐसी भावना जताई । पूज्य गुरुदेव के करकमल से उस छात्रा का सम्मान हुआ ।

तभी यह तय किया गया की यहाँ एक शिबीर का आयोजन होना चाहिए ।

ऐसे मरुधर महिला विद्यापीठ मे 2 सत्र 7th Std. से लेकर कॉलेज की छात्राओ तक के लिए रखे गए । और वरकाणा पार्श्व महाविद्यालय मे 2 सत्र अंग्रेजी माध्यम के Students के लिए और दो सत्र हिन्दी माध्यम के Students के लिए रखे गए थे ।

प्रभुकृपा हुई । स्कूल और कॉलेज के तकरीबन 1000 Students ने दोनो विद्यालयो मे यह शिबीर का लाभ लिया ।

मरुधर महिला विद्यालयमे सत्र की शुरुआत स्कूल की छात्राओके स्वागत गीत से हुई ।

School की प्रिन्सीपालने पू. गुरुदेव का सबसे परिचय करवाया ।

पूज्य गुरुदेवने ''नमो जिणाणं । आपके अंदर रहे हुए परमात्मा को नमस्कार करता हुँ, स्वीकार करता हुँ और मेरे हृदय मे Special स्थान देता हुँ ।'' कहकर प्रारंभ किया ।

पूज्य गुरुदेवने सबसे प्रश्न किया,

''आज का दिन कैसा है ?''

सबने कहा, ''अच्छा है ।''

पूज्य गुरुदेवने कहा, ''आज का दिन अद्‌भूत है ।''

जो रोज सुबह उठकर अपने आपको Wish करता है,

''आज का दिन अद्‌भूत है ।

It is a wonderful Day.''

और भगवान को Thank You कहेता है उनका दिन Autometic व्यवस्थित बन जाता है ।

हमे जो भी जीवन मिला है, वो भगवानने दिया है ।

सबसे पहेले हमे रोज सुबह उठकर तीन निर्णय लेने है ।

"It is a Wonderful Day. आज का दिन अद्‌भूत है । Come what may I will enjoy. कुछ भी हो जाए मैं आनंद मे रहुँगा । Came what may I will Smile. कुछ भी हो जाए मैं हंमेशा मुस्कुराता रहुँगा । Thank You God."

पूज्य गुरुदेवने आगे समझाते हुए कहा रोज सुबह उठकर सबसे पहेले ईश्वर को Thank You.

क्यों ?

क्योंकी उन्होंने हमे नया जीवन दिया है, एक दिन का Extension दिया है । मैं धन्य हो गया । Thank you very much.

पू. गुरुदेवने जन्म दिन का महत्व समझाते हुए कहा, हररोज हमारा नया जन्म होता है ?

कैसे ?

रात को जब हम सोते है तब हमे कुछ पता नही होता सिर्फ हमारी सांसे चलती है । क्या हमे पता है कि सुबह हमारी आँख खुलेगी ? नहीं ना....!

इसलिए जब सुबह प्रभुकृपा से हमारी आँखे खुलती है, तो हमारा नया जन्म हुआ ना....!

इसलिए Everyday is new Birthday, New opportunities, New fresh life.

जब हम सुबह उठते है तो Fresh होते है या Tension मे.... ?

पूरे दिन का Tension, स्कूल जाने का Tension, पढ़ाई का Tension, न जाने क्या Tension..... हम हमेशा कल के आधार पर आज जीते है ।

Birthday याने नई शुरुआत । नया अवसर मिलता है । कल की कहानी को भूल जाना है ।

इसलिए रोज सुबह उठकर **3 Whatsapp** करने है.... हाथ ऊपर करके ।

"It is a Wonderful Day
come what may I will enjoy
Come what may I will smile"

जो ये तीन Whatsapp रोज सुबह करेगा वो Fresh अपनेआप हो जाएगा ।

यह Whatsapp के बाद **3 महान हस्ती** को Thank you कहेना है ।

1 ला शुक्रिया – Thank You - परमात्मा को, ईश्वर को ।

जिन्होंने हमे नया जीवन दिया है ।

2 रा Thank You - Live God को

Live God याने माता–पिता को । माता–पिता ईश्वर के ही अवतार है । मरते दम तक हमारे लिए अपना जीवन कुरबान करते है । बिना कारण वे हमारे लिए सबकुछ करते है । माता-पिता के पैर छुकर Thank you बोलना है । माता–पिता को Thank you यांने परमात्मा को Thank You बराबर है ।

परमात्मा हमारा सारा दिन Wonderful अद्‌भूत बनायेंगे ।

शुभेच्छक : **जिंदगी उस पल से ही अच्छी होना शुरु हो जाती है जिस पल से तुम माफ करना शुरु कर देते हो ।**

3 रा Thank You - पू. गुरुजन को

गुरुजन हमारे तीसरे नंबर के God है ।

गुरु का अर्थ क्या ?

जो हमारे अंदर रहे हुए अँधकार को, अज्ञान को मिटाते है ।

यह तीन Whatsapp और तीन हस्ती को Thank you की बाते सुनकर सारे Students, प्राध्यापक, प्रिन्सीपाल बहुत ही प्रभावित हुए । एक एक बात पर करताल ध्वनि से अपना उत्साह सभी प्रगट कर रहे थे।

सभी को बहुत ही आनंद हो रहा था । सभी एक टस गुरुदेव की बाते सुनने मे मग्न थे ।

आगे पूज्य गुरुदेवने बताया, हमारा जीवन ज्ञान से समृध्ध होता है। रोज हमे Smile करने की Practice करनी है । जब हम अंदर से खुश रहेते है तो अपने आप चहेरे पर Smile आती है । बिना कारण खुश रहेना है । बिना कारण लोगो से घुलमिल जाना है । जो कारण ढुँढ़ते है वो 98% नाखुश रहेते है ।

बिना कारण अंदर की खुशी चाहिए ?

रोज सुबह उठकर परमात्मा को तीन WhatsApp Message करना है ।

वसुधैव कुटुंबकम् यांने संपूर्ण सृष्टि एक परिवार है । भगवान सारी सृष्टि को एक परिवार कहेते है ।

माता–पिता, गुरुजन सब चाहते है की हम खुश रहे, आगे बढ़े । माता–पिता चाहते है की उनके बच्चे हंमेशा हंसते रहे ।

हमारे चहेरे पर भी Smile रहेगी तो Teachers हमारे नजदीक आयेंगे ।

रोज हमे खुद को Happy Birthday करना है । Birthday है तो Cake भी चाहिए ।

Cake याने हमारी Smile.

सबके अंदर Bubbling Energy है ।

जितने हम तर्क (बुध्धि) से सोचेंगे, Choices Belief system. मान्यताएँ बढ़ जाती है, उतनी नाराजगी बढ़ती है और Smile कम हो जाती है।

सबको अपना बनाने के लिए झुकना पड़ता है, जो झुकेगा वो ही Smile कर पायेगा ।

इसके लिए 3 Whatsapp Message और 3 Thank You की आदत डालनी है ।

- ईश्वर को Thank you.
- माता–पिता को Thank you, God bless you.
- जो गुरुजन है उनको भी Thank You, God bless you.

गुरुजी जब Class मे आते है तो उनके पैर छुना है । या हम जहाँ खड़े है वही जमीन को छुकर पैर पड़ना है ।

प्रत्यक्ष है उनके पैर छुना है और जो अप्रत्यक्ष है उनको दिल से झुकना है ।

भगवान आपके अंदर असीम असीम कृपा करे । ऐसे आशिष देना हे माता–पिता तथा गुरुजन को ।

आगे पूज्य गुरुदेवने यह समझाया की हम नाराज क्यों होते है ? हम परेशान क्यों होते है ? इसके कारण क्या है ?

हमारे अंदर सब चीज के लिए Opinions है । हमे लगता है की हम जैसे कहे वैसे सब चले । ये ऐसा होना चाहिए, उसे ऐसा करना चाहिए, इत्यादि । लेकिन वैसा नही होता । हम हर चीज के लिए अभिप्राय बाँध लेते है । जब ऐसा नही होता तब नाराजगी पैदा होती है । हम परेशान होते है ।

नाराजगी का कारण क्या है ?

नाराजगी का कारण अभिप्राय, मेरे खुद के अभिप्राय, मेरी खुद की Belief System. हमारी मान्यता ही हमे दुःख देती है ।

नाराजगी से मुक्त होने के लिए क्या करना है ?

''बोल मनवा बोल, मुझे नहीं होना परेशान (२)
मेरा पक्का है निर्धार (२), मुझे नहीं होनापरेशान
बोल मनवा बोल....
मैं स्वतंत्र जरुर बनुँगा....
मैं श्रमण जरुर बनुँगा....
मैं निर्ग्रंथ जरुर बनुँगा....
मैं भगवान जरुर बनुँगा....
मैं अनंत जरुर बनुँगा....
बोल मनवा बोल

और जब भी हम उदास होते है तो परेशानी से मुक्त होने का गीत –

''आप कैसे भी हो, I love you (2)
I love you, I love you,
I love you, because of you (2)
I love you inspite of you
आप सच्चे हो, I love you
आप जुठे हो, I love you
आप अच्छे हो, I love you,
आप बुरे हो, I love you
आप कैसे भी हो, I love you.''

ये दो मंत्र को सफल बनाने के लिए प्रभु की कृपा लेनी है, जो कृपा लेगा वो हमेशा Smile करेगा ।

तत्पश्चात पहेले सत्र के अंत मे पूज्य गुरुदेवने हमारे अंदर जो Negative Vibrations जैसे भय, चिंता, Stress, Tension है उसे कैसे निकालना, उसका Process बतलाया.... मंत्र द्वारा ।

सबसे पहेले तो हमारे शरीर के अंदर Negative Vibrations कहाँ होते है ?

सिर से लेकर घुटने तक Negative Vibrations रहेते है । उसे निकालने के लिए पहेले दोनो हाथ उपर करके प्रभु की कृपा लेनी है, फिर दोनो हाथो को नीचे की तरफ ले जाते हुए 'नमो जिणाणं' बोलना है । और फिर जैसे जाडु मारते है ऐसे हाथो को घुटने से बाहेर की तरफ ले जाकर 'जिअ भयाणं' बोलना है ।

''नमो जिणाणं, जिअ भयाणं,
नमो जिणाणं, जिअ भयाणं.''

जब जिअ भयाणं बोलेंगे तब Negativity को झाडु मारना यांने बाहर निकालना है ।

ऐसे दोनो विद्यालय – मरुधर महिला विद्यालय (खीमेल) तथा वरकाणा पार्श्व विद्यालय (वरकाणा) मे हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम मे एक एक सत्र का समापन हुआ ।

सारे Students और प्राध्यापक उत्सुक थे दूसरे दिन के सत्र के लिए ।

दूसरे दिन वरकाणा पार्श्व विद्यालय मे वहाँ के CEO श्री सुशील चौधरीजीने पू. गुरुदेव को तिलक करके माला पहनाकर और शाल पहनाकर पू. गुरुदेव का स्वागत किया ।

पू. गुरुदेवने पहेले प्रभुकृपा करवाई । अगले दिन के सत्र का Revision करवाया । जो नये आये थे उनको समझाया ।

तत्पश्चात पू. गुरुदेवने Divine Love क्या होता है यह समझाया ।

''आप कैसे भी हो, I Love You'' यांने हमे सबसे बिना कारण प्रेम करना है । कोई हमसे बाते करे ना करे, कोई मुस्कुराये ना मुस्कुराये, हमारा काम करे ना करे, हमारा प्रयास हमेशा मैत्री का ही रहे इसे Divine Love कहेते है, बिना कारणवाला प्रेम ।

खाली I love you खतरनाक है । इसमे आप कैसे भी हो आ गया तो Divine बन गया ।

बिना कारण का प्रेम भगवान महावीरने सारे जगत को बताया हे ।

महावीरने संदेश दिया है –

'बिना कारण सबसे प्रेम करो''

मैत्री भाव का पवित्र झरना मेरे हृदय मे बहेता रहे,
शुभ हो यह सकल विश्व का ऐसी भावना नित्य रहे

ऐसी मैत्री हम सबसे करेंगे तो जीवन मे अवश्य खुशी आएगी ।

लोगो को कैसे मिलना है ?

जब हम किसी से मिले तो उनका 'नमो जिणाणं' से स्वागत करना है ।

हमारे जीवन मे हम तीन चीजो से Constantly संपर्क मे आते है – व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिती ।

इन तीनो का ''नमो जिणाणं'' से स्वागत करना है ।

जगत को परमात्मा स्वरुप स्वीकारना है । परमात्मा स्वरुप स्वीकारेंगे तो जगत भी व्यवस्थित चलने लगेगा ।

हमारे जीवन मे हम झमेला खड़े करते है । झमेला से भरा हुआ है हमारा जीवन इसलिए हम परेशान रहेते है ।

झमेला से 'ज' निकालेंगे तो 'मेला' बन जाएगा । क्योंकी हम दिमाग को ज्यादा वापरते है इसलिए झमेला होता है ।

दिल का उपयोग करेंगे तो जीवन मेला बन जाएगा ।

यही फर्क है, दिल और दिमाग का ।

अब

पढ़ाई कैसे करनी है ?

हमे पता ही नही है की कैसे पढ़ना है, कैसे शुरुवात करनी है ?

हम Tension मे रहते है ।

यह Tension भगाने के लिए Attention मे आना है । Systemetic Planning करनी है ।

''आज का दिन अद्भूत है ।
Come what may I will enjoy,
Come what may I will always smile.''

यह Attention है । यह काम करने के लिए ही हम आये है ।

''नमो जिणाणं, जिअ भयाणं''

कृपा लेने से हम Right Decision ले सकते है । स्कुल / कॉलेज मे हमे Syllabus, Time Table दिया जाता है । हमे पहेले से मानसिक तैयारी करनी है । Syllabus पहेले से पढ़ लेना चाहिए । पढ़ाई को अलग–अलग हिस्से मे बाँटना है ।

As a Student हमें क्या करना है ? हमारा Approach कैसा होना चाहिए ?

सबसे पहेले किताब को ''नमो जिणाणं'' कहेना है । और किताब जिसने लिखी है वो लिखनेवाले को भी ''नमो जिणाणं'' करना है । क्योंकी किताब ज्ञान है और लिखनेवाले ज्ञानी है ।

इसका Magic ये हे कि अगर हम ''नमो जिणाणं'' बोलकर किताब खोलेंगे तो हमारे लिए जो Important Page होगा वही खुलेगा ।

शुभेच्छक : **तुम्हारा सबसे अच्छा शिक्षक तुम्हारी गलतियां है ।**

अगर हम पूरी किताब ना भी पढ़े, किताब को 'नमो जिणाणं' किया, किताब को भगवान बना दिया, जब हम Exam देने बैठेंगे तो किताब अपने आप खुलेगी, हमे दिखाई देगा क्या लिखना है ।

पढ़ाई के लिए 3 Level की Reading जरुरी है । हरेक Subject का हरेक Chapter की 3 Reading जरुरी है ।

Subject को Chapter को समझना है । व्यवस्थित जीवन मे लाना है, तो 3 Reading जरुरी है ।

(1) Class मे जाने से पहेले हमे वो Chapter पढ़ लेना है, जो हमे Teacher पढ़ानेवाले है । पढ़ते समय जो जो दिक्कते हो, जो समझ मे नही आया है उसे Note करके रखना है ।

पहेले से तैयार होकर Class मे जाना है ।

जब Teacher पढ़ायेंगे तो जो भी हमने Note किया है, जो भी दिक्कते है वो सारी शंका Doubts हमें उनसे पूछकर समाप्त करना है ।

(2) Homework - Conceptual for learning

जो Chapter सिखाया था, उसका घर जाकर अभ्यास करना है । वो Chapter कहेना क्या चाहता है, उसके Main Points क्या है ? वो लिखने है । और हर Chapter की Summary main points में बनानी है ।

हमें Life का Timetable बनाना है । Life की Requirement के मुताबिक Timetable बनाना है ।

हम 24 घंटे कैसे बिताएंगे उसका Timetable बनाना है । Life को Balance करनी है ।

खुश रहेने के लिए Timetable बनाना है ।

खुश रहेने का जरिया है पढ़ाई ।

सबसे पहले Goals तय करने है ।

Goals – पढ़ाई के तोर पर, Physical तोर पर, मानसिक तोर पर, परिवार के तोर पर Goals तय करने है ।

खुद के जीवन का Timetable बनाना बहोत जरुरी है ।

अब पू. गुरुदेवने 3rd Reading की बात बताई ।

(3) 3rd Reading है Exam के लिए ।

Exam के लिए जो भी Important है, उसकी पहेले से तैयारी करनी है । (i) पूर्व तीन साल के Paper Solve करने है । (ii) Group Discussion से Doubt Clear करने है ।

अब Exam कैसे देनी है ?

जब Exam देने जाते है तब पहेले से ही 'नमो जिणाणं' बोलते बोलते जाना है । Examination Hall मे जाकर शांति से बैठना है । तब No Discussion. मन शांत रखना है और '**नमो जिणाणं, जिअ भयाणं**' जाप करने है ।

Teachers जब Answer Paper देते है तब उसे 'नमो जिणाणं' कहना है ।

Answer Paper पर दोनो बाजु Margin छोड़कर लिखना है ।

Qustion Paper को भी 'नमो जिणाणं' करना है । पूरा Question Paper पढ़ना है ।

सबसे पहेले प्रार्थना करनी है कि, ''हे परमात्मा, जो मेरे हित मे है ऐसी मेरी मन की स्थिती हो, मेरे पास जो ज्ञान है उससे मे Best लिख सकु ऐसी कृपा करना । नमो जिणाणं ।''

हरेक Question को कितनी Minutes मे लिखेंगे वो Question के बाजु मे लिखना है। जो Question Easy लगते है और उनका Answer पूरी तरह पता है उसे पहेले लिखना है ।

ऐसे पूरा Paper Solve करना है और अंत की 10 Minutes पूरा Answer Paper एक बार वापस पढ़ लेना है । ताकि कुछ रह गया हो कुछ वापस याद आ जाए तो हम लिख सके ।

Paper Check करनेवाले है भगवान उनको भी कृपा दे । Paper को भी Blessings और तपासनेवाले को भी Blessings देने है ।

अगर हमारे Marks कम आते है तो हमे मायूस नही होना है ।

खुश रहेना यही हमारी जिंदगी का मकसद है ।

Interview :

Interviews की तैयारी घर से करके जाना है । Relax होना है । वहाँ जाकर शांत चित बैठना है । No Tension. मन मे 'नमो जिणाणं, जिअ भयाणं' बोलते रहेना है । चहेरे पर Smile रखना है ।

हमारे लिए Newspaper, Professional Magazine की Reading भी जरुरी है । दुनिया मे क्या चल रहा है वो हमें पता होना चाहिए । Important news, Headlines पढ़ना जरुरी है ।

Magazines, Outside Reading, हमारी जो किताबे है वह दूसरे Author की हो उसे भी पढ़ना जरुरी है । Library मे जाना आवश्यक है । दिन मे एक घंटा Library मे बिताना चाहिए । इससे हमारी Knowledge बढ़ेगी, Uniqueness आयेगी । दूसरो से हम अलग बनेगे । हमारे Marks भी बढ़ेंगे । हमारा Vision broad बनेगा ।

Internet, Smart Phone :

Smart Phone को Smartly use करना है । सारी दुनिया की information internet, smart phone के अंदर मौजूद है ।

Outside Knowledge के लिए वापरना जरुरी है । Games, Chating पर सब waste of time है, बकवास है । समय की बरबादी

शुभेच्छक :

जिंदगी बहुत आसान है पर हम उसे मुश्केल बना देते है ।

होती है । इस लिए उसका Useful Constructive इस्तमाल करना है । Value editing वाला होना चाहिए । दिन मे जितना समय Smart phone, internet को use करेंगे वो पहेले से तय करना जरुरी है । यह हमारे Timetable मे भी होना चाहिए ।

इतना समझाकर पू. गुरुदेवने वापस जो 3 निर्णय लिए थे उनका Revision करवाया और जो तीन मंत्र बताए थे उसका भी वापस Repeatation करवाया ।

अंत मे पूज्य गुरुदेवने सबसे पूछा, ''क्या आप थक गए कि आनंद आया, Fresh हो गये ?'

तब सारे Students ने कहा 'हम तो बहुत ही Fresh हो गये, इतने ज्यादा Fresh पहेली बार हुए ।'

पू. गुरुदेवने कहा, ''हां, अगर हम दिमाग से सुनेंगे तो अवश्य थक जाएंगे और दिल से सुनेंगे तो कभी नही थकेंगे ।'

नमो जिणाणं ।

पूरा होल तालीओ से गुंज उठा । सारे Students, प्राध्यापक, आचार्य सभी बहुत ही प्रभावित हुए ।

सभीने अपने अपने अनुभव, Feedback Forms भरकर और Video interview देकर Share किये ।

विद्यावाडी के Trustee श्री हर्षदभाई सुराणा, प्रिन्सीपाल हर्षदाजी तथा वरकाणा पार्श्व विद्यालय के प्रिन्सीपाल श्री माथुरजी, श्री चौधरीजी, CEO श्री सुशीलजी सभी ने कहा, ऐसी शिबीर बार बार होनी चाहिए । यह Science of Divine Living as a Syllabus मे होना ही चाहिए ।

स्कूल, कॉलेज के जो भी Teachers थे उन्होंने भी अपना अनुभव Share करते हुए कहा की, ऐसे Workshops teachers लोगो के लिए भी होने चाहिए ताकि हमें बच्चो को पढ़ाने मे आसानी होगी । हमें भी बहुत कुछ सीखने मिला है । Thank you very much to Pujya Gurudev. Thank you so much.

नमो जिणाणं ।

श्री चैत्री नवरात्रि आराधना श्री नवपद साधना with श्री सिध्धचक्र महायंत्र पूजन
(गुंडेचा गार्डन – 28 मार्च 2017 से 11 अप्रेल 2017)

व्यवहारिक जीवन में गृहस्थ स्वरुप बहुत सी Negativity होती है उस पर विजय पाना और परेशानी से मुक्त होना यह व्यवहार जीवन की जरुरत होती है । इमानदारी से जीवन जीना है तो सात्विक और सुरी शक्ति की आवश्यकता होती है और ऐसी शक्ति प्राप्त करने के बाद ही परम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ज्ञान पद से सिद्ध पद तक पहुँचने की साधना की शुरुवात होती है । ऐसी आराधना – साधना प.पू. गुरुदेव **श्री पंकजभाई** के सांनिध्य मे वर्ष मे तीन बार चैत्री मास एवं आसो मास मे एकम से लेकर पुनम तक की आराधना साधना एवं शाहपूर मानस मंदीर मे एक दिवसीय आराधना साधना का आयोजन **परम सुख जीवन विकास केन्द्र** द्वारा किया जाता है । इस वर्ष चैत्री मास की नवरात्रि आराधना एवं नवपद साधना का आयोजन **गुंडेचा गार्डन, मुंबई** मे किया गया था । यह आराधना साधना का आरम्भ 28 मार्च 2017 को हुआ एवं इसकी पूर्णाहुति 11 अप्रेल 2017 को हुई ।

श्री सीमंधर स्वामी की निश्रा मे 15 दिन समर्पण करके हमारे अंदर दिव्यता प्रकटे इस हेतु से द्रव्य दीपक का प्रकटीकरण किया गया । इस द्रव्य दीपक का प्रगटीकरण **श्रीमान जीवराजभाई ओसवाल** के कर कमलो द्वारा 'नमो जिणाणं' की धून पर किया गया ।

प्रभुकृपा द्वारा परम पूज्य गुरुदेवने आराधना साधना की शुरुवात की और आगे समझाया कि जिस तरह मकान बनाने से पूर्व उसका Foundation मजबुत किया जाता है क्योंकि Foundation जितना मजबुत होगा उतना ही मकान मजबुत होगा इस तरह हमारी आराधना साधना का Foundation है 'मैत्री भाव' (भाव से सबके साथ मैत्री) । हमारे अंदर सदैव मैत्री भाव रहे कभी धृणा भाव न रहे इस दृढ़निर्णय में स्थिर रहूँ । वैर झेर से न किसी का भला हुआ है न होगा । स्वयं, परिवार, समाज, विश्व एवं समस्त जीव सृष्टि के प्रति मैत्री भाव रहे । आगे प.पू. गुरुदेवने कहा जो राधे को आराधे वही आराधना है । राधे यांने रजस, तमस एवं सत्व गुण । रजस, तमस एवं सत्व गुण का Balancing करना ही आराधना है । महाकाली से प्रार्थना करते हुए कहा कि हमारे अंदर की आसूरी शक्ति से हमे मुक्ति पानी है । हम पर कृपा करो... कृपा करो.... अपने अंदर ही अपनी Energy को सुनियोजीत करना और वृत्तियों का निर्मुलन करना और इसका परम मंत्र है **'मुझे नहीं होना परेशान'** । इस मंत्र की स्थापना की और मंत्रोच्चार करते हुए श्री सिध्धचक्र महायंत्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

''ॐ ह्रीं क्लीं महाकाली दैव्याए नमः''

Day - 2 :

भाव साधना भीतर से और द्रव्य दीपक बाहर से नकारात्मकता को जलाता है । शक्ति आराधना वृत्ति परिवर्तन के लिए जरुरी है । तभी हम नकारात्मकता पर विजय पा सकेंगे । श्रमण वह है जो Goal achive करने का प्रयास करता है, श्रम करता है । जहाँ परम लक्ष्य है वहीं परम ज्ञान है । 'मुझे नहीं होना परेशान' यह स्वतंत्रता का मुल मंत्र है । अपने अंदर 'मुझे

नहीं होना परेशान' चल रहा है या नही यह देखना । दुनिया अभिप्राय देती है, लेना या न लेना यह हमारे हाथ मे है, इसी को ज्ञान कहते है ।

इस तरह लक्ष्य सामने रखकर, 'नमो जिणाणं' समर्पण भाव से और महाकाली एवं दुर्गा देवी के मंत्र को 15 दिन के आयोजन अनुसार जो व्यक्ति करता है वह अवश्य नकारात्मकता पर विजय प्राप्त कर सकता है । इस तरह माँ दुर्गा का मंत्रोच्चार करते हुए वासक्षेप पूजन किया गया ।

''ॐ ह्रीं ऐं क्लीं दुर्गाए नमः''

Day - 3 :

शक्ति आराधना भाग्य निर्माण करने के लिए है न की भाग्य के आधार पर चलने के लिए । यह भाग्यविधाता बनने के लिए है । यद्यपी हमारी मन शक्ति, प्राण शक्ति, शरीर की शक्ति, वचनों की शक्ति और धन शक्ति, व्यवाहरों की शक्ति का जो माध्यम से है हमारे लिए, यदि एक ही दिशा मे होगी तो व्यर्थ न होकर लक्ष्य प्राप्त करने (Focus Power) के लिए Utilize होगी और Minimum ivestment and maximum result नवपद साधना नवरात्रि आराधना द्वारा प्राप्त हो सकता है । आज का दिन परम लक्ष्य, Focus और वातावरण बनाने के लिए आखरी दिन है । हमारे अंदर की हीन भावना (Negativity) निकालने के लिए नियमीत भाव धून 'नमो जिणाणं' के करने से हम सारा जग जीत सकते है । और डिप्रेशन, पागलपन से बच सकते है । भगवान हमारे अंदर ही है । यह सब इसी को जगाने का उपाय है । आराधना System मे रहने से Mind cool down होता है पहले फिर Energy direct आनी शुरु होती है । ज्ञान और विज्ञान से Energy को Utilize करना है । नकारात्मकता पर विजय पाकर 'ॐ ह्रीं क्लीं महाकाली दैव्याए नमः' और बचीकुची Negativity को 'ॐ ह्रीं ऐं क्लीं दुर्गाए नमः' से निकल जाती है । मंत्र, तंत्र और यंत्र द्वारा पहले (1) लक्ष्य (2) फिर प्रभुकृपा, समर्पण (Negativity को भगाने के लिए) भावपूर्वक (3) फिर खुद से प्रेम, मैत्री – 'आप कैसे भी हो, I Love You'.

इसी के साथ अंबे माता का मंत्रोच्चार करते हुए श्री सिध्धचक्र महायंत्र पर पूजन किया ।

''ॐ ह्रीं क्लीं अंबे दैव्याए नमः''

Day - 4 :

आज गजानंद का दिन, आनंद का दिन है । भगवान कहते है तू प्रेम से सभर बन जा । तू एक बूँद दे, Care और Share कर, यही भगवान का मार्ग है । यही हमें Power देगा । अपने घड़े पहले भरने होंगे, Overflow होंगे तभी दुसरो को मिलेगा । जहाँ प्रेम का अभाव है वहाँ आनंद का अभाव है। हमारे अंदर इतनी Negativity धृणा भरी है कि प्रेम के बहने की संभावना ही नही है । जहाँ प्रेम नही वहाँ भय है, आनंद नही ।

आनंद को जतन करने का मंत्र है **'श्री गजानन, जय गजानन, जय जय गणेश मोरया ।'** जो ऐसा किर्तन करता है उसके घर मे, परिवार मे आनंद रहता है और गजानन, ईश्वर उसकी रक्षा करता है, मार्ग मे रखता है और सहज आनंद प्रकट है । (1) लक्ष्य (2) प्रभुकृपा (समर्पण) (3) मैत्री (4) आनंद । जो यह चार Process करता है, उसके घर महालक्ष्मी अपने आप पधारती है । शक्ति देवियाँ Energy Centres है, हमारे अंदर ही, जो लक्ष्य प्राप्ती के लिए हमारी सहायता करती है । निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए श्री सिध्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

''ॐ ह्रीं श्रीं नमः''

Day - 5 :

आज का युग Self-centred है । कृतज्ञता के बजाय कृतघ्नता से जी रहा है । जिस दिन प्रभु के प्रति Thank you का भाव आएगा, उपकारी के उपकार का स्वीकार आएगा वही 'सम्यक् दर्शन' है – 'नमो जिणाणं, नमो जिणाणं' ।

जीवन मे संपत्ति हमें आकर्षित करती है । अयोग्य रुप से कमाई हुई संपत्ति हमारे पतन का कारण बनती है । आने वाली संपत्ति का निर्माल्य और कमाई हुई संचित संपत्ति का शुद्धिकरण करने के लिए यह आराधना है । अपनी Income का कम से कम 10% धर्म मार्ग मे, लोक कल्याण के लिए उपयोग करने से संपत्ति शुद्ध बनती है । स्वयं निरीक्षण करके अनुचित माध्यम से प्राप्त हुई संपत्ति को Reverse कार्य (लोक कल्याण के लिए) मे प्रयोग कर शुद्ध करना है । शक्ति आराधना संपत्ति और सत्ता के शुद्धिकरण के लिए है । अशुद्ध भाव ही हमारी बरबादी का कारण है । हम अपनी वृत्तियों से अपने परिवार को बरबाद करते है । हृदयपूर्वक तन, मन, धन, वचन और संबंध सेवा से हम अपना कल्याण कर सकते है । Duty मजबुरी से होती है, सेवा मन से होती है । बिना कारण किसी को helpful होना, सबसे पहले अपने परिवार के सदस्य को helpful होना है । यही Conversion of शक्ति Levels, शक्ति आराधना है । कर्जदार से अर्जदार बनने की शक्ति आराधना । 'The day you analyse yourself instead of others you will be a winner.' महालक्ष्मी का मंत्रोच्चार करते हुए वासक्षेप पूजा की गई ।

''ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी दैव्याए नमः''

Day - 6 :

शक्ति आराधना का अंतिम दिन । हम करोड़ो सालों के पूर्व संस्कार और वृत्तियाँ ले कर आए है । भय (चिंता), आहार, मैथुन और परिग्रह की वृत्तियों पर विजय पानी है । आसुरी वृत्तियों पर विजय प्राप्त करने के लिए भगवानने तीन मंत्र दिए है । (1) मुझे नहीं होना परेशान (2) नमो

जिणाणं, जिअ भयाणं (3) आप कैसे भी हो, I Love You. इसी का हमें महापुरुषार्थ करना होगा । भगवान महावीरने दुनिया को यही संदेश दिया है कि दोष तेरे Projector में है जो Screen पर दिख रहा है । हमें व्यक्ति, वस्तु और परिस्थिति पर नही बल्कि अपनी वृत्तियों पर Attack करना है ज्ञान और जागृतिपूर्वक । हमें इस चित्रोडे से बाहर निकलना है वरना आगे की साधना नही हो पायेगी । इसके लिए मंत्र जाप किया **'ॐ नमो भगवते श्री वासुदेवाय'** ।

अनुसंधान करना जरुरी है । संपत्ति और सत्ता ही हमारे साधन और सामग्री खड़े करते है । Filter करना है अभिप्रायों का, बिनजरुरी अभिप्रायों को Destroy करना है । महत्व हमारी वृत्ति, खुशी और Smile को दो । सिद्ध यांने Ultimately आनंद मे रहना । हम Really aware और alert है के नहीं यह देखना । महालक्ष्मी देवी के मंत्रोच्चार करते हुए सिध्धचक्र पर वासक्षेप पूजन किया ।

''ॐ श्री महालक्ष्मी देव्याए नमः''

महालक्ष्मी की कृपा से हमारी धन, संपत्ति सात्विक बने, सिद्धगति तक ले जाने वाली बने ऐसी कृपा माँगे ।

Day - 7 :

पाँच इंद्रियों से हम जो ज्ञान पाते है वह परोक्ष ज्ञान है । (1) ईहा – ज्ञान की पहली अवस्था – No details only information (2) अवाह – Details (3) अवग्रह – सुनना और Compare करना (4) धारणा – याद रखना, Store करना ।

यह मति और श्रृत आधारित होता है इसी को हम ज्ञान समझते है लेकिन यह बाहर की चीज है । जो इंद्रिय मति, श्रृति आधारित नही है वह प्रत्यक्ष ज्ञान है । मिश्र चेतन, चित्त मे, वह अवधी ज्ञान है । Internal ज्ञान का स्वरुप जिस दिन समझ में आया वही केवलज्ञान है । जो अपना मकसद जानता है, Alert है वह सम्यक् ज्ञानी है । जब सुख और दुःख का अनुभव न हो वही सम्यक् ज्ञान है 'मुझे नहीं होना परेशान' । जहाँ ज्ञान है वहाँ Love, Care और Share अपनेआप होता है यही मुक्ति का सोपान है । ज्ञानपूर्वक किया हुआ एक क्षण का भाव भी केवल ज्ञान तक पहुँचा सकता है । नम्रता, विनय, विवेक से ज्ञानी के शरण मे समर्पित होते है तो ज्ञान से मुक्ति (परम लक्ष्य) प्राप्त कर सकते है । ज्ञान पद का जाप करते हुए सिध्धचक्र यंत्र पर वासक्षेप द्वारा पूजन किया ।

''ॐ नमो नाणस्स''

Day - 8 :

नवपद का यह दुसरा दिन है । लक्ष्य तय करना 'मुझे नहीं होना परेशान' यह सम्यक् ज्ञान है । 24 घंटे इस सम्यक् ज्ञान को Apply करना ही सम्यक् तप है । सब कुछ करके मुझे नहीं होना परेशान नही किया तो सब कुछ व्यर्थ है । सम्यक् ज्ञान द्वारा दिल को मुझे नहीं होना परेशान सिखाना है, नमो जिणाणं द्वारा प्रभुकृपा लेनी है और मैत्री सब के साथ करनी है । इस मानसिक आहार द्वारा 'मुझे नहीं होना परेशान' तप–शांति का उपार्जन होता है नही तो ताप है । परमात्मा की कृपा होगी तो हमारा तप सफल होगा । यह एक दो दिन का कार्य नही है, आराधना मे बीज रोपण करना है, शुरुआत है । पहले खुद की रक्षा करनी है, फिर दुसरों की रक्षा अपनेआप हो जाएगी । सेवा ही सम्यक् तप है । Help करके आनंद का प्रकटीकरण । तप पद का मंत्रोच्चार करते हुए पूजन किया ।

''ॐ नमो तवस्स''

Day - 9 : रामनवमी

आज का दिन है सारे भयों का नाश करने का । सम्यक् दर्शन साधना Direct action लेने का उपाय है । जो व्यक्ति निर्णय लेता है 'मुझे नहीं होना परेशान' (सम्यक् ज्ञान) और 'नमो जिणाणं, जिअ भयाणं' का वही साधक है । याने हर व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिती मे परमात्मा का दर्शन करता है, निर्णय लेता है और सेवा करता है वह अवश्य भगवान बनता है । **'मित्ती मे सव्व भूएसु'** सबसे मैत्री ।

आहार से शुरु करे, पंचपरमेष्ठी को नमन, शरण समर्पण लेकर सब जीवों को बाँटना, निर्णय में मुझे नहीं होना परेशान, हृदय से Thank you, God bless you के साथ आप कैसे भी हो, I love you होगा तब सम्यक् दर्शन प्रकट होगा । भय, चिंता गायब हो जाएगी । प्रभुकृपा लेकर ही यह संभव है । यही मोक्ष मार्ग है । दर्शन पद का मंत्रोच्चार करते हुए वासक्षेप द्वारा पूजन किया ।

''ॐ नमो दंशणस्स''

Day - 10 :

सम्यक् ज्ञान याने 'मुझे नहीं होना परेशान' । सम्यक् तप सम्यक् ज्ञान का अमलीकरण और नमो जिणाणं सम्यक् दर्शन, सबमे प्रभु के दर्शन करना । आप कैसे भी हो, I love you सम्यक् चारित्र है । यह सात्विक आदते है । दुसरों को उपयोगी बनना, सेवा युक्त समय देकर, धन का उपयोग करके, Constructive वाणी, वचन केवल अनुमोदना ही करना और हमारे Contact का उपयोग दुसरों को उगारने में करना । इसी का नाम है सम्यक् चारित्र, Attitude of Care and Share मैत्री, धर्म करते हुए करना ही वास्तविक धर्म है । दुसरों की परेशानियों मे खुद परेशान न हो कर, अनुकंपा पूर्वक (Helping Attitude) पंचपरमेष्ठी पर अटूट श्रद्धा रख कर सबको यथातथ्य दृष्टि से देखकर यांने नमो जिणाणं और नम्रता, पवित्रता, भद्रता, निर्मलता का प्रकटीकरण ही सम्यक् चारित्र है । यही

अप्रमत दशा है । बिना कारण हसते रहना ही सम्यक् चारित्र है । चारित्र पद का मंत्रोच्चार करते हुए श्री सिध्धचक्र महायंत्र पर पूजन किया गया ।

''ॐ नमो चारितस्स''

Day - 11 :

नवपद के पाँचवे चरण मे हम आए है । यहाँ से गुणात्मक मार्ग शुरु होता है । पहले दस प्रकार के परमात्मा के बताए हुए रास्ते पर चलने का निर्णय लेने वाला साधु कहलाता है । हम Partial और Temporary commitment से कार्य करते है जबकि साधु 100% commitment से जीवन का कार्य करता है । साधु सभी जीवों के मीत बनकर विचरते है। समिती, गुप्ती यांने प्रेमपूर्वक (Care + Share) बिना Condition. मन, वचन और काया से समिती का पालन करे है ।

(1) ईर्या समिती (2) भाषा समिती (3) ऐष्णा समिती (4) आदान प्रदान समिती (5) स्वाध्याय तप

भगवानने गुण विकास को ही साधना मार्ग बतलाया है । मान्यताएँ, Opinions, धारणाऐं हमारा परिग्रह है । मनोवृत्ति मे से दोषों को हटाने का काम करने वाला साधक है । Goal मे Alert रहकर, आंतरिक शत्रु पर विजय प्राप्त यांने समता का विकास करता है वही साधु है । साधु पद का जाप करते हुए पूजन किया गया ।

''नमो लोए सव्वसाहूणं''

Day - 12 :

नवपद आराधना का छठवाँ दिन । नवरात्रि आराधना द्वारा नकारात्मकता पर विजय, सत्व की स्थापना, सम्यक् ज्ञान का प्रकटीकरण और विकास । सम्यक् तप द्वारा, समय्क् दर्शन की स्थापना (Ever smiling) सम्यक् चारित्र का निर्माण Focus पूर्ण और साधुपद के गुण जीवन मे उतारना (मैत्री) का विकास करते हुए स्वयं का विकास, गल्तियों पर विजय, स्वाध्याय तप द्वारा लक्ष्य की जागृति 24 घंटे, सद्गुरु के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए नमन, शरण और समर्पण, गुणों के विकास अवस्था पर पहुँचना, परम विनय गुण की चरम सीमा पर पहुँचना यह है उपाध्याय पद । उपाध्याय विनयी, विवेकी और हमारे Level तक पहुँचकर बात करते है, मार्ग बताते है । परम ज्ञानी और अपने गुरु के प्रति परम विवेकी होते है । करुणामयी होते है, मंगल चाहते है, आगमों के रसपान द्वारा हमारे अंदर श्रद्धा लाते है । हमारी आधि, उपाधि दूर करते है । जो ऐसे उपाध्याय पद का शरण लेते है उसका मंगल निश्चीत होता है । उपाध्याय पद का जाप करते हुए श्री सिध्धचक्र महायंत्र पर पूजन किया गया ।

''नमो उव्वज्झायाणं''

Day - 13 :

नवपद साधना का सातवा दिन । आचार्य भगवंत तीर्थंकर सम है । आचार्य भगवान प्रसन्नता का अनुभव करवाते है । शिष्य के हित के लिए Efforts continious जारी रखते है जब तक Result नही मिलता तब तक । विकथा, निंदा मे दिलचस्पी नही लेते है । गंभीरता सागर से भी अधिक होती है । शास्त्र का पुरा सार शिष्य की भूमिका देखकर देते है । स्व का विज्ञान और बाह्य विज्ञान के ज्ञाता होते है । आचार्य भगवंत की स्थापना स्वर पेटी मे होती है और इस चक्र ध्यान पीले रंग मे धरने से स्वचेतना जागृत होती है । जो आचार्य भगवंत को पूर्ण समर्पण से स्वीकार करते है वह अवश्य परमानंद को प्राप्त करते है । आचार्य पद का जाप करते हुए पूजन किया गया।

''नमो आयरियाणं''

Day - 14 :

आठवे गुण स्थानक पर पहुँचना । जो व्यक्ति 'नमो जिणाणं, ॐ ह्रीं ॐ नमो अरिहंताणं' का जाप करने मे डटा रहता है उसका अवश्य कल्याण होता है । पुरुषार्थ से मंत्र जाप करके हम अपने अंदर का Power जगा सकते है आग लगने से पूर्व । अरिहंत पद का जाप करते हुए वासक्षेप द्वारा श्री सिध्धचक्र महायंत्र पर पूजन किया गया ।

''नमो अरिहंताणं''

Day - 15 :

नवपद ज्ञान सधना का अंतिम दिन । सिद्ध यांने सर्व कर्म से मुक्ति, देह त्याग कर अंतिम चरण तक पहुँचना । व्यवहार से ही कर्म (Baggage) को तोड़ने के लिए परम मंत्र 'मुझे नहीं होना परेशान', 'नमो जिणाणं, जिअ भयाणं', 'ॐ ह्रीं ॐ नमो अरिहंताणं' छह व्यवहार को जीवन मे उतारते है वह मुक्त होते है । छह आवश्यक व्यवहार को Apply करके हम परेशानी से बाहर निकल सकते है । संसार चक्र और सिध्धचक्र यह दो चक्र है हमारे पास । नमो जिणाणं, अरिहंत पद के जाप करने से हम अच्छी और बुरी दोनो घटनाओं से मुक्त हो जाएंगे । भवचक्र के रमण से मुक्त होने के लिए केवल सिध्धचक्र और नवपद ज्ञान साधना ही उपाय है । सिद्ध पद हमें मोह, अंतराय, वेदनीय, नाम एवं सर्व कर्मो से छुटकारा दिलवाता है । सिद्ध पद प्राप्त करने के लिए 'नमो सिद्धाणं' पद का जाप करते हुए वासक्षेप पूजन किया ।

''नमो सिद्धाणं''

इस तरह परम लक्ष्य सिद्ध पद प्राप्त करने के लिए नवरात्रि नवपद आराधना साधना संपन्न हुई ।

नमो जिणाणं ।

नमस्कार महामंत्र योग
The Science of Divine Living
मीरा रोड, मलाड, डोंबिवली

''**परम सुख जीवन विकास केन्द्र**'' अपनी पाँखे फैलाता हुआ जन जन तक पहुँच रहा है । उसके नेतृत्व तले कोई भी सामाजिक संस्था, धार्मिक संस्था, Association, Social Groups अपने Area में यह शिबीर करवा सकते है । **प.पू. पंकजभाई** के सांनिध्य में ''**परम सुख जीवन विकास केन्द्र**'' नगरे नगरे ऐसी शिबीर करवाके अर्हद नाद जगाकर, भगवानने बताया हुआ मार्ग सामान्य जन तक पहुँचे यह लक्ष्य के साथ मीरा रोड, मलाड और डोंबिवली मे आयोजन किया था । डोंबिवली स्थानकवासी जैन समाज ने ''परम सुख जीवन विकास केन्द्र'' को ''**नमस्कार महामंत्र योग The Science of Divine Living**'' शिबीर आयोजन करने के लिए आमंत्रित किया था । यह आमंत्रण का स्वीकार करते हुए दि. 6 अगस्त 2017, रविवार को सुबह 9.00 से 12.00 तक डोंबिवली स्थानकवासी जैन उपाश्रय मे यह शिबीर का आयोजन किया गया था । यहाँ पर बिराजमान आचार्या **श्री झंखनाबाई महासती** और दूसरे महासतीजी की निश्रा मे यह आयोजन हुआ था । मीरा रोड (इस्ट) मे KVO मूर्तिपूजक जैन संघ – शीतलनगर मे यह शिबीर का आयोजन किया गया था । मीरा रोड के **मेयर श्रीमती गीताबेन जैन** तथा **नगरसेविका श्रीमती सीमाबेन शाह** पहले सत्र मे पधारे थे । तीसरे सत्र मे गोंडल संप्रदाय के **पू. मनोहरमुनि म.सा.** पधारे थे। मलाड (वेस्ट) मे लींक रोड पर आया लेन्डमार्क होल मे छह सत्र की यह शिबीर का आयोजन किया गया था । मलाड मे पहले सत्र मे **Dr. हेमलताबेन धूत** तथा **पू. चंद्रसेन म.सा.** पधारे थे । हरेक सत्र मे सेवक **नितीनभाई** ने शरीर मैत्री करवाई ।

प.पू. गुरुदेवने प्रभुकृपा के साथ शुरुआत करते हुए मैं कोन हुँ । यहाँ धरती पर क्यों आया हुँ? जैसे प्रश्न करके लोगो को ढ़ंढ़ोला । स्थानकवासी लोग मुहपत्ति क्यों बाँधते है उसका खुलासा देते हुए कहा कि मुहपत्ति यह अहिंसा का प्रतिक है । प.पू. गुरुदेवने स्पष्ट शब्दों में कहते हुए कहा कि ''**प्रमतयोगात प्राणव्यपरोवरम**'' – तत्वार्थसूत्र मे अहिंसा की व्याख्या दी है । भगवान ने खुद की हिंसा न करने पर वजन दिया है । प्रमाद यांने भूल जाना । क्या भूल जाना ? खुद का लक्ष्य....।

नमस्कार महामंत्र की शुरुआत ही 'नमो' भाव से होती है । यहाँ प.पू. गुरुदेवने समझ देते हुए कहा कि हमारे अंदर रहे हुए कुसंस्कारो मे से निकलने का रामबाण इलाज है ''नमस्कार महामंत्र'' । तत्पश्चात् प.पू. गुरुदेवने ''**श्रेष्ठ मंत्र नवकार, सिद्ध मंत्र नवकार....**'' का गीत गुजंन किया ।

पाँच परम तत्व को नमस्कार – हररोज सुबह उठते ही भगवान को अहोभाव से Thank You कहेना, दिल से भगवान के साथ बात करना और उनकी कृपा माँगनी और 'नमो जिणाणं, जिअ भयाणं' की धून करना.... दोनो हाथ ऊपर उठाके प्रभुकृपा का प्रकाश हाथ के सहयोग से सिर से पेट तक ले जाना और जिअ भयाणं कहेते हुए पेट से नीचे की ओर ले जाकर सभी नकारात्मकता को दूर करना.... इस तरह सात से दस मिनीट तक करने से Aura Clean होता है और दिव्यता का संचार होता है । यह Process सभी ने भाव से किया ।

पाँच नमस्कार में पहला नमस्कार अरिहंत परमात्मा को करना जिसने हमे यह मार्ग बताया है । प.पू. गुरुदेवने कहा कि अरिहंत की कृपा से ही हम यहाँ मनुष्य स्टेशन पर आये है । उनके साथ का अनुसंधान ही हमारे लक्ष तक पहुँचायेगा । दुसरा नमस्कार सिध्ध भगवंत को..... जिनका हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है । जिनकी कृपा से ही हम निगोद मे से बाहर निकल सके है । तिसरा नमस्कार सर्व साधु परमात्मा को... जिन्होंने प्रभुने बताया हुआ मार्ग जीवंत रखा है । स्वयं कटीबध्ध है और हमें भी उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते है । चौथा नमस्कार धर्म तत्व को.... Law of Nature को.... धर्मतत्व जो हंमेशा मेरे अस्तित्व को सहायकरुप है । आखिर मे पाँचवा नमस्कार सव्व जीव जीवाणं को.... समग्र जीव सृष्टि का हम पर उपकार है, हमे सहायक है ।

तत्पश्चात पू. गुरुदेवने जीव की गति के बारे मे समझाया । शिबीरार्थीओ के मन मे उठते प्रश्न के निराकरण किये । तिर्यंच गति, नरक गति, देव गति, मनुष्य गति.... इन चारों गति मे एक Common गति ''हेरानगति'' है । प.पू. गुरुदेवने इस हेरानगति मे से मुक्त होने का उपाय बताया ''**बोल मनवा बोल, मुझे नहीं होना परेशान**'' ।

तत्पश्चात मंत्रयोग का विज्ञान समझाया । यह पूरा जगत तरंगमय है । हरेक की Frequency है । तीन ध्वनि वचन, हृदय और ताल एक साथ हो तभी जो तरंग निकलते है तब परिणाम मिलता है । प.पू. गुरुदेवने मीरा का उदाहरण देते हुए कहा कि मीरा कृष्ण भक्त थी । उसने भक्ति की चरमसीमा प्रगट की.... **पायो जी मैने रामरतन धन पायो....** गीत गाया । पू. गुरुदेवने ''**पायो जी मैने नवकार मंत्र धन पायो**'' गीत गुंजन किया ।

योग प्रयोग और उपयोग याने मंत्र योग । जो प्रयोग किया उसका उपयोग करके परिणाम प्रगट करना..... यही मंत्रयोग का मर्म है ।

तत्पश्चात प.पू. गुरुदेवने पाँच व्यवहार के बारे मे समझ दी । पू. मुख्य आर्या झंखनाबाई महासतीजीने पू. गुरुजी को बिरदाते हुए कहा की पू. पंकजभाईने बहोत ही सरलता से नवकार मंत्र का अर्थ समझाया है । उन्होंने पू. गुरुदेव को आर्शिवचन दिये । मलाड मे पू. चंद्रसेनमुनि म.सा. ने पू. गुरुदेव को आर्शिवचन दिये ।

छह सत्र की इस शिबीर मे पू. गुरुदेव के मुख से झरती ''**सीमंधर वाणी**'' सभी का आनंद का अनुभव कराती रही ।

नमो जिणाणं ।

शुभेच्छक : **जिंदगी को समस्या नहीं है जिसे तुम्हे सुलझना है, जिंदगी एक एहसास है जिसे तुम्हे महसूस करना है ।**

Non-Stop 48 Hours भगवान महावीर की अंतिम वाणी की देशना

१आज तक कभी सोचा नही था की एसी भी दिवाली होती है । मुझे बहुत ही अच्छा लगा यहाँ आकर इनके साथ जुड़कर । गुरुजी की वाणी से अच्छी तरह महावीर भगवान की देशना और गौतम स्वामी के बारे मे सूत्र के साथ मतलब का पता चला । जिंदगी मे पहली बार इतना खुलकर सबके सामने Stage Play किया और देशना के बारे में समझ मे आया । धन्यवाद है परम सुख परिवार का और प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई का ।

Hejal J. Rajawat - 9769355275

નમો જિણાણં.

આ શિબીરમાં આવીને ઘણી નવી વસ્તુઓ જાણવા મળી. આ વખતે પહેલી વખત અમે પૂ. ગુરૂજીનું પ્રવચન સાંભળેલું અને અમને જ્ઞાન સાથે ગમ્મત થાય છે. જે અમે જિંદગીમાં સાંભળ્યું નથી, જોયું નથી તેવું અમને સમજવા મળે છે. દાદાના દરબારમાં અમે પૂ. ગુરૂજીની વાણીનું સ્નાન કર્યું. સ્નાન કરવાથી ખબર પડી કર્મ શું છે ? ભગવાનના Swimming Pool માં સ્નાન કરવાથી ખબર પડી પ્રતિક્રમણ શું છે, તપની વ્યાખ્યા શું છે તે ખબર પડી. ઘણો ખુલાસો મળે છે.

અનિલા રાજેશ દોશી - 8879457414

नमो जिणाणं ।

मैं देशना मे आई तो मुझे मेरी जिंदगी मे पहली बार इतना अच्छा लगा कि मुझे जिंदगी बहुत सरल भाव से जीना चाहिये । मैंने कभी भी क्रिया और तप-जप किया नही है । फिर भी मुझे यहाँ आने पर ऐसा अनुभव हुआ कि ये सब मुझे पहले से ही करना चाहिये था । बहुत सरलता से मैं यह 'नमो जिणाणं' कि त्रिपदी करुँगी । मुझे बहुत अच्छा लगा । मैं भी करुँगी और मेरे परिवार और सबको प्रेरीत करुँगी । वीर प्रभुकी वाणी का जीवन चरित्र हमें कैसा जीना वो बहुत ही सरलता से गुरुजीने हमें सिखाया ।

सज्जनबेन कांतीलालजी राजावत - 81004877600

પૂ. ગુરૂજીની વાણી સાંભળીને ઘણું જ સારૂ લાગ્યું, ઘણું જાણવા મળ્યું અને આ સાંભળીને બીજીવાર આવવાના ભાવ જાગૃત થયા છે. અને આશ્ચર્ય એ થયું કે મહાવીર ભગવાનનું નામ નિર્ગ્રંથ જાણીને ઘણું આનંદ થયું. આટલા વર્ષો પછી પ્રભુની 48 કલાકની અંતીમ દેશના સાંભળી નિશ્ચય કર્યો કે જીવનમાં ક્યારે પણ ભય, અહમ્ અને ઈર્ષાને સ્થાન આપવું નહી. વરકાણામાં Trekking કરીને પ્રાકૃતિક આનંદ મળ્યો. 'નમો જિણાણં, જિઅ ભયાણં'ના જાપ કરીને ખૂબ જ મનને શાંતી મળી છે. દર વરસે આ પ્રવાસમાં આવવાની ઈચ્છા થાય છે.

ઈલાબેન દેઢીયા - 9223399369

नमो जिणाणं ।

मैं देशना में पहली बार आई । मुझे वीर प्रभु की दिव्य वाणी जीवन चरित्र की समझ मिली । हमे हमारी जिंदगी कैसे सरलता से जीनी चाहिये और दिये क्यों लगाने चाहिये, दिवाली कैसे मनानी चाहिये वह भी बहुत अच्छी तरह से समझाया गुरुजीने । अंत मे त्रिपदी की धून मैं भी करुँगी और सबको प्रेरित करुँगी ।

घेवरीबेन अशोकजी पोरख - 9967456783

मुझे भगवान की 48 घंटे की देशना सुनने की दो वर्ष से ईच्छा थी जो भगवानने इस वर्ष पूरी की । मुझे विश्वास नहीं था कि मैं लगातार 48 घंटे की देशना इतने आराम से सुन सकुँगी । मुझे खुद को विश्वास नहीं हो रहा है कि मुझे जरा भी थकान महसूस नही हुई । इस संस्था मे भाग लेने के लिये मेरे जीवनसाथी (रमेश ए. मेहता) मुझे कहते रहते थे । मुझे यहाँ का पूरा वातावरण भी बहुत अच्छा लगा । यहाँ के सेवक-सेविका सब बहुत ही Helpful लगे । मुझे लगा है भगवान की 48 घंटे की देशना सुनकर मैं धन्य हो गयी व मेरा जीवन अध्यात्म के Track पर आ गया है ।

श्रीमती मीना रमेश मेहता

जिनमार्ग Trekking (वरकाणा तीर्थ)

પ્રભુજીની અંતીમ દેશના સાંભળીને અમો વરકાણામાં આવીને બીજા દિવસે પદયાત્રા કરીને પ્રાકૃતિક વાતાવરણનો ખૂબ જ આનંદ મળ્યો. સવારે વહેલા ઊઠીને શરીર મૈત્રી કરી ને 'નમો જિણાણં, જિઅ ભયાણં'ના જાપ કરતાં શુધ્ધ વાતાવરણનો આનંદ મળ્યો. સાથે ગુરૂજીની ભક્તિ અને સત્સંગ, સેવકોની સેવા અને પ્રભુકૃપાથી રાજસ્થાનની જાત્રાનો ખૂબ જ આનંદ આવ્યો. પૂ. ગુરૂજીની વાણી સાંભળીને સમજણ આવી કે ક્યારે પણ જીવનમાં ભય, અહમ્, ઈર્ષા અને કષાયને સ્થાન આપશું નહી. આવા મહાવીર મળ્યા, આવો સરળ માર્ગ મળ્યો, માર્ગને સમજાવનાર ગુરૂદેવ મળ્યા, પરમ આનંદ પરિવાર મળ્યો. તેથી આવા પ્રવાસમાં આવવાની ઈચ્છા પ્રગટ થઈ છે.

Meena D. Nagda

અહો આવો અપૂર્વ અવસર મળ્યો. આવો સરળ માર્ગ મળ્યો. મહાવીર નિર્વાણ કલ્યાણક સમજાવનાર પ.પૂ. ગુરૂદેવ મળ્યા. પરમ આનંદ પરિવારના સભ્યો, સેવકો, સત્સંગી મળ્યા. પૂણ્ય યોગે 48 કલાકની ભગવાન મહાવીરની અંતિમ દેશના અને ઉપદેશ જાણે આપણે એમના સાક્ષાત સ્વમુખે સાંભળતા હોઈએ એવી અનુભૂતિ થઈ.

વરકાણામાં ત્રણ દિવસની પદયાત્રાનો અનુભવ, દાદાના દરબારમાં ગુરૂજીની વાણીનું શ્રવણ કરી પદયાત્રામાં દરેક જીવ પશુ, પક્ષી, ઝાડ, પાન, જીવોને એમના સંદેશ પહોંચાડ્યા.

નવકાર મંત્રને સાક્ષાત્ જીવનમાં અપનાવ્યો. માત્ર નવકારનું રટણ નહી, નવકારની અંદર રહેલો આનંદ રસ, નવકારનો સાર છે. મંત્ર ધારણ કરવાનો છે.

શુભેચ્છક :

महान कार्य ताकत से नहीं लगातार लगे रहने से होते है ।

જેમને મળીએ તેમને કહેવાનું 'નમો જિણાણં'. મારે નથી થવું હેરાન, તમે ગમે તેવા ઓ I Love You. આ ત્રણ મંત્ર જીવનમાં ઉતારવા એ મનમાં દૃઢ સંકલ્પ કરી દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર ભાવથી સંયોગ સંજોગે વારંવાર ભાગ લઉં.

મૃદુલાબેન પ્રફુલભાઈ મહેતા - 8690015600

પૂ. ગુરૂદેવની કૃપાથી અમોએ રાજસ્થાનની જાત્રા કરી. મારા પ્રવાસનો અનુભવ છે કે પદયાત્રા કરવાનો ખૂબ જ આનંદ આવ્યો. મહાવીર પ્રભુની દેશના એટલી સરળ હતી તે કલ્પી પણ શકાય નહી. અમને ધર્મની સમજ મળી. અજ્ઞાનતા અને અંધશ્રધ્ધામાંથી અમે બહાર આવ્યા.

મને ત્રણ ચાવી મળી – (1) નમો જિણાણં (2) મારે નથી થવું હેરાન (3) તમે ગમે તેવા હો, I Love you.

પરીવારના સભ્યો, સેવકોનો ભાવવિભોર ઉત્સાહ, આનંદથી સેવા ભાવે સેવા કરવી. આપણે પણ આવી ભાવના ભાવવાથી દિનપ્રતિદિન પૂ. ગુરૂદેવે બતાવેલ માર્ગે ચાલી. જીવનમાં વારે વારે સત્સંગ કરી દિલમાં ઘણો જ આનંદ મળ્યો છે. છેલ્લે જ્ઞાન પૂજન કરીને જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું.

માલતીબેન દિપકભાઈ સૌમ્યા - 0932455526

Trekking यह शब्द काफी बार सुना है और इसका मतलब कुछ और ही समझते थे । पर इसमे जिनमार्ग Trekking एक अनोखी Trekking है । इसमे मैने देखा की हम चलते चलते सभी जीव, वनस्पति, पशु, पक्षी, ब्रह्मांड, धरती सभी से मैत्री करते है । और इस बीच मुझे इसका अनुभव भी हुआ की हम जिस प्रकार अहोभाव से भक्ती करते हुए चल रहे थे तब सभी पशुओं का ध्यान हमारी तरफ था । वो भी इसे मैत्रीभाव से सुन रहे थे । यह देखकर मन बहुत ही खुश हो रहा था । किस तरह हमारा रास्ता सात किलोमीटर तक पार कर लिया पता भी नही चलता । सीमंधर स्वामी और प.पू. गुरुदेव की असीम कृपा से ही यह आसानी से संभव हो सकता है । परम सुख जीवन विकास केन्द्र का बहुत बहुत धन्यवाद ।

Jaipal V. Rajawat - 9224406863

અમે વરકાણાથી તા. 22, 23 અને 24 મી ઓક્ટોબરની ત્રણ દિવસોની Trekking ખૂબજ આનંદપૂર્વક કરી. ત્રણેય દિવસ સવારે નિતીનભાઈએ અમને શરીરમૈત્રી શીખવાડી. ગુરૂજીએ જે ઘોષણા કરવાની હોય તે આનંદ કલ્લોલ સાથે પ્રથમ દિવસે અષ્ટાપદજી દહેરાસર સુધીની સાત કિલોમીટરની છ'રી પાલત યાત્રા કરી. દ્વિતીય દિવસે બીજોવા સુધીની ચાલતાં-ચાલતાં યાત્રા એ જ પ્રમાણે અને ત્રીજે દિવસે વરકાણા દહેરાસરની ધ્વનિ–સૂર અને મંત્રોના ગૂંજન સાથે દાદાઈ ગામે પગપાળા પ્રવાસ કર્યો અને નાચતા–ગાતા ઢોલ–નગારા સાથે ખૂબ જ હર્ષોલ્લાસ સાથે શાંતીનાથ દહેરાસરે પહોંચ્યા. દહેરાસરમાં ગુરૂજીએ ભક્તિ કરાવી. ભક્તિ કરી, નવકારશી કરી અને ત્યારબાદ 'રીવર-વ્યુ' રીસોર્ટ પહોંચી નવકારશી કરી તેમજ તેમના તરફથી સારી એવી અમારી ભક્તિ–સેવા કરી. આ બધા દિવસોમાં શરૂઆતથી એટલે કે હથુંડીથી આ અગિયાર દિવસોની દેશના તથા યાત્રા–ચૈત્ય પરિપાટીમાં શ્રી વિમલચંદજી રાણાવત – શ્રી પોપટલાલજી સોગાણી તથા જયપાલભાઈ અને સોહનલાલજી કોઠારીએ ખૂબજ સાથ–સહકાર અને સેવકોને તથા અમો સર્વે યાત્રિકોને ખૂબ–ખૂબ સંભાળ્યા. એ સર્વેને, આયોજકોને હૃદયથી અનુમોદના.

નમો જિણાણં.

Vinod C. Jhaveri - 9833821104

શ્રી ચૈત્રી નવરાત્રિ આરાધના શ્રી નવપદ સાધના With શ્રી સિધ્ધચક્ર મહાયંત્ર જાપ પૂજન અનુષ્ઠાન

નમો જિણાણં સાથે લખવાનું કે નવરાત્રી શક્તિ આરાધનામાં આવીને ગુરૂજી જે જ્ઞાન આપે છે એ સાંભળીને બહુ જ સારુ લાગે છે અને અંદરથી બહુ જ શાંતિ મળે છે. પ્રભુની કૃપા મળે છે. આવા શ્રી સિધ્ધચક્ર મહાયંત્રનું પૂજન કરવાનો લાભ મળે છે. આવું પુજન તો મેં 1st Time જોયું. યંત્રની સામે બેસીને પૂજન કરતાં કરતાં કાંઈક અલગ જ ફીલીંગ આવે છે. અંદરથી આપણને એકદમ Fresh લાગે છે. જાપ કરવાથી પણ શાંતિ મળે છે. આવા જ્ઞાનની અંદર રહીને હવે જીવન જીવવું હોય તો સરલ લાગે છે. હવે જ્યારે પણ કોઈ જાતની પરેશાની ચિંતા આવે તો પૂ. ગુરૂજીએ જે જ્ઞાન આપ્યું છે એ જ્ઞાનને યાદ કરવાનું અને એ કરવાથી મનને શાંતિ અને આનંદ મળે છે. પરેશાની અને ચિંતામાંથી મુક્ત થઈએ છીએ. હું જ્યારથી નમો જિણાણંમાં આવી ત્યારથી મારી Life માં ઘણું બધું પરિવર્તન થઈ ગયું છે. સવારે ઉઠીને તરત જ પ્રભુકૃપા કરું, પછી નાહીધોઈને દિવાબતી કર્યા પછી સવારની પ્રક્રિયા કરું છું. જાપ પણ કરું છું અને ધૂનો પણ સાંભળું છું. આ બધું કરવાથી Life માં ઘણું બધું Change થઈ ગયું છે. અને જમવા બેસું ત્યારે પણ આહારની સામે જીવો માટે પ્રાર્થના કરું છું. હવે તો ખાલી પાણી પીવા જાઉં તો પણ તરત જ નમો જિણાણં બોલવાનું યાદ આવી જાય. આ બધું કરવાથી લાઈફમાં જીવન જીવવાની મજા આવે છે.

Thank you, God bless you.

જયશ્રી કે. ગાલા - 7045540311

Namo Jinanam.

This is my first time attending Navratri Navpad Aradhna and Dhyan Aradhna. I got training for video shooting here as I was willing to do Seva. I enjoy doing shooting. The aradhna we did here in 15 days was so incredible. I got to learn so much about Navratri & "GARBHA" about which I never had any idea. Now I know the real meaning of Navratri. It is so wonderful experience. As told by Gurdev while returning back to home I continued doing Jaap and it had tremendous change in me and my life. Recently my in family my relative is suffering from decease and had few problems so I did jaap as told by Gurdev and the Result / Impact it had was incredible. Literally it worked as I prayed. The experience is amazing and can't be explained.

Hinal Dedhia - 9819104739

શુભેચ્છક :

तुम अपने जिंदगी के हीरो हो ।

મેં પ્રથમ વખત પુરા ૧૫ દિવસ આરાધના કરી છે. શક્તિ આરાધના શું એ પણ મને ખબર ન હતી. પણ જ્યારે અહીં આવી ત્યારે શક્તિ આરાધના વિષે જે સમજણ મળી ત્યારે ખરેખર બહુ સારું લાગ્યું. આપણી અંદર રહેલ નકારાત્મક વિચાર કેવી રીતે બહાર કાઢવા એ સમજીને બહું સારું લાગ્યું. ગરબાનું મહત્વ પણ સમજાયું અને ત્યારે જ મને નવરાત્રીનો ખરો અર્થ સમજાયો. અને જ્ઞાન આરાધનામાં પણ ઘણું જાણવા મળ્યું. એમાં મારી અંદરનો ભય અને ભયના કારણોનો ખુલાસો પણ મળ્યો. અને કેટલા વખતથી મુંઝવતા પ્રશ્નોના જવાબ મળ્યા. અને મને રોજ શ્રી સિધ્ધચક્ર મહાયંત્ર પૂજનનો પણ લાભ મળતો હતો. પૂજન કરીને મને બહુ સારું લાગ્યું.

Prafula Dedhia - 8879363858

'परम सुख जीवन विकास केन्द्र'की एक नयी सिध्धी – नया अभियान स्कूल/कॉलेज के विद्यार्थीओंकी Special शिबीर रानी गाँव – वरकाणा (राजस्थान)

This foundation motivate students a lot. They give us 3 Mantra to make our day start with laugh, enjoy and always with smile. They tell us about Science of Divne living and also solving students problems related to our studies. The 3 Mantra which they thought us was : It is a wonderful day. Come what way I will enjoy the day in any situation and I will smile. This mantra make us day smiling and enjoyable. This workshop for Paramsukh and also create Awareness between Today's youth.

Pratiksha Raj Champawat - 977297953

First of all I really like the three promise to god that – (self what's app's) Adbudha. I will smile, I will enjoy. Also like blessings from three persons : Froms Mummy, Dady, God, Teacher. The song 'I Love you' I like very much. I really enjoyed this session. I think you have to change your sessions planning you should be also discribed by projector this is easy to understand.

I hope this session will help me in my future.

Himanshi Joshi - 8890953611

नमो जिणाणं ।

मुझे आपकी बातों से खुश रहना, बीना किस कारण वो बात सबसे अच्छी लगी । और सबको प्यार करो, सबको Thank You बोलो जिससे हम पुरे दिन अच्छा महसुस करते है और God को Thank you बोलना सीखा जो पहले नही बोलते थे । Tension free कैसे रहते है वो सीखने को मिला । जीवन में खुशी का कोई कारण नही होता है । जीवन मे ईश्वरने खुश रहने के लिए भेजा है ये बात आपने बताई । Exam, Interview कैसे देना है वो महत्त्वपूर्ण बाते आपसे सीखी और Study का Timetable बनाना चाहिए । Week, Month & Year का । आपने आपका जीवन के अनुभव हमारे साथ बांटा हमें अच्छा लगा । हमने आपसे कुछ अच्छा सीखा ।

Divya Singh Bhati - 9929710328

My experience was very awesome. After this session I had learned many new things. I am feeling so confident by this session. I have learn how to live life strees free and tension free. I had also learn that we ~~should love all without any reason. We should live life with~~ a smile on a face and forget all tension.

Riddhi Choudhary - 9983616182

मुझे आपके द्वारा बताये गये आनंदमय विचार बहुत अच्छे लगे । आपने बताया कि हमें किसी भी परिस्थिती मे परेशान नहीं होना चाहिए और परिस्थिती का सामना Smile कर करना चाहिए । तथा कोई भी कैसा भी हो उसे वैसा ही स्वीकार करना चाहिए ।

Bhagyashree Sisodiya - 9460555681

अनुभव के बारे मे लिखना है तो ये पेज तो काफी नही है लेकिन जैसा की गुरुजी ने कहा संक्षिप्त मे Notes बनाना है । गुरुजीने हमारे मन की भावनाओं को उजागर किया है । उन्होंने हमे यह बताया की भगवान हमेशा हमारे साथ रहते है । कभी किसी से दुश्मनी नहीं करना, दोस्त बनाए तो भी ऐसे की वे सुख मे ही नही दुःख मे भी हमारा साथ दे । माता–पिता से बढ़कर कोई ओर नही होते है । यहाँ तक की ये भी कहा जाता है कि एक बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है । गुरुजी के द्वारा हमने शीखा की हमें कभी मजबूर नहीं होना है हमे अपने आप को इस लायक बनाना है कि दुसरे लोग हमे देखे तो उनके चेहरे पर अपने आप मुस्कुराहट आ जाए और वो हमारा आदर करे ।

लता कुमारी

पंकजभाईने आज बहुत अच्छा ज्ञान दिया है जो हमारे जीवन मे बहुत काम आता है । पंकजभाईने हमारे जीवन से जुड़ी बातो को तथा हमारी परीक्षा से संबंधित जैसे – परीक्षा की तैयारी, परीक्षा मे नंबर लाना, पढ़ाई कैसे करना... परीक्षा के अंत मे कैसे खुश रहना आदि के बारे मे बताया है । यह बात जो हमारे पढ़ाई मे अच्छे अंक लाने का प्रयास बताया है । ऐसी बातो को हम अपने जीवन मे उतारकर मैं भी पंकजभाई जेसा इन्सान बनुँगा । और मैं भी किसी से नाराज नही रहुँगा । मैं भी सबसे अच्छे व्यक्तियों की तरह बनुंगा । मेरा यह वादा है कि जो भी आपने ज्ञान दिया है मैं अपने जीवन मे उतारकर लक्ष्य को प्राप्त करुँगा । धन्यवाद !

Dinesh Kumar - 7231089638

मैने आज अपनी जीवन की ऐसी बातें सुनी जो मेरे लिए अतिआवश्यक है । और यह बातें सुनकर मेरे विचार पहले से बहुत अलग हो गये है । मेरे जीवन की यह सर्वश्रेष्ठ बातें थी । मैं आपको व आपके Group को धन्यवाद करना चाहता हुँ कि आपने हामरे लिए समय निकालकर हमें उज्जवल भविष्य की ओर आगे बढ़ाया । मैं आपसे फिर से एकबार धन्यवाद करना चाहुँगा । I Love you to all of you.

Mahesh Kumar - 9116835562

શુભેચ્છક :

जिंदगी बार बार मौका देती है बस पहचानने की ज़रूरत है ।

1) अरिहंत T.V. CHANNEL (हररोज सुबह 8.20 और रात को 11.40 बजे)

प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई के श्रीमुख से साक्षात अरिहंत परमात्मा, तीर्थंकर परमात्मा की दिव्य वाणी सरल और सचोट शैली मे अनुभव करके आनंद उठाने और जीवन मे अद्भूत परिणाम पाने के लिए देखिए... हररोज सुबह 8.20 बजे तथा रात को 11.40 बजे ।

पुरे भारत मे 3 करोड लोग (जैन–अजैन) लोकल केबल SET TOP BOX, VIDEOCON D2h तथा TATA SKY, AIRTEL के माध्यम से अरिहंत टी.वी. चेनल पर प.पू. गुरुदेव श्री पंकजभाई की वाणी को ग्रहण करके अपने जीवन मे अद्भूत परिणाम प्राप्त कर रहे है ।

हम सभी को इसी तरह यह अमृतरस मिलता रहे, इसके लिए अरिहंत टी.वी. चेनल पर प्रसारित हो रहे इस कार्यक्रम के आप सौजन्य दाता बन सकते है । आप का नाम जितने दिन का सौजन्य होगा उतने दिन प्रसारित किया जाएगा । अवश्य लाभ लें ।

संपर्क : 9322235233 / 9833133266

2) दिव्य जीवन मुक्तिमाला महोत्सव और नए साल का स्वागत तथा उत्तरायण

मकर संक्रांति – अशुभ से शुभ की संक्रांत

ता. 14 जनवरी 2018 रविवार, सुबह 10.00 बजे **स्थल : पार्ला सेन्टर**

गौतम प्रसादी की व्यवस्था रखी गई है । अवश्य सपरिवार लाभ ले ।

3) Divine Life Management Modules Workshop

जनवरी से शुरु होने जा रहे है । **तारीख और स्थल की जानकारी SMS, Whatsapp के माध्यम द्वारा दी जाएगी ।**

4) हिन्दु आध्यात्मिक सेवा संस्थान (HSSF) - 2018

Hindu Spiritual Service Fair - 2018 द्वारा भारत की सारी सेवा संस्थाएँ एक छत के नीचे आकर अपनी सेवाओ का प्रदर्शन करे इस हेतु दो बार आयोजित किया जाता है ।

इस बार यह HSSF का आयोजन जनवरी मे ता. 5, 6, 7, 8 को अहमदाबाद–गुजरात मे तथा ता. 23 से 28 जनवरी चेन्नई में किया गया है । इसबार परम सुख जीवन विकास केन्द्र भी यह दोनो जगह पर अपनी सेवा को प्रदर्शित करेगा ।

5) महाशिवरात्री – जीव से शिव (सिद्ध पद की यात्रा) (मोक्ष यात्रा) – पंचगीनी

ता. 13, 14, 15 फरवरी 2018
Contact : 9833133266 / 9987503512

6) होली – सम्यक् ज्ञान अग्नि महोत्सव

आंतरिक दोषो को दहन करने का पर्व ।

ता. 1 मार्च 2018, गुरुवार **स्थल : मुलुंड समय : शाम 7.00 से 10.30**

7) श्री चैत्री मास नवरात्रि शक्ति आराधना श्री नवपद ज्ञान साधना श्री सिध्धचक्र महायंत्र पूजन अनुष्ठान

(चैत्र सुद 1 से चैत्र सुद 15) 18th March 2018 to 31st Match 2018 समय : शाम 7.00 से 10.00 बजे तक

यह एक अद्भूत और अद्वितीय आराधना साधना है । जिसमे हम शक्ति देवीओं की आराधना करके हमारे अंदर की नकारात्मकता को, अज्ञान को हटाकर साधन, सामग्री, सत्ता और संपत्ति को विशुद्ध करके अवश्य सिद्ध पद को प्राप्त कर सकते है । श्री सिध्धचक्र महायंत्र हमारा और हमारे परिवार का साथीदार है और हमारी हरपल रक्षा करता है । ऐसे दिव्य महाअनुष्ठान का लाभ सहपरिवार, मित्रगण, सगेसंबंधी के साथ अवश्य ले । ऐसे श्री सिध्धचक्र महायंत्र को अपने घर/ऑफिस में अवश्य स्थापित करे ।

શુભેચ્છક : **आपकी जिंदगी में आज का दिन कभी लौटकर नहीं आएगा, जी लो इसे ।**

8) महावीर जन्म कल्याणक – ता. 29 मार्च 2018, गुरुवार

खुद के अंदर महावीर को प्रगट करने का अद्‌भूत अवसर । अस्पताल और आश्रमो में जाकर वात्सल्य भक्ति ।

इस अवसर पर हम अस्पताल और आश्रम में जाकर वहाँ के लोगो के साथ समय बिताते है । उन लोगो के साथ वात्सल्य भक्ति करते है और वहाँ की जरुरियातो के मुताबिक वस्तुओ का दान करते है । ऐसे सुनहरे मौके का अवश्य लाभ ले ।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क – 9869052507, 9322235233

9) श्री सीमंधर स्वामी जन्म कल्याणक – चैत्र वद 10 (10 April, 2018)

समय, स्थल की जानकारी SMS और Whatsapp पर दी जाएगी ।

10) अक्षय तृतीया – ता. 18 April, 2018

इस दिन पू. गुरुदेव के निवास स्थान पर श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिष्ठा की गई थी । यह सुनहरे अवसर पर महासत्संग तथा प्रभुभक्ति का आयोजन हर साल की तरह इस साल भी किया गया है । आप सभी को सहपरिवार हार्दिक आमंत्रण है ।

महासत्संग – दोपहर 2.30 बजे से प्रभुभक्ति योग – शाम 7.30 बजे से (गौतम प्रसादी की व्यवस्था रखी गई है ।)

11) उत्सव सत्संग (समय : शाम 7.00 से 10.30)

अरिहंत मेले में जीवे जीवे अरिहंत नाद गजाने के बाद अब हर घर में, हर जन में अरिहंत नांद गूंजे और सभी प्रभुवत्सल अरिहंत परमात्माने बताए हुए मार्ग पर चले ऐसी दिव्य भावधारा के साथ उत्सव सत्संग ने एक नया स्वरूप धारण किया है । हमारे सभी शिबीरार्थीओ, सत्संगीओ और सेवको और सभी के घर पर उत्सव सत्संग Celebration.

"जीवे जीवे अरिहंत नाद घर घर – जन जन में भगवान महावीर की अंतिम वाणी
श्री उत्तराध्ययन सूत्र श्री कृष्ण वाणी – श्री भगवद्‌गीता और मेरा जीवन"

सोने पे सुहागा... सत्संगीओ के BIRTHDAY और MARRIAGE ANNIVERSARY Celebration, Monthly Theme अनुसार जाप...! सत्संगीओ के जीवन की व्यक्तिगत समस्याओ का पूर्ण रुप से निराकरण...।

आप सभी को ऐसे दिव्य उत्सव सत्संग का लाभ लेने का सप्रेम आमंत्रण...! आइए... हम सब ऐसे दिव्य उत्सव सत्संग का लाभ ले और हमारा, हमारे परिवार का, अड़ोस–पड़ोस का, सगे–संबंधीओ का, मित्रो का... सबका मंगल करे । प्रभु की हाजरी में... प्रभु के साथ जुड़ जाए । आप सभी को ऐसे दिव्य उत्सव सत्संग अपने घर पर करवाने के लिए आमंत्रण है । जिन्हे भी ऐसे दिव्य सत्संग करवाने की भावना हो, अवश्य नीचे दिए हुए Phone पर Contact करे ।

9987503512 / 9820944517 / 9820933647 / 9930765652

11) परम सुख HELPLINE 24 x 7 No. : 09920202756

जीवन की किसी भी समस्या के उपाय के लिए 24 घंटे की HELP LINE सेवा पर सिर्फ एक **Missed Call** करें – **No. 9920202756** तथा **WHATSAPP No. 9920203965.** यह नंबर आप अपने मोबाईल में Save कर लें और अपना नाम, Area और नंबर लिखकर message भेज दे ताकि आप रोज पू. गुरुदेव की दिव्य वाणी Audio और Video स्वरुप मे सुन सकेंगे और आने वाले Programmes के Updates भी आपको मिलते रहेंगे ।

सीमंधर स्वामी की असीम कृपा से बहेती हुई प.पू. गुरुदेव की दिव्य वाणी का लाभ आप
Youtube.com / paramsukhtvnamojinanam तथा
https://www.facebook.com/paramsukhjivanvikaskendra पर भी ले सकते हो ।

VISIT WEBSITE : www.namojinanam.org Twitter : @ namo_jinanam

SCIENTIFIC PRACTICAL DIVINE LIFESTYLE EDUCATIONAL TRAINING

Continue from Magazine 37....

FIVE ENVIRONMENTS AROUND HUMAN BEING :

(1) Family :
   (a) Family with whom human beings live in one house.
   (b) Family with whom human beings work during day for livehood.

(2) Neighbours, Friends & Relatives (3) Society (4) Country (5) World / Universe.

Till now we have seen at micro level how Jiva & Pudgala Paramanu Function & Interact in Ecology. At Macro level we have seen how human beings function with their internal environments and what are their internal environments and what are their surrounding environment by which they get influenced or the influence their environment.

It is here the real Science and Technology of Mahavira comes into play in reference to Ecology and Environment. He gave two very vital knowledge to human kind through these two sutras of Tatvartha Sutra.

(I) परस्परोपग्रह जीवानाम् (Chap V - 21)

(ii) प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा (Chap VII - 13)

The first sutra indicates that Ecology of this world functions through interdependence of one on other lakhs, crores & uncountable number of Jivas. That means each Jiva's existence is dependent on innumerable Jiva's support without which it cannot survive. This is the ultimate reality of existence in this world. This knowledge of reality gives direct & silent message that we have no option but to take care of each other and love each other. If this principle of nature is not honoured than the consequence will be painful, suffering life and may be extinction of existence it self. This is not anybody's belief system but the reality of Science of this Universe and if one does not abide that face it's consequence.

MAHAVIRA'S DEFINITION OF VIOLENCE

The second sutra of Mahavira defines violence in a very unique & scientific way.

It explains violence starts from within i.e. at the most minutest micro level of human being. Non alertness at Chitta level because while explaining 5 Internal environments of human being, it clearly showed if there is lack of alertness at Chitta Level at every breathe taken by human being whatever Udaya Karma fruit emerges, it has to bear the consequence of Udaya karma and that itself is violence. No other factor or external factor is responsible for the consequence of pain & suffering of human being i.e. **unalertness of self, gives pain to self & that is violence.**

TODAY'S SCENERIO OF VIOLENCE

Till now and in today's world we can see each one and everyone pinpoints at others or factors around him for which he has to suffer so instead of elevating each other. We degrade each other and again break the divine principle of first sutra and again make more and more enemies instead of friends and make our situation from bad to worse. This happens between two individuals, between family member, between family members and neighbours, family members and relatives, between two societies, between two countries and so on and so forth. Proliferation of Allegations, Crimes, War, Arms and \ammunitions and more over heat generated due to this crores of human lives are lost. Most surprising factor happening is, it happens or rather happens more in the name of Caste, Creed and religion. Mind you no religion teaches that but still this happens. What is lacking in today's world?

(1) Lack of respect / Love / Care towards each other and each Jiva.
(2) Lack of knowledge of science of interdependence.
(3) Lack of Education on non-violence in Mahavir's way.
(4) Lack of Training on Scientific Living right from Childhood, or from womb of mother.

To be continued.....

SCIENTIFIC PRACTICAL DIVINE LIFESTYLE EDUCATIONAL TRAINING

गतांक से शुरु.....

पाँच Environments इन्सान के आसपास

(1) परिवार

(a) वह परिवार जहाँ मनुष्य घर में अन्य सदस्यों के साथ रहेता है ।

(b) वह परिवार जिसके साथ मनुष्य व्यवसाय करता है ।

(2) अडोसपडोस, मित्रगण, रिश्तेदार

(3) समाज

(4) देश

(5) विश्व

Micro level पर जीव और पुद्गल परमाणु के Function & Interaction Ecology में हमने देखे । Macro level पर बाह्य और आंतरिक वातावरण पर प्रभाव भी हमने देखा ।

भगवान महावीर के दिए हुए दो सूत्र बहुत मायने रखते है यहाँ ।

(I) परस्परोपग्रह जीवानाम् (Chap V - 21)

(ii) प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा (Chap VII - 13)

पहेला सूत्र दर्शाता है कि जगत के सभी जीव एक दूसरे पर, करोड़ो जीवो पर निर्भर है । दूसरे जीवों के बिना वह जी नहीं सकते । यह जग की सबसे बड़ी सच्चाई है । और हमारे लिए एक Silent Message है, एक दूसरे की Care और प्रेम बाँटने का । यद्यपि हम यह कुदरती कानून का उल्लंघन करते है तो इसके परिणाम बहुत ही वेदनीय और दुःखदायी हो सकते है, Probably विश्व itself का अंत । यह कोई मान्यता नहीं है लेकिन विश्व का विज्ञान है ।

हिंसा की परिभाषा महावीरने दूसरे सूत्र में बहुत ही Unique और वैज्ञानिक तरह से बताई है । हिंसा सबसे पहेले हमारे अंदर शुरु होती है । यह (Micro) सूक्ष्म Level है । चित्त की अजागृति से हर साँस के साथ उदय कर्म के Consequences हमें उठाने होंगे, जो स्वयं में हिंसा है । कोई बाहरी Factor responsible नहीं है हमारे दर्द और हैरानी का । स्वयं की अजागृति ही हमें दर्द और हैरानी देती है ।

हिंसा का आज का दृश्य

हम सब दूसरों को जिम्मेदार ठहेराते है अपनी परेशानी के लिए । एक दूसरे को नीचा दिखाकर हम पहेले सूत्र के दिव्य Principle (नियम) का उल्लंघन करते है और ज्यादा से ज्यादा शत्रु बनाते है । इससे मामला ओर भी बिगड़ता है । यह पहेले दो व्यक्तियों मे, फिर परिवार मे, सदस्यों मे, परिवार और पडोसियोंमे, परिवार एवं रिश्तेदारों मे, दो समाजो मे, दो प्रांतो मे और आगे इसी तरह बात बढ़ती है । Allegation, Crimes, War, Arms, Ammunitions से लेकर बात जान खोने तक पहुँच जाती है । चकित करने वाली बात तो यह है कि यह हिंसा जाति और धर्म को लेकर शुरु होती है । कोई धर्म, हिंसा, नफरत नहीं सिखाता फिरभी यह हो रहा है । तो, क्या खूट रहा है ?

(1) आदर / प्रेम / जतना की कमी स्वयं एवं दूसरों के लिए ।

(2) एक दूसरे पर निरभरता के ज्ञान की कमी ।

(3) महावीर के बताए हुए अहिंसा मार्ग के संस्कार की कमी ।

(4) संस्करीकरण की कमी । Childhood, माता के गर्भ से लेकर दिव्य जीवनशैली की, वैज्ञानिक Training की कमी ।

To be continued.....

■

१. कार्य की उत्पत्ति कहाँ से होती है ?

ज. कर्म कि उत्पत्ति ब्रह्माजी से होती है । और ब्रह्माजी अक्षर तत्व से व्यक्त होते है । कर्म की उत्पत्ति कहाँ से होती है ? ब्रह्माजी से होती है । सर्जन शक्ति सृष्टि का सर्जन मैं खुद करता हुँ मतलब वहाँ कोई उपर बैठे एसे नही करते है । वो ही बात यहाँ बताना चाहते है । कोई उपर बेठे हुए कुछ नही करता । यह में खुद करता हुँ । यह सृष्टि मे जितने जीव है वोही करते है सर्जन वो ही ब्रह्म स्वरुप है । मतलब ब्रह्म की उत्पत्ति ब्रह्माजी से होती है और ब्रह्माजी अक्षर तत्व से व्यक्त होते है । क्षर मतलब क्या ? खतम होना । अक्षर याने क्या ? जो कभी भी खतम ना हो उसीका नाम अक्षर । उसमे से कौन उत्पन्न होता है ? ब्रह्म तत्व । यानी कहना क्या चाहते है की, यह सृष्टि मे कुछ खतम होता ही नही है । क्षर कुछ नही होता है, Transform होता है । तुझे क्या करना है? Transformation करना है । कीस का? पाप में से यज्ञ का Transformation. तेरी वृत्ति जो है जो हरबार खुद के लिये इस्तमाल करते हो उसके बदले यह प्रभु स्वरुप जगत जो है । दुसरो के लिए नही खुद के लिये लेकिन ब्रह्म की भक्ति करते हुए इस्तमाल करना । इसीका नाम यज्ञ । यज्ञ मुझे खुदके लिए ही करना है । परंतु उसका माध्यम किसको बनाना है । इस जगत को । यह जगत कौन है ? यह ब्रह्म स्वरुप है । प्रभु स्वरुप है । ईश्वर स्वरुप है । यानी यह ईश्वर की सेवा की तो यज्ञ मैंने किया और कार्य मेरा हुआ । समझ में आया ?

२. जिन भाषा में कर्म योग यांने क्या ?

ज. सर्वव्यापी ब्रह्म सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है । यानी ब्रह्म सर्वव्यापी है । सर्वव्यापी मतलब हरेक पदार्थ में मिलेंगे ब्रह्म । क्योंकि यह सृष्टि में जो कुछ भी है वह सब ब्रह्म स्वरुप ही है । व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिती और परमाणु इन सबमें ब्रह्म है । ब्रह्म याने क्या ? प्रभु तत्व.... व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिती सबमें प्रभु तत्व है । और इस प्रकार तेरा दर्शन विशुध्ध करेगा तु । और इस प्रकार सम्यक् परिणाम करेगा तु । अब मैं जिनपरिभाषा बोल रहा हुँ । उसीका नाम कर्मयोग । 'नमो जिणाणं' यानी क्या ? मैंने ब्रह्म का स्वीकार किया, ब्रह्म स्वरुप का स्वीकार किया । यह 'नमो जिणाणं' यानी क्या? ब्रह्म स्वरुप का स्वीकार । यह परम तत्व का स्वीकार हरेक जीव में, या अजीव में, या परिस्थिती में, उसका स्वीकार किया, परमाणु में भी उसका स्वीकार किया । परमाणु में हाजिर नही है पर परमाणु कभी भी अकेले रहेते नही है जीव के साथ जुड़े हुए ही रहते है । और प्रभु तत्व बीना ये परमाणु भी कहीं नही मिलेंगे। यानी ब्रह्म सर्वव्यापी है । बस उसीका स्वीकार कर । उसे प्रतिष्ठित कर । यही यज्ञ है । उसी प्रकार उसके साथ वर्तन कर, उसी प्रकार उसके साथ कर्म कर, कार्य कर उसीका नाम 'कर्मयोग' ।

३. क्या यज्ञ याने समर्पण ?

ज. हा... Absolutely हा.... सतत नमन । अब ये नमन भाव निकल गया, अब तो सीधा समर्पण भाव आ गया । यज्ञ याने समर्पण आ गया । Third Stage आ गया । नमन ये साधारण भाव है । शरण ये साधारण से थोड़ा आगे है । और समर्पण अब यज्ञ यानी समर्पण भाव । सर्वव्यापी को मैं समर्पित हुँ that is यज्ञ । यज्ञ is action. Now I am devoted. Action of devotion to that सर्वव्यापी ब्रह्म स्वरुप, जिन स्वरुप, प्रभु स्वरुप । अर्थात् मैं कुछ मेरे लिये करता ही नही, मैं ऐसा ब्रह्म के लिए ही करता हुँ । और उससे ही मेरा पोषण Automatic होता है । क्यूंकी मैं भी उस ब्रह्म का एक अंश हुँ । मैं ब्रह्म का अंश हुँ तो मेरा रोल है ब्रह्म की सेवा करना, ओर कुछ नही । और रोज सुबह यह ही प्रभु से कहना की आज का पूरा दिन ऐसी सेवा देना, ऐसा सेवा का मौका देना हं... । और कहीं फिरसे बुद्धि चली जाये, ऐसा कुछ भी गलत बोल दे, उसमे ही मुझे जागृत रखना । हा.... यह तो बहोत सरल है, आसान है झट से सरक जायेंगे । ख्याल कहाँ से कहाँ गया गये कामसे । पुरा मेने अभी बताया ना दृष्टांत । क्या बताया ? इतनी अच्छी भेलपूरी खिलाके सब को खुश किया है । और एक शब्द पडा कान पर एक कटाक्ष का, तो पूरा दिल जलने लगा । सत्संग मे जीव लगे ही नही । उसने क्यूँ ऐसा किया ? उसने क्यूँ ऐसा बोला ? आये यहाँ सत्संग में, सत्संग Side पर अपने अंदर जलन शुरु हो जायेगी । पूरी रामायण खतम हो गई बादमें (हा... हा... हा.....) किससे बचना है तुम्हे ? यह बचने का धंधा आये ही नही इस लिए यहाँ पर बचने की बात ऐसा ना करे, ऐसी बात नही बतायी । ऐसा कर ये बात बतायी है । और बचने की बात ही कहाँ आयी ? विचलित होता है ना । हाँ, तो तुरंत याद दिलाना यह देख ये प्रभु के लिए भक्ति मेरा लक्ष कहाँ था ? मैंने भक्ति की, ये जीव को असाता हुई, जो कोई भी जीव को असाता हुई, बराबर है ? तो, उसे जो Solve कर सकते है । तो उन्हें बैठके, बुलायें । हमारी कुछ क्षति हो तो बतायें, Improve करेंगे । आपको कोई तकलिफ हुई ? आपके पास कोई Suggestion है ? कुछ Better है। Please give or join us. We will be very happy. बात खतम । उसमें इतना सारा जी जलाने का क्या था ? ये हम क्या करते है की राई का पर्बत बनाते है । वात क्या थी? एक राई जितनी और पर्वत कैसा बनाया? (ओ...हो...हो...) अंदर वायुसेना चले । ऐसा बोला, ऐसा करते नही है। आके तुरंत ही, जब भी आये तब ऐसा ही सब करते रहे । दस आदमीओं के कान में ऐसा डाले, अपने Against में सब फिराये । ऐसा करे, वैसा करे । कितने सारे खयाल और वापस घर जाये तो घरमें पूरी रात यही चलता रहे । सो नही शकता । गये थे किस लिए ? Celebration सत्संग और जगा क्या अंदर ? जलन । समझ रहे हो बात ?

શુભેચ્છક :

काम में कमी निकालने से ज्यादा जरुरी है उसे कर देना ।

૧. કાર્યની ઉત્પત્તિ ક્યાંથી થાય છે ?

જ. કર્મની ઉત્પત્તિ બ્રહ્માજીથી થાય છે અને બ્રહ્માજી અક્ષર તત્વથી વ્યક્ત થાય છે. કર્મની ઉત્પત્તિ ક્યાંથી થાય છે ? બ્રહ્માજીથી થાય છે. સર્જન શક્તિ, સૃષ્ટિનું સર્જન હું પોતે કરું છું એટલે ત્યાં કોઈ ઉપર બેઠેલો નથી કરતો. એ જ અહીંયા કહેવા માંગે છે. કોઈ ઉપર બેઠેલો કાંઈ નથી કરતો. આ હું પોતે કરું છું. આ સૃષ્ટિમાં જેટલા જીવો છે ને એ જ કરે છે. સર્જન એ જ બ્રહ્મ સ્વરૂપ છે એટલે કર્મની ઉત્પત્તિ બ્રહ્માજીથી થાય છે અને બ્રહ્માજી અક્ષર તત્વથી વ્યક્ત થાય છે. ક્ષર એટલે શું ? ખતમ થવું. અક્ષર એટલે શું ? જે ક્યારે ખતમ ન થાય એનું નામ અક્ષર. એમાંથી કોણ ઉત્પન્ન થાય છે ? બ્રહ્મ તત્વ. એટલે કહેવા શું માંગે છે ? કહે છે કે આ સૃષ્ટિમાં કાંઈ ખતમ થતું જ નથી. ક્ષર કાંઈ નથી થતું Transform થાય છે. એટલે તારે શું કરવાનું છે ? કે Transformation કરવાનું છે. શેનું ? પાપમાંથી યજ્ઞનું Transformation. તારી વૃત્તિ જે છે જે વારેઘડીયે પોતા માટે વપરાય છે એની જગ્યાએ આ પ્રભુ સ્વરૂપ જગત જે છે બીજા માટે નહી પોતા જ માટે પણ બ્રહ્મની ભક્તિ કરતા કરતા વાપરવું એનું નામ યજ્ઞ. યજ્ઞ મારે પોતા માટે જ કરવાનો છે પણ એનું માધ્યમ કોને બનાવવાનું છે ? આ જગતને. તો આ જગત કોણ છે ? બ્રહ્મ સ્વરૂપ છે, પ્રભુ સ્વરૂપ છે, ઈશ્વર સ્વરૂપ છે. એટલે આ ઈશ્વરની સેવા કરી તો યજ્ઞ મેં કર્યો અને કાર્ય મારું થયું. સમજાય છે.

૨. જિન ભાષામાં કર્મયોગ એટલે શું ?

જ. સર્વવ્યાપી બ્રહ્મ સદાયે યજ્ઞમાં પ્રતિષ્ઠિત છે. એટલે બ્રહ્મ સર્વવ્યાપી છે. સર્વવ્યાપી એટલે દરેક પદાર્થમાં મળશે તને બ્રહ્મ કારણકે આ સૃષ્ટિમાં જે કંઈપણ છે બધું બ્રહ્મ સ્વરૂપ જ છે. વ્યક્તિ, વસ્તુ, પરિસ્થિતી ને પરમાણું આ બધામાં બ્રહ્મ છે. બ્રહ્મ એટલે શું ? પ્રભુ તત્વ. હં....! વ્યક્તિ, વસ્તુ, પરિસ્થિતી બધામાં પ્રભુ તત્વ છે. અને એ રીતે તારુ દર્શન વિશુધ્ધ કરીશ તુ, અને એ રીતે સમ્યક્ પરિણામ કરીશ તુ. હવે જિન પરિભાષા બોલું છું એનું જ નામ 'કર્મયોગ'. 'નમો જિણાણં' એટલે શું ? મેં બ્રહ્મનો સ્વીકાર કર્યો. બ્રહ્મ સ્વરૂપનો સ્વીકાર એ પરમ તત્વનો સ્વીકાર. દરેક જીવમાં કે અજીવમાં કે પરિસ્થિતીમાં તએનો સ્વીકાર કર્યો. પરમાણુમાં પણ એનો સ્વીકાર કર્યો. પરમાણુમાં હાજર નથી પણ પરમાણુ કોઈ દિ એકલા રહેતા નથી. એ જીવની સાથે જોડાયેલા જ હોય છે ને પ્રભુ તત્વ વગર આ પરમાણું પણ ક્યાંય નહી મળે એટલે બ્રહ્મ સર્વવ્યાપી છે. બસ, એનો સ્વીકાર કર એને પ્રતિષ્ઠીત કર. આ જ યજ્ઞ છે એ જ એ રીતે એની સાથે વરત, એ રીતે એની સાથે કર્મ કર, કાર્ય કર એનું નામ 'કર્મયોગ'.

૩. શું યજ્ઞ એટલે સમર્પણ ?

જ. હા.... Absolutely હા. સતત નમન. હવે એ નમન ભાવ નીકળી ગયો. યજ્ઞ એટલે સમર્પણ આવી ગયું. Third Stage આવી ગયું. નમન એ સાધારણ ભાવ છે. શરણ એ સાધારણથી થોડુંક આગળ છે અને સમર્પણ. હવે યજ્ઞ એટલે સમર્પણ ભાવ. સર્વવ્યાપીને હું સમર્પિત છું. That is યજ્ઞ. યજ્ઞ is action. Now I am devoted. Action of devotion to that. સર્વવ્યાપી બ્રહ્મ સ્વરૂપ, જિન સ્વરૂપ, પ્રભુ સ્વરૂપ એટલે હું કંઈ મારા માટે કરતો જ નથી. હું એવું બ્રહ્મ માટે જ કરું છું અને એનાથી મારું પોષણ Automatic થાય છે કારણકે હું પણ એ બ્રહ્મનો એક અંશ છું. હું બ્રહ્મનો અંશ છું તો મારો રોલ છે બ્રહ્મની સેવા કરવી. બીજુ કાંઈ નથી. અને રોજ સવારના આ જ પ્રભુને કહેવાનું કે આજનો આખો દિવસ એવી સેવા આપજે, એવી સેવાનો મોકો આપજે, હં... એવો મોકો આપજે હેં... અને જાગૃતિ રહે એવો અને ક્યાંક પાછી બુદ્ધિ હાલી જાય. પાછુ આમ આડુઅવળુ બોલાઈ જાય કે વિચાર થઈ જાય એમાં જ મને જાગૃતિ રાખજે, જાગૃત રાખજે. હા... આ તો બહુ સરળ છે, સહેલુ છે ફટાક કરીને સરકી જવાય. વિચાર ક્યાંથી ક્યાં ગયો. ગયા કામથી. આખુ મેં હમણા બતાવ્યુંને દાખલો શું બતાવ્યો ? આટલી ભેલપુરી સરસ મઝાની ખવડાવીને બધાને ખુશ કર્યા હેં... અને એક શબ્દ પડ્યો કાન પર, એક કટાક્ષનો. તો આખુ બધુ હૃદય બળવા માંડ્યું. સત્સંગમાં જીવ લાગે જ નહી. આને કેમ આમ કર્યું ? આને કેમ એમ કીધું ? આને કેમ આમ કર્યું ? આવો અહીંયા સત્સંગ Side પર આપણા અંદરનો (હા... હા... હા....) જલન શરૂ થઈ જાય. આખી રામાયણ પતી ગઈ પછી કે (હા...હા...હા....) શેમાંથી બચવું છે તમારે ? આ બચવાનો ધંધો જ આવે નહી એટલે અહીંયા બચવાની વાત આમ ન કરે એમ વાત નથી કરી. આમ કર એમ વાત કરી છે ને બચવાની ક્યાં વાત આવી ? વિચલીત થાય છે ને ? હા એટલે તરત યાદ દેવડાવાનું આ જો આ પ્રભુ પ્રત્યેની ભક્તિ મારો લક્ષણ, મારું લક્ષ ક્યાં હતું ? રાખવાનું છે ? મેં ભક્તિ કરી, એ જીવને અસાતા થઈ, જે કોઈપણ જીવને અસાતા થઈ બરાબર છે. તો એને જો Solve કરી શકાય તો એને બેસીને બોલાવો. અમારી કાંઈ ક્ષતિ હોય તો જણાવો. Improve કરશું. તમને કાંઈ તકલીફ થઈ. તમારી પાસે Suggesion છે ? કાંઈ Better છે. Please give or join us. We will be very happy. પતી ગઈ વાત. એમાં આટલુ બધુ બાળવાનું શું હતું. આ આપણે શું કરીએ છીએ કે રાઈનો પહાડ બનાવીએ છીએ. વાત શું હતી ? એક રાઈ જેટલી. એનો પહાડ કેવો બનાવ્યો (ઓ...હો...હો...) અંદર વાયુસેના ચાલે. આમ કીધું આમ કરતા નથી, આવે ત્યારે જ જ્યારે આવે ત્યારે આવુ જ બધું કર્યા કરે, દસ માણસના કાનમાં આવુ નાખે. આપણી Against માં બધું ફેરવે. આમ કરે, તેમ કરે. કેટલા બધા વિચાર અને પાછા ઘરે જાય ને ઘરમાંય આખી રાત આ જ ચાલે. સુઈ નથી શકતો. ગયા શેના માટે ? Celebration સત્સંગને જાગ્યું શું અંદર ? બળતરા. સમજાય છે વાત ?

■

गतांक से चालु....

आगे की बात क्या है ? तो वह यह है कि यह सृष्टि कैसे चलती है ? क्योंकि मैं भी इस सृष्टि का अंश हूँ । तो यह सृष्टि किस तरह चलती है ? किस आधार पर चलती है ? उसके नियम क्या है ? उसका सनातन नियम क्या है ? यह सृष्टि जो है वह Scientific है और इस ब्रम्हाण्ड के नियम है वह Fix है । यह राम, गौतम, कृष्ण, महावीर किसी की भी हैसीयत नहीं है कि इसे बदल सके । इसलिए इस भूमिका में एक मानव है किन्तु He is within boundries of cosmic law. इस Cosmic law के अंदर जो कुछ भी है वह यह है तो कृष्ण, महावीर, गौतम यह सब कौन है ? इसमे वह लोग है जिसने पुरे Universe को जाना और स्वयं को उस तरह से अनुकुल बना दिया कि जिसे कोई हरा नही सकता । इसलिए कृष्ण को हम पुरुषोत्तम कहते है । महावीर को हम तीर्थंकर कहते है और गौतम को हम बुद्ध कहते है । वे बुद्ध किस तरह हुए कारण कि इस सृष्टि मे कोई एक नियम ऐसा नही है जो उसे अटका सके । पुरुषोत्तम को पुरुषोत्तम किस लिए कहा गया क्योंकि उन्होंने संपूर्ण सृष्टि के नियम को पचा लीया । यह जो तय करता है वह यह कर सकता है । महावीर, महावीर किस तरह बने ? Same यह कैवल्य क्या है ? कैवल्य यह स्वयं का अवस्थान है, Completeness है । इस Completeness का नाम है कैवल्य । यह कैवल्य की बात गीता मे भी मिलेगी योग के स्वरुप मे । हम अर्जुन किस लिए बने है ? ऐसे Complete भगवान बनने के लिए । भगवान हमेशा Complete ही होते है । भगवान शब्द का क्या अर्थ है, मालुम है ? भगवान बनने के लिए तो निकल पड़े । भगवद् गीता सुनने के लिए भी बैठ गए किन्तु भगवान यांने क्या ? अब आप अर्जुन तो बन गए हो किन्तु भगवान यांने क्या ? ईश्वर यांने क्या ? परमात्मा यांने क्या ? यह सब एक है या अलग ?

एक स्वरुप को विध विध रुप से प्रगट करने की प्रक्रिया है क्योंकि हम अपने दृष्टिकोण से इस अनंत को समझ नहीं पायेंगे । अनंत को समझने के लिए अनंत दृष्टिकोण लगेंगे । इसलिए कम से कम चार दृष्टिकोण तो ले भगवान को समझने के लिए । यांने भगवान यह एक तत्व है, कोई हस्ती नही है । Physical व्यक्ति नहीं है जीस तरह हम है । मैं और आप है इस तरह कोई व्यक्ति नही है यह एक तत्व है । तो तत्व को जानना है हमे । उस तत्व को जानना है तो माध्यम क्या है ? शब्द । तो इस शब्दों से वर्णन करने से थोड़ा बहुत हमारी समझ में आ सकता है क्योंकि भगवद् गीता मे इन शब्दों के साथ हमारी लेन-देन होने वाली है । श्लोक मे आएंगे तब समझ मे नही आएंगे इसलिए हम पहले समझ लेते है क्योंकि हम श्लोकबद्ध जायेंगे । एक एक श्लोक मठराते (समझते) मठारते 700 श्लोक तक पहुँचना है । तैयारी है न आपकी ? तो भगवान, ईश्वर और परमात्मा यह तीनो एक है या अलग । एक ही स्वरुप का अलग अलग दर्शन है, स्वरुप तो एक ही है । चलो, पहले ईश्वर लेते है । ईश्वर यांने ई श्वर मेरे अंदर का जो स्वर है वही सबके अंदर है । है के नहीं ? यांने मेरे अंदर जो तत्व है, शुद्ध स्वरुप का जो तत्व है वह सबके अंदर है । है कि नही ? वास्तव मे हम एक दुसरे के साथ जुड़े हुए है । हम यह समझते है कि We are all Independent but we are not independent. यही बात भगवान महावीर ने कही है 'परस्परोपग्रहजीवानाम्' कृष्ण भी यही बाते कर रहे है । आयेगी सब बातें आयेगी । किन्तु इस समय हम भूमिका तैयार कर रहे है इसमे ईश्वर क्या है ? भगवान क्या है ? और परमात्मा क्या है ? यांने ईश्वर यह Common स्वर है । यह समस्त जीव सृष्टि के अंदर है और इस जीव सृष्टि के अंदर जो शुद्धपना है तुम्हारे अंदर, मेरे अंदर, सौ जीव सृष्टि के अंदर है । अब जीव किसे कहेंगे ? ईश्वर की बात की तो जीव की बात आयी क्योंकि जीव के अंदर स्वर है । और यह Common है । यह शुद्ध परिणामी है । कैसा है शुद्ध परिणामी है । इसमे कोई Impurity नही है । मेरे और तुम्हारे अंदर Purity है इसलिए हम बार-बार अभी भले Impure है किन्तु हमारा आकर्षण किस तरफ है ? Purity की ओर जाने और अनजाने मे । आप इस भगवद् गीता के पारायण मे क्यों आए हो क्योंकि तुम्हारे अंदर का ईश्वर तत्व यह तुम्हे यहाँ लेकर आया है इस तरह है यह । आपकी अंदर जागृति प्रकट हो चुकी है दुसरों के अंदर नही हुई है । और यह प्रकट हो चुकी है इसलिए आपकी शोध तीव्र है । यह तीव्रता आपको यहाँ लेकर आई है । यांने यहाँ कौन लेकर आया है ? अंदर का ईश्वरतत्व शुद्धात्म स्वरुप यही ईश्वर है । आत्मा यह अशुद्ध है यह अर्जुन है । मैने कहा न अर्जुन का अर्थ क्या है ? आत्मा किन्तु ईश्वर का अर्थ शुद्धात्मा । अब भगवान की बात, कृष्ण की बात । भगवान के अंदर कृष्ण आ जाते है । भगवान के अंदर महावीर आ जाते है । कृष्ण, महावीर, गौतम बुद्ध यह सब भगवान है । किस तरह भगवान है ? भगवान यांने क्या ? भग यांने गुण, वान यांने वाला अर्थात् गुणवाला । कितना सरल है फिर भी हम भटक रहे है । जिसके अंदर सद्गुणों का समुह, भंडार जमा हुआ है उसके अंदर उसका नाम भगवान । तो ऐसा कौन सा सद्गुण, ऐसे कौन से विशेष गुण उसके अंदर है ?

श्री और ऐश्वर्य होता है । भगवान के अंदर यह दोनो तो होता ही है । ऐश्वर्य (ठाठमाठ), ऐश्वर्य शौर्य नही, शौर्य यांने दुसरे पर हावी होना । ऐश्वर्य यांने हावी होने का कोई भाव नही है । अंदर से उसे देखो जिससे लोगो का आकर्षण Natural हो । उसका स्वरुप नहीं । कृष्ण कैसे थे ? काले कलुटे फिर भी लोग उनके पीछे पागल थे । किसलिए पागल थे क्योंकि अंदर के ऐश्वर्य के कारण । बहुत से बार आपने भी देखा होगा आपके आजुबाजु दिखने मे कदरुपे होते है किन्तु लोग उसके पीछे पागल होते है तो वह क्या है ? उसके अंदर का ऐश्वर्य तत्व है जो लोगो का आकर्षण करता है । यांने श्री हो, ऐश्वर्य हो, ज्ञान हो, कैवल्य ज्ञान, केवल ज्ञान, Complete ज्ञान, Complete Scientist.

To be continued...

ગતાંકથી ચાલુ....

આગળની વાત શું છે તો કે આ સૃષ્ટિ કેમ ચાલે છે. કારણકે હું પણ આખી સૃષ્ટિનો અંશ છું. તો આ સૃષ્ટિ કઈ રીતે ચાલે છે. કયા આધારે ચાલે છે. એનો નિયમ શું છે? એનો સનાતન નિયમ શું છે? આ સૃષ્ટિ જે છે તે Scientifc છે અને આ બ્રહ્માંડના જે નિયમો છે એ fix છે. એ રામ, ગૌતમ, ક્રિષ્ણ, મહાવીર કોઈની હેસિયત નથી કે એને બદલી શકે. એટલે આ ભૂમિકામાં એક માનવ છે પણ He is within boundries of cosmic law. એ Cosmic law ની અંદર જે કંઈ પણ છે એ ઈ છે તો ક્રિષ્ણ, મહાવીર, ગૌતમ આ બધા કોણ છે? એની અંદર એ લોકો એ છે જેની અંદર આખા Universe ને જાણ્યુ અને પોતાને એ રીતે અનુકૂળ બનાવી દીધા કે જેને કોઈ હરાવી શકે નહી. એટલે ક્રિષ્ણને આપણે પુરૂષોત્તમ કહીએ છીએ. મહાવીરને આપણે તીર્થંકર કહીએ છીએ અને ગૌતમને આપણે બુધ્ધ કહીએ છીએ. એ બુધ્ધ કઈ રીતે થયા કારણકે આ સૃષ્ટિમાં કોઈ એક એવો નિયમ નથી જે એને અટકાવી શકે. પુરૂષોત્તમને પુરૂષોત્તમ શા માટે કીધા કારણકે તેમણે આખી સૃષ્ટિના નિયમોને પચાવી લીધા. એ જે ધારે એ કરી શકે. મહાવીર, મહાવીર કેવી રીતે બન્યા? Same. એ કૈવલ્ય શું છે? કૈવલ્ય એ પોતાનું અવસ્થાન છે. Completeness છે. એ Completeness નું નામ છે કૈવલ્ય. આ કૈવલ્યની વાત ગીતમાં પણ મળશે યોગના સ્વરૂપમાં. તો આ Completeness આપણે અર્જુન શા માટે બન્યા છીએ. આવા Complete ભગવાન બનવા માટે ભગવાન હંમેશા Complete જ હોય. ભગવાન શબ્દનો અર્થ શું છે ખબર છે? ભગવાન બનવા તો નીકળી ગયા. ભગવદ્ ગીતા સાંભળવા બેસી ગયા પણ ભગવાન એટલે શું? હવ તમે અર્જુન તો બની ગયા છો. પણ ભગવાન એટલે શું? ઈશ્વર એટલે શું? પરમાત્મા એટલે શું? આ બધુ એક છે કે અલગ?

એક જ સ્વરૂપે વિધ વિધ રૂપે પ્રગટ કરવાની આ પ્રક્રિયા છે કારણકે આપણે આપણા દ્રષ્ટિકોણથી આ અનંતને સમજી નહી શકીએ. અનંતને સમજવા માટે અનંત દ્રષ્ટિકોણ જોશે. એટલે કમ સે કમ ચાર દ્રષ્ટિકોણ તો લઈએ ભગવાનને સમજવા માટે ! એટલે ભગવાન ઈ એક તત્વ છે, કોઈ હસ્તી નથી. Physical વ્યક્તિ નથી જેમ આપણે છીએ. હું અને તમે છીએ એવી રીતે કોઈ વ્યક્તિ નથી. એ એક તત્વ છે. તો તત્વને જાણવુ છે આપણે. તે તત્વને જાણવુ હોય તો માધ્યમ શું છે? શબ્દો. તો એ શબ્દોથી વર્ણન કરવાથી થોડું ઘણું આપણી સમજમાં આવી શકે કારણકે ભગવદ્ ગીતામાં આ શબ્દો સાથે આપણી લેવડદેવડ થવાની છે. શ્લોકોમાં આવશે ત્યારે નહી સમજાય એટલે આપણે પહેલા સમજી લઈએ. કારણકે આપણે શ્લોક બધ્ધ જશુ. એક એક શ્લોકને મઠારતા, મઠારતા. 700 શ્લોક સુધી પહોંચવાનું છે. તૈયાર છો ને બધા. તો ભગવાન, ઈશ્વર અને પરમાત્મા આ ત્રણ એક છે કે અલગ. એકજ સ્વરૂપનું અલગ દર્શન છે. સ્વરૂપ તો એકજ છે. પહેલા આપણે ભગવાન લઈએ ચલો ઈશ્વર લઈએ. ઈશ્વર એટલે ઈશ્વર. મારી અંદરનો જે સ્વર છે એ સૌની અંદર છે કે નહી? એટલે કે મારી અંદર જે તત્વ છે, શુધ્ધ સ્વરૂપનું જે તત્વ છે એ સૌની અંદર છે કે નહી? આપણે ખરેખર એકબીજા સાથે જોડાયેલા છીએ. આપણે એમ સમજીએ છીએ કે We are all independent. We are not independant. એટલે ભગવાન મહાવીરે પણ આ વાત કહી. 'પરસ્પરોપગ્રહજીવાનમ્'. ક્રિષ્ણ પણ આ જ વાતો કરે છે. આવશે બધી વાતો આવશે. પણ અત્યારના આપણે ભૂમિકા તૈયાર કરી રહ્યા છીએ એની અંદર આ ઈશ્વર શું છે, ભગવાન શું છે, અને પરમાત્મા શું છે. એટલે ઈશ્વર એ Common સ્વર છે. એ સમસ્ત જીવસૃષ્ટિની અંદર છે અને ઈ જીવસૃષ્ટિની અંદર જે શુધ્ધપણું છે. તમારી અંદર, મારી અંદર સૌ જીવની અંદર. હવે જીવ કોને કહેવો? ઈશ્વરની વાત આવી તો જીવની વાત આવી. કારણકે જીવની અંદર સ્વર છે. અને ઈ Common છે. ઈ શુધ્ધ પરિણામી છે. કેવો છે? શુધ્ધ પરિણામી છે. એની અંદર કોઈ impurity નથી. મારી ને તમારી અંદર Purity છે. એટલે આપણે વારેઘડીએ અત્યારના ભલે Impure હોઈએ પણ આપણું ખેંચાણ કોની તરફ છે? Purity તરફ જાણતા કે અજાણતા. આ તમે ભગવદ્ ગીતાના પારાયણમાં શા માટે આવ્યા છો કારણકે તમારી અંદરનો ઈશ્વર તત્વ એ તમને અહીંયા લઈ આવ્યો છે. એવી રીતે છે. તમારી અંદર જાગૃતિ પ્રગટ થઈ ચૂકી છે જે બીજાની અંદર નથી થઈ અને એ પ્રગટ થયેલી છે એટલે શોધ તમારી તીવ્ર છે. એ તીવ્રતા અહીંયા તમને લઈ આવી છે એટલે અહીંયા કોણ લઈ આવ્યું છે. અંદરનું ઈશ્વરત્વ. શુધ્ધાત્મા સ્વરૂપ એ જ ઈશ્વર છે. આત્મા એ અશુધ્ધ છે, એ અર્જુન છે. મેં કીધુને અર્જુનનો અર્થ શું થાય? આત્મા. પણ ઈશ્વરનો અર્થ શુધ્ધાત્મા. હવે ભગવાનની વાત. ક્રિષ્ણની વાત. ભગવાનની અંદર ક્રિષ્ણ આવી જાય. ભગવાનની અંદર મહાવીર આવી જાય. ક્રિષ્ણા, મહાવીર, ગૌતમ બુધ્ધ આ બધા ભગવાન છે. કેવી રીતે ભગવાન છે? ભગવાન એટલે શું? ભગ એટલે ગુણ, વાન એટલે વાળા. કેટલુ સહેલું છે. અને છતાં આપણે રખડીએ છીએ. જેની અંદર સદ્ગુણનો સમૂહ, ભંડાર જમા થયેલો છે જેની અંદર એનું નામ ભગવાન. તો એવો કયો સદ્ગુણ, એવા ક્યા વિશેષ ગુણ એની અંદર છે. હં બોલો. ઈ ગોતો છો એની અંદર એની શોધ ચાલુ છે એટલે શ્રી અને ઐશ્વર્ય હોય. ભગવાનની અંદર આ બે તો હોય જ. શ્રી, ઐશ્વર્ય, ઠાઠમાઠ ઐશ્વર્ય. ઐશ્વર્ય શૌર્ય નહી. શૌર્ય એટલે બીજા ઉપર હાવી થવુ. ઐશ્વર્ય એટલે હાવી થવાનો કોઈ ભાવ નથી. અંદરથી એને જુઓ એટલે લોકોનું આકર્ષણ Natural થાય. એના સ્વરૂપથી નહી. ક્રિષ્ણ કેવા હતા? કાલા કલૂટા હતા ને. તો લોકો એની પાછળ પાગલ હતા. શું કામ? કારણકે અંદરનું જે ઐશ્વર્ય ઘણીવાર તમે પણ જોજો કે તમારી આજુબાજુ દેખાવમાં કદરૂપા હોય પણ લોકો એની પાછળ પાગલ હોય તો ઈ શું છે એની અંદર ઐશ્વર્ય તત્વ છે. જે એ લોકોનું આકર્ષણ કરે છે. એટલે શ્રી હોય, ઐશ્વર્ય હોય, જ્ઞાન હોય, કૈવલ્ય હોય, કેવળજ્ઞાન, Complete જ્ઞાન, Complete Scientist.

To be continued...

શુભેચ્છક :

जिंदगी बहुत खूबसूरत है उसकी प्रशंसा करना सीखो ।

नमो जिणाणं

परम सुख जीवन विकास केन्द्र, मुंबई

SCIENCE OF DIVINE LIVING

प.पू. पंकजभाई के सानिध्य में

ANNUAL ACTIVITIES / साल के दौरान की प्रवृत्तियाँ

दिव्य जीवन **SCIENTIFIC** संस्कार शिबीरें

1) Public Awareness Divine Living Foundation Workshops
(जाहिर शिबीरें)

2) SCIENCE OF DIVINE LIVING THRU नमस्कार महामंत्र योग -
PRACTICAL WORKSHOPS :

Part- 1 Experiential नमस्कार महामंत्र योग

Part - 2 - 9 Steps of Divine Life Management with Namaskar Mahamantra Yog

3) Child Parents practical workshops
(Age - 6-11 / 12- 18 years)
Solving Issues of Child Parents Relationship

4) Youth Forum with Parents Combined Practical Workshop
(Youth Age - 19-32 Years)

5) Marriage Enrichment Workshop - (Any Age Group)
दांपत्य जीवन को समृध्ध बनाने का **Workshop**
(**For Married Couple, Single Parent, Live in Couple, Divorcee**, शादी योग्य लडके लडकियोंके लिए)

6) गर्भ संस्कार शिबीर

7) दिव्य परिवार संस्कार शिबीर

8) Second Innings Golden Period Practical Workshop
(Age nearing to 45 years and above)

9) सिध्धाचल तीर्थ पर पू. साधु-साध्वीजी भगवंतो के लिए नवकार साधना शिबीर, वैयावच्च तथा **MEDICAL CAMP**

10) WORKSHOP FOR PARAMSUKH समर्पित सेवक

साल में २ बार निर्दोष आनंद उत्सव की **PARTY**
निसर्ग आनंद पिकनीक का आयोजन

नमो जिणाणं THE SCIENCE OF DIVINE LIVING MAGAZINE (त्रि मासिक)

PAGE - 2

सेवा और साधना प्रवृत्तियाँ

महावीर जन्म कल्याणक निमित्त से की जानेवाली ७ क्षेत्र की सेवा प्रवृत्तियाँ

(1) होस्पीटल सेक्टर - GOVERNMENT HOSPITAL को उपयुक्त साधन सामग्री उपलब्ध करवाई जाती है । गरीब मरीजों और CRITICAL PATIENTS को HIGH VALUE MEDICAL सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है ।

(2) EDUCATION SECTOR - PRIMARY, SECONDARY और उच्च शिक्षण के लिए जरुरतमंद विद्यार्थीओं को SCHOOL,COLLEGE ,TUTION FEES उपलब्ध करवाई जाती है ।

(3) आश्रम सेक्टर - GOVERNMENT आश्रमो तथा अन्य आश्रमो मे जरुरी साधन सामग्री तथा खाद्यान ,GROCERY ITEMS उपलब्ध करवाई जाती है ।

(4) पू. साधु-साध्वी भगवंत वैयावच्च - जिस प्रकार जरुरत है, उस प्रकार सेवा की जाती है ।

(5) SCIENCE OF DIVINE LIVING - समाज उपयुक्त सामाजिक , धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमो का आयोजन तथा प्रचार प्रसारण की सेवा की जाती है ।

(6) पशु पक्षी जीवदया तथा वृक्षारोपण

(7) जीवन की किसी भी समस्या के उपाय के लिए 24 x 7 HELPLINE सेवा तथा जन्म से लेकर मृत्यु तक की सारी समस्याओं के हल (SOLUTIONS) के COUNSELLING CENTRES

SCIENTIFIC PRACTICAL आत्मविकास आराधना साधना

(1) DIVINE SCIENTIFIC PRACTICAL
सम्यक् पर्युषण अनुभवधारा (८/९ दिन)

(2) NON STOP 48 HOURS भ.महावीर की अंतिम वाणी की देशना तथा महावीर की बताई हुई जीवन व्यवस्था की Training
जिन मार्ग विचरण Training.

(3) सामूहिक नवरात्री शक्ति आराधना तथा नवपद ज्ञान साधना
श्री सिध्धचक्र महायंत्र के साथ रोज शाम ७ से १० बजे तक आराधना साधना होती है । (अश्विन मास और चैत्री मास - १५ दिन)

(4) Scientific & Practical आत्म विकास उपद्यान श्रेणी -
5 Steps (9 DAYS EACH)

(a) Part - V (9 Days) & Part - VI (9 Days) - Divine Grahastha Lifestyle Training.

(b) Part - VII (9 Days) - अंतर साधना Training .

(c) Part - VIII (9 Days) & Part IX (9 Days) - Complete Devoted Sadhana(Sadhaka) Training

PAGE - 4

साल के दौरान आनेवाले पर्वो (त्योहारों) का SCIENTIFIC CELEBRATION (महोत्सव)

जुलाई महिने मे आनेवाले पर्वो

(१) गुरुपूर्णिमा - सद्गुरु के प्रति अहोभाव की अभिव्यक्ति ।

अगस्त / सितंबर महिने मे आनेवाले पर्वो

(१) जन्माष्टमी - NEGATIVE का अंत और POSITIVE का जन्म ।

(२) स्वतंत्रता दिन - १५ अगस्त - स्व को स्वतंत्र बनाने का प्रारंभ दिन ।

(३) DIVINE SCIENTIFIC PRACTICAL सम्यक् पर्युषण अनुभवधारा (८/९ दिन)

अक्टुबर महिने मे आनेवाले पर्वो

(१) श्री अश्विन मास नवरात्री शक्तिआराधना श्री नवपद ज्ञान साधना श्री सिध्धचक्र महायंत्र के साथ रोज शाम ७ से १० बजे तक आराधना साधना होती है । (१५ दिन)

नवंबर महिने मे आनेवाले पर्वो

(१) दिवाली के दौरान - NON - STOP ४८ घंटे (१६ प्रहर) भ. महावीर की अंतिम वाणी की देशना तथा जिन मार्ग TREKKING - जिन मार्ग के उपर पदयात्रा करके चित्त को भगवान के मार्ग के मुताबिक तैयार करने का अभ्यास ।

दिसंबर महिने मे आनेवाले पर्वो

(१) उपद्यान श्रेणी की साधना तथा दिव्य जीवन माला महोत्सव (९/१८ दिन)
उपासक और साधक दशा में स्थिर होने का योग - उपद्यान श्रेणी।

VISION - 2025

हम समय के प्रवासी है । समय के इस प्रवास में हम कहाँ से आए है और हमे कहाँ जाना है यह पत्ता नहीं है । परंतु प्रभु की कृपा से अभी हम यहाँ मनुष्य स्टेशन पर आए है । यहाँ हमे 20% की स्वतंत्रता मिली है । इसका उपयोग करके हमे हमारा परम लक्ष प्राप्त करना है । और इसे प्राप्त करने के लिए तीर्थंकर परमात्मा महावीर का मार्ग हमे सद्गुरुदेव की कृपा से मिला है । भगवान का दिया हुआ मंत्र किसी एक संप्रदाय, पंथ या ग्रंथ के लिए नहीं है । तीर्थंकर परमात्मा का मार्ग सभी जीवो के लिए है । तीर्थंकर परमात्मा का ''नवकार महामंत्र'' का message पूरे **विश्व के घर घर में** और **जीव जीव में** गुंजे यही **'परम सुख जीवन विकास केन्द्र'** का ध्येय है । मंत्रयोग की अद्भूत साधना पद्धति को विश्वस्तर पर ले जाने का उद्देश है ।

तीर्थंकर परमात्मा का यह मार्ग ''नवकार मंत्र'' का आधार लेकर Scientifically पूरे विश्व के जन जन तक पहुँचे और सभी अरिहंत परमात्मा के मार्ग में जुड़कर अरिहंत बने.... इस दिव्य ध्येय के साथ प.पू. गुरुदेव के सांनिध्य मे ''परम सुख जीवन विकास केन्द्र'' एलान करने जा रहा है ।

सभी अरिहंत भक्तो के अरिहंत मेले में "VISION 2025".

"VISION 2025" के राजमार्ग पर चलने के लिए एक नया कदम....!

जगत को अरिहंत बनने के मार्ग पर चलने के इस Process में नौ करोड़ परिवार को प्रेरित किया जाएगा ।

सेवा–साधना करते करते अरिहंत बनना है और अरिहंत बनने के लिए **प.पू. पंकजभाई** के सांनिध्य मे दो Projects लेकर 'परम सुख जीवन विकास केन्द्र' आ रहा है नई उड़ान भरने ।

Project No. 1 – परम सुख Divine Wellness सेवा केन्द्र ।

Project No. 2 – परम सुख Divine Arihant Nagar.

Project - 1 :

परम सुख Divine Wellness Centres in every suburb of Mumbai & Other Cities.

Features of Wellness Centres :

A) 1) Physical Fitness Wellbeing & Counselling.
2) Mental Fitness Wellbeing & Counselling
   (a) Intellectual
   (b) Emotional
3) Financial Fitness Wellbeing & Counselling (Careers, Jobs & Business)
4) Family Wellbeing & Couselling (Kids, Parents, Youth, Married Couples - Age beyond 50 years)
5) Social Relationship Wellbeing & Counselling.
6) Spiritual Fitness Wellbeing & Counselling.
7) Country, Global & Universal Wellness & Counselling.
8) Fitness Wellbeing & Counselling for subjects right from Womb of Mother till death.

B) 1) Divine Medical Diagnostic Centre.
2) Medical Counselling.
3) Diet & Food Counselling.

C) Divine Shop
1) Divine Food & Medicine Centre.
2) Divine Literature Centre.
   (a) Audio / Video CD/DVD
   (b) Magazine & Books
   (c) Different Posters, Cards, Mantra Kits, Satsangi Kits etc.

D) **Multi Utilitiy Hall**
For Conducting :
(a) Satsang & Festival Celebrations.
(b) Workshops & Shibirs.
(c) Seminars & Conferences

Project - 2 :

परम सुख Divine Arihant Nagar –

मुंबई के आसपास एक से दो घंटे की दूरी पर एक ऐसे परम सुख Divine Village की स्थापना करना जहाँ....

- ☞ श्री सीमंधर स्वामी समवसरण मंदिर और आराधना साधना केन्द्र (36000 लोगों के लिए ।)
- ☞ Divine Life University & Training Centre – जहाँ नई पिढ़ी (New Generation) को Divine जीवन जीने की Training देने में आएँगी । अध्यापकों, प्राध्यापकों के द्वारा दिव्य जीवन व्यवस्था के शिक्षण, संस्कार और संस्कृति का ढ़ांचा पूरी University में खड़ा किया जाएँगा ।
- ☞ Divine Food and Medicine Centre होगा ।
- ☞ Divine आरोग्य केन्द्र होगा ।
  जहाँ (a) आर्युवेदिक (b) नेचरोपेथिक (c) Alternate Medicine & Day Care Centre.
- ☞ Divine आवास योजना ।

ऐसे परम सुख Divine Nagar में श्री सीमंधर स्वामी के शरण में रहकर हर जीव का परम मंगल और कल्याण हो ऐसी परम सुख जीवन विकास केन्द्र की मंगल भावना है और अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी का शरण हर जीव को मिले और जन जन मे इस मार्ग का प्रसार हो यही दिव्य भावना के साथ परम सुख Divine Wellness सेवा केन्द्र और परम सुख Divine Nagar का निर्माण 2025 तक करना यह हमारा Vision है ।

2018 तक Project - 1 : परम सुख Divine Wellness सेवा केन्द्र शुरु करने की भावना है ।

2023 तक Project - 2 : परम सुख Divine Arihant Nagar शुरु करने की भावना है ।

आओ... अरिहंत बनने के इस Divine विराट कार्य के निर्माण कार्य में हम सब जुड़ जाएँ और परम मंगल पाएँ ।

मंगल... मंगल... मंगल...

नमो जिणाणं ।

नमो जिणाणं

आयोजक : परम सुख जीवन विकास केन्द्र, मुंबई.
WATCH ARIHANT TV CHANNEL DAILY 8.30am & 11.30pm
अरिहंत टी.वी चेनल भारत मे **CABLE SET TOP BOX, VIDEOCON D2h, TATASKY, AIRTEL** और **WORLDWIDE www.yupptv.com** पर देख सकते हो ।

प.पू.पंकजभाई की दिव्य scientific और practical वाणी का लाभ आप Youtube / paramsukhtv.namojinanam & Youtube/namojinanam पर भी ले सकते हो ।

आपके जीवन के कोई भी प्रश्न हो, परम आनंद परिवार मे जुडना चाहते हो, AUDIO CD,VIDEO DVD या MAGAZINE के लिए MISSED CALL करें : **09920202756** **WHATSAPP NO. 9920203965**

शुभेच्छक :

अभी कितनी भी कठिन दिखने वाली जिंदगी एक दिन आसान हो जाएगी ।